इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

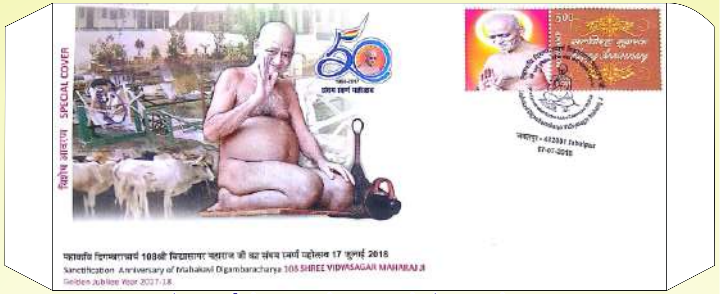

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		मार्च 2022	
16	बुधवार	त्रयोदशी	मघा
17	गुरुवार	चतुर्दशी	पूर्वाफाल्गुनी
18	शुक्रवार	पूर्णिमा	उत्तराफाल्गुनी
19	शनिवार	प्रतिपदा	हस्त
20	रविवार	द्वितीया-तृतीया	चित्रा
21	सोमवार	चतुर्थी	स्वाती
22	मंगलवार	पंचमी	विशाखा
23	बुधवार	षष्ठी	अनुराधा
24	गुरुवार	सप्तमी	ज्येष्ठा
25	शुक्रवार	अष्टमी	मूल
26	शनिवार	नवमी	पूर्वाषाढ़
27	रविवार	दशमी	उत्तराषाढ़
28	सोमवार	एकादशी	श्रवण
29	मंगलवार	द्वादशी	धनिष्ठा
30	बुधवार	त्रयोदशी	शतभिषा
31	गुरुवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपद
		अप्रैल 2022	
1	शुक्रवार	अमावस	उत्तराभाद्रपद
2	शनिवार	प्रतिपदा	रेवती
3	रविवार	द्वितीया	अश्विनी
4	सोमवार	तृतीया	भरणी
5	मंगलवार	चतुर्थी	कृत्तिका
6	बुधवार	पंचमी	रोहिणी
7	गुरुवार	षष्ठी	मृगशिरा
8	शुक्रवार	सप्तमी	आर्द्रा
9	शनिवार	अष्टमी	पुनर्वसु
10	रविवार	नवमी	पुष्य दिन-रात
11	सोमवार	दशमी	पुष्य
12	मंगलवार	प्रतिपदा	आश्लेषा
13	बुधवार	द्वितीया	मघा
14	गुरुवार	तृतीया	पूर्वाफाल्गुनी
15	शुक्रवार	चतुर्थी	उत्तराफाल्गुनी

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: मार्च-18,23,27 अप्रैल: 3,6,7,14

मशीनरी प्रारंभ : मार्च-21,24 अप्रैल:14

वाहन खरीदने: मार्च-19,21,30 अप्रैल: 2,7,9

तीर्थंकर कल्याणक

21 मार्च: भगवान पार्श्वनाथ ज्ञान कल्याणक
22 मार्च: भगवान चन्द्रप्रभ गर्भ कल्याणक
25 मार्च: भगवान शीतलनाथ गर्भ कल्याणक
26 मार्च: भगवान आदिनाथ जन्म तप कल्याणक
01 अप्रैल: भगवान अनन्तनाथ ज्ञान मोक्ष कल्याणक
01 अप्रैल: भगवान अरनाथ मोक्ष कल्याणक
02 अप्रैल: भगवान मल्लिनाथ गर्भ कल्याणक
04 अप्रैल: भगवान कुन्थुनाथ ज्ञान कल्याणक
06 अप्रैल: भगवान अजितनाथ मोक्ष कल्याणक
07 अप्रैल: भगवान संभवनाथ मोक्ष कल्याणक
12 अप्रैल: भगवान सुमतिनाथ जन्म ज्ञान मोक्ष कल्याणक
14 अप्रैल: भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

18 मार्च: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
18 मार्च: अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
18 मार्च: षोडशकारण व्रत प्रारंभ
26 मार्च: तीर्थंकर दिवस
02 अप्रैल: लब्धिविधान व्रत प्रारंभ
05 अप्रैल: लब्धिविधान व्रत पूर्ण
06 अप्रैल: रोहिणी व्रत
06 अप्रैल: दशलक्षण / पुष्पांजलि व्रत प्रारंभ
10 अप्रैल: पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
14 अप्रैल: रत्नत्रय व्रत प्रारंभ/ महावीर जयंती
15 अप्रैल: दशलक्षण व्रत पूर्ण

सर्वार्थ सिद्धि

23 मार्च : 06/28 बजे से 18/53 बजे तक ।
27 मार्च : 06/24 बजे से 13/32 बजे तक ।
28 मार्च : 06/23 बजे से 12/24 बजे तक ।
01 अप्रैल : 10/40 बजे से 30/19 बजे तक ।
03 अप्रैल : 06/18 बजे से 12/37 बजे तक ।
05 अप्रैल : 06/16 बजे से 16/52 बजे तक ।
06 अप्रैल : 06/16 बजे से 30/14 बजे तक ।
08 अप्रैल : 25/43 बजे से 30/12 बजे तक ।
10 अप्रैल : 06/10 बजे से 30/51 बजे तक ।
12 अप्रैल : 06/09 बजे से 08/35 बजे तक ।

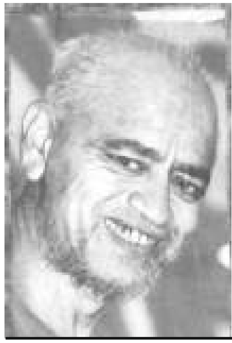

संस्कार सागर

• वर्ष : 24 • अंक : 276 • मार्च 2022

• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2078 • शक सं. 1942

लेख

- अहिंसा के अवतार भगवान महावीर 08
- दीपावली के आध्यात्मिक भावों को समझें 10
- कुरल काव्य के प्रणेता संत श्री तिरुवल्लुवर 14
- नियमसार में प्रतिपादित शुद्धात्म स्वरुप 16
- करोड़ो पूजा, तप स्तुतियों से महान है क्षमा 19
- जैन विश्वविद्यालय क्यों और कैसे ? एक परिकल्पना 24
- **वरिष्ठ नागरिक:** ढलती उम्र में आवश्यक है-वसीयत 39
- मदुरै में 8000 का जनसंहार 49
- बुंदेलखंड के पुरावैभव में नवागढ़ का पुरातात्त्विक वैशिष्ट्य-एक परिचय 52
- चौबीसवें तीर्थंकर महावीर 56
- अम्लरोग (एसिडिटी) का प्रभावी नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

- जेल की प्रार्थना 44

कविता

- क्या हो गया है आज के जमाने में 12
- श्रद्धा के देवता 17
- बड़े जतन से, बड़े यतन से 48
- मंदिर बना है सुंदर बैठे पार्श्वनाथ दिगम्बर 58
- मैं कौन हूँ 60

कहानी

- जानलेवा बाप 62

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13
चलो देखें यात्रा : 18 • आगम दर्शन :21• माथा पच्ची : 22 • पुराण प्रेरणा : 23 • कैरियर गाइड : 31
दुनिया भर की बातें : 32 • इसे भी जानिये: 37 •दिशा बोध : 38
वरिष्ठ नागरिक : 39 • हमारे गौरव : 55 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311 1
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत जनवरी माह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का रास्ता रोका गया और वह भी पाकिस्तान की सीमा से मात्र 23 किमी. दूर। प्रधानमंत्री किसी एक दल का नहीं होता है अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र का होता है ऐसी परिस्थिति में किसानों द्वारा जाम लगाना और पंजाब सरकार और प्रशासन के द्वारा लापरवाही वर्तना एक गंभीर मामला है इससे कांग्रेस की ओछी मानसिकता का परिचय ही प्राप्त हुआ हैं क्योंकि प्रधानमंत्री के साथ घिनौनी हरकत होने से सम्पूर्ण देश सख्ते में आ गया राजनैतिक दल और विपक्षियों के बयान ने यह सिद्ध कर दिया की उनकी मानसिकता सत्ता सापेक्ष है। वे राष्ट्र की असमिता को कम महत्व देते हैं किन्तु वे स्वार्थों की राजनीति करके राष्ट्रीय भावना को सभी किनार करने की कोशिश कर रहे हैं यह खतरनाक खेल हैं।

सोना जैन, गेरतगंज

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के विगत माह **सोने की बाली शीर्षक** से कहानी पढ़ी। कहानी ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि महिलाओं को गहने कितने प्यारे होते हैं ? वे गहने की चाहत में कितनी क्रूर हो सकती हैं। इसका प्रमाण इस कहानी से प्राप्त होता है। अपने क्रोधावेश में व्यक्ति अनर्थ कर देता है। सोने की बाली तो मिल गई पर एक माँ के बेटे की जान भी ले गई। इससे यह सिद्ध होता है कि **बिना विचारे जो करे सो पीछे पछतायें** काम बिगाड़े आपने जग में होय हँसाये रानी यादव की जग हँसाई हो रही थी। लोग उसे कोस रहे थे। सजा तो उसे ही मिलेगी परन्तु यह कहानी सबक सिखा देती है कि किसी को अपराधी बनाने के पहले छानबीन जरूर कर लेनी चाहिये अन्यथा अंत में आरोप झूठा सिद्ध हो जाने के बाद हमें शर्मसार होना पड़ता है।

डॉ. सुरेश जैन, औरंगाबाद

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर फरवरी के अंक में सम्पादकीय संस्कार प्रवाह को पढ़ा जिसमें सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर के संदर्भ में आलेख अत्यन्त प्रभावशील लगा। कुण्डलपुर की महिमा ही कुछ अलग हैं जब-जब भी हम कुण्डलपुर तीर्थ पर जाते हैं तो ऐसा नहीं लगता है कि हम कुछ पुराना देख रहे हैं अपितु ऐसा लगता है कि जैसे कुद नया ही देख रहे हैं बड़े बाबा का आकर्षण कुछ अलग ही है पवित्र भावना से दर्शन करने के बाद जो आत्म शांति प्राप्त होती है उसका वर्णन करना संभव नहीं हो पाता है हर मौसम में कुण्डलपुर का अद्भुत नजारा ही होता है यह बात स्वयं सिद्ध हैं तथा इसे कोई प्रमाण देने की जरूरत नहीं है बड़े बाबा के साथ छोटे बाबा के दर्शन का संयोग सोने में सुहागा जैसा है।

ब्र. सतीश जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों हैतीदेश में अपराधियों की गैंग ने दो पत्रकारों को जिंदा जला दिया तथा एक पत्रकार ने भागकर अपनी जान बचाई। जैसा कि विदित है कि हैती के राष्ट्रपति मोसे की गत जुलाई को उनके ही आवास में हत्या कर दी गई थी इससे वहाँ की सुरक्षा व्यवस्था खराब हो चुकी थी तथा कानून व्यवस्था का समाप्त होना अराजकता का फैलना स्वाभाविक था इससे यह सिद्ध होता है कि जिस देश का राजा कमजोर होता है वह देश शांति की स्थापना करने में असफल होता है। भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्णय मजबूत होने के कारण से दंगे फसाद बहुत कम हो रहे हैं यदि जनता ने पुनः नरेन्द्र मोदी को मजबूत बनाया तो शांति अमन और चैन के मामले में भारत विश्व में उदाहरण बन जायेगा।

मधुर जैन, सागर

भक्ति तरंग
नमें शीश कर धार

जय श्री वीर जिनेन्द्र चन्द्र, शतइन्द्र वंद्य जगतारं ।। टेक ।।
सिद्धारथकुल-कमल-अमल-रवि, भव भूधरपविभारं ।
गुनमनिकोष, दोष मोष पति, विपिन कषायतुषारं ।।1।। जय.।।
मदनकदन शिवसदन पद-नमित, नित अनमित यतिसारं ।
रमाअंनतकंत अतंक-कृत, अंत जंतुहितकारं ।।2।। जय.।।
फंद चंदना कंदन दादुरदुरित तुरित निर्वारं ।
रूद्ररचित अतिरूद्र उपद्रव, पवन आद्रिपति सारं ।।3।। जय.।।
अतातीत अचित्यं पहाड़ सुगुन तुम, कहत लहत को पारं ।
हे जगमौल दौल, तेरे क्रम, नमै शीस कर धारं ।।4।। जय.।।

हे जिनेन्द्र रूपी चंद्र-भगवान महावीर आपकी जय हो। आप सौ इन्द्रों द्वारा पूजित हो। आप जगत का उद्धार करने वाले हो।

राजा सिद्धार्थ के कुलरूपी कमल हो विकसित करने वाले विमल सूर्य हो। आप संसार रूपी पर्वत को ध्वंस करने हेतु वज्र के समान हैं उसे खंडित करने हेतु गाज (बिजली) के समान हैं। हे मोक्षपति। आप दोषरहित हैं, गुणरूपी मणियों के भण्डार हैं और कषायरूपी वन को नष्ट करने हेतु पाला। सर्दी में खेतों में पड़ने वाली बर्फ के समान हैं।

कामदेव को जीतने वाले मोक्ष-लक्ष्मी के घर हो। नित्य प्रति यति लोग साररूप में आपके चरणों की वंदना करते हैं चरणों में शीश नमाते हैं। आप मोक्ष-लक्ष्मी के स्वामी हो। अंत में मृत्यु की जीतने वाले अर्थात् जन्म-मरण से मुक्त हो। आप जगत का हित करने वाले हो कल्याणकारी हो।

चंदना सती के कष्टों का मेंढ़क के पापों का रूद्र, द्वारा किये गये उपद्रव-पर्वतों को भी उड़ा कर ले जाने वाले भीषण चावन-वेग का अविलंब शमन, निवारण करने वाले हो।

अनंत और अचिन्तय, आपार गुणों के धारी हो, जिनका वर्णन करने में कोई भी समर्थ नहीं हैं। हे जगत के सिरमौर आपके ही पथ का अनुगामी-भक्त मैं दौलतराम दोनों हाथ जोड़कर आपको शीश नमाता हूँ, प्रणत होता हूँ।

संस्कार प्रवाह

स्वाभिमानी रोजगार का प्रतीक हथकरघा

भेषवूषा व्यक्तित्व की पहचान रही है। संस्कार-बोध वस्त्रों से होता है तथा व्यक्ति का चाल-चलन भी वस्त्र से ही पता लगता है वस्त्र से करूणा और क्रूरता दोनों झलकती हैं अर्थात् हम यह कह सकते हैं कि वस्त्र भावना प्रकटीकरण का माध्यम हो सकता है वस्त्र के माध्यम से कौन व्यक्ति क्या कार्य करने जा रहा है यह ज्ञात हो जाता है। पूजन अनुष्ठान यज्ञ के वस्त्र अलग होते हैं। युद्ध पर प्रस्थान करने के वस्त्र अलग होते हैं तथा विवाह कार्य को जाने वाले व्यक्ति की वस्त्र से ही सूचना मिल जाती है।

खानपान में अहिंसा का ध्यान रखने के लिये व्यकित दिन में भोजन करता है, छानकर पानी पीता है तथा अभक्ष्य अमर्यादित पदार्थों को खाने से बचता है मांस आदि का सेवन नहीं करता है ठीक उसी प्रकार वस्त्र की पवित्रता से ही जल की पवित्रता सिद्ध होती है। वस्त्र से चर्बी आदि का जहां प्रयोग किया जाता है वह वस्त्र हिंसक सिद्ध होता है तथा रेशमी और ऊनी वस्त्र जो अनगिनत जीवों की हिंसा के बाद उत्पादन को प्राप्त होते हैं ऐसे हिंसक वस्त्र धारण करना, यह एक विचारधीय प्रश्न हैं। अतः वस्त्र वीर, पवित्रता और मानवीय भावना का नाता यदि अहिंसा से जोड़ना चाहते हैं तो कपास के सूती और हथकरघा के बने हुये वस्त्रों में जो अर्थ विनिमय वितरण की पवित्रता है वह मानवीय संस्कृति को परमोच्चता की ओर ले जाती है : ऐसे सूती खादी के वस्त्रों का उपयोग हमें करना चाहिये।

वस्त्र की पवित्रता का आह्वान वेद पुराण काव्य शास्त्रों में भी जगह-जगह दृष्टि गोचर होता हैं क्योंकि पुरुषार्थ प्रदान भारतीय संस्कृति में यह चिंतन सर्वोपरि है कि पुरुषार्थ से शून्य समग्र कथन असंबद्ध प्रलाप के सिवाय और कुछ नहीं है। हथकरघा के केन्द्र में पुरुषार्थ की पवित्र भावना निहित हैं तथा रोजगार की पवित्रता भी दृष्टि गोचर होती है अतः हथकरघा स्वाभिमान का प्रतीक हैं। हम इसको उपयोग करें/ प्रोत्साहित करें।

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर

❊ विजयकुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ❊

अहिंसा के अवतार युगदृष्टा भगवान महावीर का जन्म आज से 2620 वर्ष पूर्व विहार प्रदेश के नालंदा जिले के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला के नंद्यावर्त महल में चैत्र शुक्ला 13 को हुआ था। भगवान महावीर एक युग पुरुष, युग दृष्टा, एक महामानव थे। वे जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। क्षत्रिय राज कुमार होने के बावजूद भी उन्होंने कभी विश्व विजय का सपना नहीं देखा। जिस समय भगवान महावीर ने अवतरण हुआ, दुनिया में हिंसा और अत्याचार का बोल बाला था। महावीर ने विषम विकट परिस्थिति में सच्चा मार्ग दुनिया को दिखलाया। आपने प्राणीमात्र के सुख के लिये **जिओ और जीने दो** का अमूल्य मंत्र दिया। पिछले लगभग 19 माह से सारी दुनिया कोरोना वायरस के प्रकोप से फैली जानलेवा बीमारी से पीड़ित है।

भारत में कोरोना महामारी की दो लहर आ गई है। तीसरी लहर भी आ गई है इससे सभी और भय का वातावरण व्याप्त हैं। बताया गया है इस महामारी का आरंभ चीन से पिछले दिसंबर 19 से हुआ है। चीन में हिंसा और मांसाहार बढ़ने से यह महामारी आई। चीन के लोगों ने जहरीले जीव जन्तुओं को अपनी जिव्हा के लिये भोजन का प्रमुख अंग बनाया। चीन से चलकर इस महामारी ने सारे विश्व में तीव्र गति से पैर फैला दिये हैं। सभी ओर से आवाज आ रही है कि हिंसा और मांसाहार को त्याग कर ही कोरोना जैसी जानलेवा महामारी से बचा जा सकता हैं। इस महामारी से लड़ने के लिये भगवान महावीर का अहिंसा शाकाहार सिद्धांत प्रासंगिक है। शाकाहारी समाज के लिये सुखद संदेश हैं। कोरोना महामारी के पीड़ित दुनिया के लगभग सभी देशों में स्वस्थ्य रहने के लिये मांसाहार का त्याग कर शाकाहार को स्वीकार किया जा रहा है।

विश्व प्रेम ही भगवान महावीर का दिव्य संदेश है। भगवान महावीर के इसी सिद्धांत को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीवन का मूलमंत्र माना था। हमारे भारत की यह नीति है किसी दूसरे देश की भूमि मत हड़पो। सन् 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान युद्ध में पश्चिमी पाकिस्तान जीतकर उस पर कब्जा न कर स्वतंत्र बंगलादेश बनाया। **भगवान महावीर का मंगल उपदेश था पाप से घृणा करो न कि पापी से।** उन्होंने विरोधी को कभी विरोध से नहीं वरन सद्भावना एवं शांति से जीता। भगवान महावीर ने दुनिया को अहिंसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पावन संदेश दिया, इस मार्ग पर चलकर उन्होंने सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त किया। उन्होंने अपना कल्याण किया एवं स्वयं चलकर मोक्ष मार्ग बताया।

भगवान महावीर ने कहा -**आत्मा के तीन बड़े शत्रु हैं काम, क्रोध और लोभ।** इनके चक्कर में पड़ा हुआ व्यक्ति जीवन में कभी अच्छे कार्य नहीं कर पाता। कल्याण के लिये इन पर विजय प्राप्त करना बहुत आवश्यक है।

विश्ववंदनीय भगवान महावीर के जीवन एवं दर्शन का गहराई से अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं, कि वे किसी एक जाति या सम्प्रदाय के न होकर सम्पूर्ण मानव समाज की अमूल्य धरोहर हैं। वह सबके थे और सब उनके थे वह स्वयं क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुये थे, उनके मुख्य गणधर इन्द्रभूति गौतम ब्राह्मण थे तथा उनकी धर्मसभा (समवशरण) में सभी धर्मों और जातियों के लोग उनकी दिव्य देशना, मंगल उपदेश सुनने के लिये आते थे। उन्हें केवल जैनों या जैन मंदिरों तक सीमित रखना उनके उदात्त एवं विराट व्यक्तित्व के प्रति अन्याय है। वह जैन नहीं जिन थे। इन्द्रियजन्य वासनाओं और मनोजन्य कषायों को जीत लेते हैं, वे कहलाते हैं **जिन**। किसी का भी कल्याण जैन बनकर नहीं, जिन बनकर ही हो सकता है। श्रावकों को अहिंसा तथा जीवन में अपरिग्रह रखना चाहिये।

युग दृष्टा, अहिंसा, करुणा, परोपकार की पावन प्रेरणा देने वाले भगवान महावीर के 2548वें निर्वाणोत्सव के पुनीत अवसर पर हमें चिंतन करने की आवश्यकता है। वर्तमान में विश्व में बढ़ रहे अलगाववाद, आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, हिंसा ही निरंतर बढ़ती प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने भगवान महावीर के सिद्धांत प्रासंगिक हैं। महावीर के सिद्धांत प्राणीमात्र के लिये हितकारी हैं। आज हम त्याग, सेवा, परोपकार के मार्ग पर चलने के बजाय अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने में लिप्त हो गये हैं। वर्तमान में नई पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने के स्थान पर उन्हें गुमराह किया जा रहा है, नई पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से विमुख होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रही है। समाज का नेतृत्व करने वाले ही पतन के मार्ग चलने लगे तो नई पीढ़ी को कैसा आदर्श मिलेगा ?

दुनियाँ में सुख शांति की स्थापना करने के लिये हमें हर कीमत पर भगवान महावीर के बताये मार्ग पर चलना होगा। तभी भारत की प्राचीन संस्कृति और विरासत की रक्षा होगी। भारत ने कभी हिंसा में विश्वास नहीं किया। हमारा विश्वास भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलकर दूसरों की जान लेकर जीने में नही वरन् अपनी जान की बाजी लगाकर दूसरों की रक्षा करने में है। वर्तमान में कोरोना महामारी से विश्व मुक्त हो इस हेतु भगवान महावीर द्वारा बताये मार्ग का अनुशरण करने में ही हम सबका कल्याण होगा।

भगवान महावीर के उपदेश को निम्न पंक्तियां सार्थक करती हैं-

मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,
दीन दु:खी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्त्रोत वहे।

दीपावली के आध्यात्मिक भावों को समझें

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

दीपावली के पावन अवसर पर सुधी पाठकों के लिये एक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक आलेख । जिसमें दीपावली के महत्व को बड़ी गहनता से बताया गया है।

पर्व हमारी संस्कृति के पोषक हैं , जीवनीशक्ति हैं। दीपावली भारतीयो का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण पर्व है। हिन्दू और जैन परंपरा में दीपावली का खासा महत्व है।

दिवाली एक आदर्श पर्व है, जिसे देश के हर हिस्से में बड़े हर्ष और उत्साह के साथ मनाया जाता है। लोग अंधेरी रात में दीपक जलाते हैं और इसे एक उज्ज्वल रात में बदल देते हैं। दिवाली एक ऐसा पर्व है जिसके साथ हर धर्म जुड़ा हुआ है। भारत में सभी जाति और धर्म के लोग दिवाली को बड़ी की धूमधाम से मनाते हैं।

दीपक की भांति मनुष्य की देह भी मिट्टी ही हैं, किंतु उसकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। वह तो इस मिट्टी के दीपक में जलने वाली अमृत ज्योति है । हालांकि, मनुष्य लोभ, मोह, मद, अहंकार की मोटी परतों से दबा ढका अपने स्वरूप को भूला बैठा है, वह स्वयं को देह समझ बैठा है और मिट्टी की इस देह का श्रृंगार करने में इतना अलमस्त हो गया हैं कि आत्मज्योति का चिरंतन शाश्वत सच अंधकार में कहीं खो गया है। दीपक की मिट्टी में ज्योति जब तक न उतरे वह अपनी सच्चाई से वाकिफ नहीं हो सकता। जैसे कि हम अपने वास्तविक स्वरूप से दूर रहने के कारण इंद्रियों से विनिर्मित देह में विचरण करने लगते हैं और भ्रम को सच मान लेते हैं। भ्रम का यह आवरण हमें सघन अंधकार में जीने को विवश करता है। इससे जिंदगी की घुटन और छटपटाहट फिर से तीव्र और घनी हो जाती है।

आज चारों ओर का वातावरण भयावह है और हर एक व्यक्ति भैतिकता में आगे बढ़ने की होड में अपनों को ही पछाडना चाहता है । आज महाभ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, आतंकवादी क्रियाशील हैं। इनकी करतूत और कारनामों से अतीत के सारे आतंक कमतर नजर आते हैं।

जीवन एवं समाज के इस अवसाद और अंधेरे को सदा-सर्वदा के लिये दूर करने के लिये दीपक के सच की अनुभूति का गहरा अनुभव आवश्यक है।

दीपावली पर दीपक जलाते समय के सच को समझना आवश्यक है। अन्यथा दीपावली की प्रकाशपूर्ण रात्रि के पश्चात् केवल बुझे हुये मिट्टी के दीपक हाथों में रह जायेंगे, आत्मीय अमृत- आलोक खो जायेगा। दीपक का सच उसके स्वरूप में है। दीपक मिट्टी का होकर भी इस ज्योति का अवतरण कर धारण करने का सबल माध्यम है। दीपक जलता है, आलोक बिखरेता है और तत्पश्चात मिट्टी में समा जाता है। मोल है जलते हुये प्रदीप्त दीपक का, मोल बुझे दीपकों का नहीं होता। दीपक का तात्पर्य है- अपनी वर्तिका में अग्नि को धारण कर प्रकाश बिखेरना। यह

घटना असाधारण है। और असाधारण है तिल-तिल जलने-गलने का वह संकल्प, जो उसकी में अमृत घोलता है। इस मिट्टी की ज्योति तो अमृतमय आकाश की है। जो धरती का है, वह धरती पर ठहरा है, लेकिन ऊर्ध्वगामी ज्योति तो निरंतर आकाश की ओर भागी जा रही है।

जब तक अंतरंग गगन में दीपक का प्रेम, करुणा, दया, सेवा, सहयोग एवं परोपकारिता वाला प्रकाश जनमगाएगा नहीं,मनावता के इस अंध एवं काले तमस् को दूर नहीं किया जा सकता है। जब तक मन नरभ्र गगन में स्वच्छ विचारों की रोशनी नहीं उठेगी, हृदय के धवल आकाश में भावनाओं का निर्मल प्रकाश नहीं फूटेगा, वैमनस्यता, अमानवीयता जैसी अहंकारी प्रक्रिया थमेगी नहीं ।

है घोर अंधेरा पर दीपक जलाना कब मना है।
पर घनघोर अंधेरे में दीपक सा जलना भी होगा।।

जिस दिन मानव के अंतस्को दीपोत्सव पर्व की एक कोमल, जगमगाती रोशनी छू लेगी, उसी दिन से जीवन की कुहासा-निराशा छंटने लगेगी और जीवन आलोक का नया प्रतीक, पर्याय बन जायेगा। इस आलोक में ही जीवन का लक्ष्य दृष्टिगोचर हो सकता है ईौर इस लक्षित लक्ष्य का सघन मर्म समझ में आ सकता है।

दीपावली पर जलने वाले दीपकों की संख्या एक-दो नहीं, हमारों होती है, परंतु इससे बाहर का अंधकार मिटता है, अंतस् का अंधकार तो यथावत् बना रहता है। अच्छा हो कि इस दीपावली में दीपक के सच की इस अनुभूति के साथ हम एक दीपक जलाएं, ताकि इस बिनाशीक मिट्टी की देह में आत्मा की ज्योति मुस्कुरा सके।

मिट्टी के दीपक में मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच समया है। ऐसा सच जो हमारा अपना है। ऐसा सच जिसमें हमारा अनुभव पल-पल धड़कता है। यह सच ही हमारी धरोहर एवं थाती है जो कहता है कि तुम स्चयं ज्योतिस्वरूप हो, आत्मस्वरूप हो। अपने अंदर की ओर झांको। अंतर्यात्रा करो। अंदर में ही सब कुछ समाया हुआ हो।

दीपावली पर अनेक पौराणिक कथाएं हैं। इस दिन भगवान राम आतंक के महापर्याय रावण का बध करके जब अयोध्या नगरी लौटे तो उनका स्वागत प्रकाश महोत्सव के रूप में हुआ। उस दिन हर आंगन में दीपों की कतार लगाई गई। जैनधर्म के अनुसार इस दिन तीर्थंकर महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी और गौतम गणधर को केवलज्ञान की उपलब्धि हुयी थी। इस अवसर पर जैन समुदाय निर्वाण लाडू चढ़ाकर और दीपक प्रज्जवलित कर अपनी खुशी का इजहार करता है। हमारे देश में वीर निर्वाण संवत, विक्रम संवत, शक संवत, शालिवाहन संवत, ईस्वी संवत, गुप्त संवत, हिजरी संवत आदि प्रचलित हैं लेकिन वीर निर्वाझ संवत सबसे पुराना सम्वत है। यह हिजरी, विक्रम ईस्वी, शक आदि से अधिक पुराना है। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दीपावली के दिन ही भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। उसके

एक दिन बाद कार्तिक शुक्ल एकम से भारतवर्ष का सबसे प्राचीन संवत वीर निर्वाण संवत प्रारंभ हुआ था। ऐसी अनेक और भी पौराणिक कथाएं हैं । इन कथाओं से हम सभी सुपरिचित हैं, परंतु परिचय की इस लंबी प्रक्रिया में हम यदि किसी चीज से अपरिचित रह जाते हैं तो इस महापर्व के गहरे मर्म से। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली धूमधाम से मनाई जायेगी। दीप जलाये जाएंगे। मिठाइयां बांटी जायेगी। नये-नये अलंकार एवं परिधानों का उपयोग किया जायेगा। श्रृंगार अपनी चरम सीमा को स्पर्श करेगा। उमंग एवं प्रकाश से मिश्रित इस महोत्सव में ऐसा होना तो बाह्य समृद्धि का प्रतीक है। ही पर.....

दीपावली का मूल मर्म है कि दीपक का प्रकाश हमारे अंदर भी प्रकाशित हो और बाहार भी आलोकित हो। यह पर्व हमें निज-आत्म कल्याणक के साथ मानवता की सेवा करने की ओर अग्रसर होने के लिये प्रेरित करता है। आइये संकल्प करें कि जिस प्रकार एक जलता हुआ दीपक अनेक दीपकों को प्रज्जवलित कर सकता है, उसी प्रकार से हम समाज के निर्धन, बेसहारा और जरूरतमंद लोगों के जीवन में खुशियां बांटते हुये आशा एवं समृद्धि का दीप बनें। दीवाली स्वच्छता का भी उत्सव है इसलिये हम प्रदूषण से मुक्त, पर्यावरण के अनुकूल और स्वच्छ दीवाली मनाकर प्रकृति का भी सम्मान करें । दीपमालिकायें केवलज्ञान की प्रतीक हैं। सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अज्ञान-अंधकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालायें जलानी चाहिये।

कह दो अंधेरों से कहीं और घर बना लें , मेरे मुल्क में रौशनी का सैलाब आया है।

कविता

क्या हो गया है आज के जमाने में

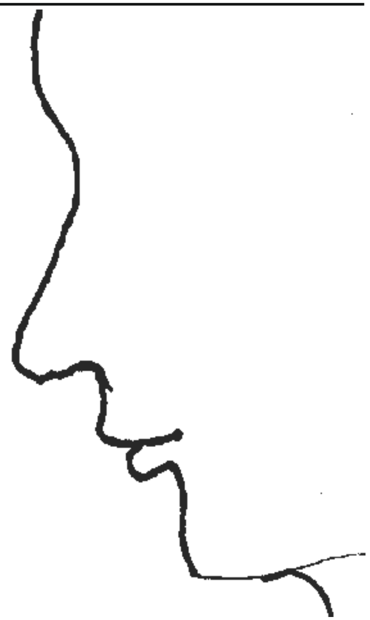

क्या हो गया है आज के जमाने में
वाइज भी मिलते हैं रोज मयखाने में
दिल का गुबार निकाल लीजिये जनाब
कुछ नहीं रखा है आँखें दिखाने में
रुह का कल्मष धुले तो कोई बात बने
क्या धरा है बस जिस्म धुलाने में
उसके बार से बचा कैसे मैं जानता नहीं
कसर नहीं थी उसकी मरघट पहुँचाने में
गीत थक गये हैं आवाज भी उखड़ी हुई
साज सब बिखरे हुये अब क्या रखा है गाने में

संयम स्वास्थ्य योग

घरेलू उपचार "कुकर खांसी" का

कूकर खाँसी एक संक्रामक रोग है। एक बालक को होने पर सम्पर्क में आने वाले अन्य बालकों को भी यह हो जाती है। इसे Pertusis भी कहते हैं जिसका शब्दार्थ है Per = अधिक Tussis खाँसी अर्थात् अधिक खाँसी। पहले हल्का सा बुखार रहता है। खाँसी के वेग उठते हैं । खांसी का तांता सा बन्ध जाता है और खांसी आधे से एक मिनिट तक चलती है । दम घुटता-सा लगता है, आंखे लाल हो जाती हैं । और खांसते-खांसते उल्टी भी हो जाती है। खाँसने में हूप Whoop जैसी आवाज होती है। इसलिये इसे हूपिंग कफ कहते हैं। यह बच्चों के लिये अतिकष्टदायक दीर्घकालीन रोग है। चिकित्सा पद्धति की मान्यता है कि इसे ठीक होने में 4-6 सप्ताम लग जाते हैं लेकिन भोजन के द्वारा चिकित्सा एवं होम्योपैथिक दवाईयों से यह शीघ्र ठीक हो जाती है । होम्योपैथिक चिकित्सा के लिये लेखक की होम्योपैथिक व्यवहारिक चिकित्सा सार पुस्तक पढ़ें।

नारियल- कूकर खांसी में नारियल का शुद्ध तेल बिना किसी सुगन्ध के मिलावट वाला एक वर्ष के बालक को 4-4 ग्राम नित्य चार बार पिलाने से लाभ होता है।

गन्ना- कच्ची मूली का रस एक छटाँक (62) ग्राम गन्ने के रस में मिलाकर दिन में दो बार पिलाने से कूकर खांसी में लाभ होता है।

फिटकरी- चने की दाल के बराबर पिसी हुई फिटकरी गर्म-पानी से नित्य तीन बार लेने से कूकर खांसी में लाभ होता है।

लौंग- लौंग को आग में भूनकर चासनी में मिलकर चाटने से कूकर खांसी ठीक हो जाती है।

तुलसी- तुलसी कें पत्ते ओर काली मिर्च समान भाग में पीस लें इसकी मूंग के बराबर गोलियां बना लें एक-एक गोली चार बार दें। इससे कूकर खांसी ठीक हो जाती है।

"कुरल काव्य" के प्रणेता "संतश्री तिरुवल्लुवर"

✻ डॉ. अरविन्द जैन भोपाल ✻

कभी-कभी ऐसे संत जन्म लेते हैं जिनकी मान्यतायें सभी वर्ग या जाति के लोगों में होती हैं, जिस प्रकार कबीर वाणी, तुलसीदास की रामायण, रसखान, मीरा आदि की कृतियां आज भी जीवंत हैं और वे सभी सीमाओं से पार हैं यानी कोई सीमा में बाँध नहीं सकता, वे सर्वकालीन होते हैं, और जितने पहले माननीय थे आज भी उनका साहित्य मान्यता पाते हैं ऐसे ही संत श्री तिरुवल्लुवर हुये हैं जिनका जन्म दिवस 16 जनवरी को मनाया जाता है।

तिरुवल्लुवर एक प्रख्यात तमिल कवि हैं जिन्होंने तमिल साहित्य में नीति पर आधारित कृति तिरुकुरल का सृजन किया। उन्हें थेवा पुलवर, वल्लुवर और पोयामोड़ी पुलवर जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता है।

तिरुवल्लुर का जन्म मायलापुर में हुआ था। उनकी पत्नी वासुकी एक पवित्र और समर्पित महिला थी, एक ऐसी आदर्श पत्नी जिसे कभी भी अपने पति के आदेशों की अवज्ञा नहीं की और उनका शतशः पालन किया। तिरुवल्लुवर ने लोगों को बताया कि एक व्यक्ति गृहस्थ या गृहस्थस्वामी का जीवन जीने के साथ-साथ एक दिव्य जीवन या शुद्ध और पवित्र जीवन जी सकता है। उन्होंने लोगों को बताया कि शुद्ध और पवित्रता से परिपूर्ण दिव्य जीवन जीने के लिये परिवार को छोड़कर सन्यासी बनने की आवश्यकता नहीं है। उनकी ज्ञान भरी बातें और शिक्षा अब एक पुस्तक के रूप में मौजूद है जिसे तिरुकुरल के रूप में माना जाता है। तमिल कैलेन्डर की अवधि उसी समय से है और तिरुवल्लुवर आन्दु (वर्ष) के रूप में संदर्भित किया जाता है।

तिरुवल्लुवर के अस्तित्व का समय पुरातात्विक साक्ष्य के बजाय ज्यादातर भाषाई सबूतों पर आधारित है क्योंकि किसी पुरातात्विक साक्ष्य को अभी तक निर्धारित नहीं किया गया है। उनके काल का अनुमान 200 ई.पू. और 30 ई.पू. के बीच लगाया गया है।

तिरुवल्लुवर (तिरु वल्लुवर) नाम तिरु (एक तमिल जिसका अर्थ माननीय होता है, जो श्री के समान है) और वल्लुवर (तमिल परंपरा के अनुसार वल्लुवन के लिये एक विनम्र नाम) से बना है। उनके वास्तविक नाम के बजाये वल्लुवन नाम एक सामान्य नाम है जो उनकी जाति/व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करता है। बहरहाल, थीरुकुरल (वल्लुवन) के लेखक का नाम उनके समुदाय पर रखा गया है या उसके विपरीत, यह सवाल आज तक अनुत्तरित बना हुआ है।

तिरुवल्लुवर के जन्म के बारे में कुछ किंवदंतियां रही हैं। शैव, वैष्णव, जैन,बौद्ध सम्प्रदायों का तर्क है कि तिरुवल्लुर उनसे संबंधित हैं। तिरुवल्लुवर के जन्म के बारे में कुछ किंवदंती भी रहीं हैं जिसमें उन्हें एक जैन समानार संत या एक हिंदू कहा गया है। लेकिन उनके धर्म के बारे में कोई सबूत उपलब्ध नहीं है। इस कृति का आरम्भ सर्वशक्तिमान भगवान को सादर प्रणाम करते हुये एक अध्याय से होता है।

इसीलिये कहा जा सकता है कि तिरुवल्लुवर आस्तिक थे। लेकिन उनके परमेश्वर सर्वशक्मिान हैं, सारे संसार के निर्माता हैं और जो अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। दरअसल कुरल किसी भी विशिष्ट या सांप्रदायिक धार्मिक आस्था की वकालत नहीं करता है। एक कथा में उन्हें पांड्य शासकों की प्राचीन राजधानी मदुरै से जोड़ा जाता है, जिन्होंने तमिल साहित्य को सख्ती से बढ़ावा किया था। एक अन्य के अनुसार उनका जन्म और लालन-पालन मायलापुर में हुआ था जो वर्तमान में मद्रास शहर का एक हिस्सा है और उन्होंने अपनी कृति तिरुकुरल को जमा करने के लिये मदुरै की यात्रा की ताकि वे राजा

(पंडियन) और उनके कवियों के समूह से अनुमोदन प्राप्त कर सकें, उनकी पत्नी का नाम वासुकी था।

वहाँ और भी अधिक परंपरागम कहानियां हैं जिसमें कहा गया है कि मदुरै का तमिल संगम (नियमित तौर पर आयोजित किया जाने वाला प्रख्यात विद्वानों और शोधकर्ताओं का सम्मेलन/सभा) वह प्राधिकरण था जिसके माध्यम से तिरुकुरल को विश्व के सामने पेश किया गया। हो सकता है कि तिरुवल्लुवर ने अपना अधिकांश जीवन मदुरै में बिताया हो क्योंकि यह पांड्य शासको के अधीन था जहां कई तमिल कवि आगे बढ़े। अभी हाल ही में कन्याकुमारी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक शोध केन्द्र द्वारा दावा किया गया कि वल्लुवर एक राजा थे जिन्होंने तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले के एक पहाड़ी इलाके वल्लुवनाडु पर शासन किया।

जॉर्ज उग्लो पोप या जी.यू पोप जैसे अधिकांश शोधकर्ताओं और तमिल के महान शोधकर्ताओं ने जिन्होंने तमिलनाडु के कई वर्ष बिताये और अंग्रेजी में कई पाठों को अनुवाद किया है जिसमें तिरकुरल शामिल है, उन्होंने तिरुवल्लुवर को परैयार के रूप में पहचाना है। कार्ल ग्रौल (1814-1864) ने पहले ही 1855 तक तिरुकुरल को बौद्ध पंथ की एक कृति के रूप में चित्रित किया था। इस संबंध में यह विशेष दिलचस्पी का विषय था कि तिरुकुरल के लेखक तिरुवल्लुवर को तमिल परंपरा में परैयार के रूप में पहचाना गया।

जैन विद्वान और कई इतिहासकार मानते है कि तिरुवल्लुवर एक जैन मुनि थे, क्योकि तिरुकुरल का पहला अध्याय जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को समर्पित है। इसके अलावा तिरुकुरल की शिक्षाएं जैन धर्म की शिक्षाओं से मेल खाती है। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'कुरल काव्य' में भी तिरुवल्लुवर के जैन होने की बात स्पष्ट लिखी है।

तिरुकुरल तमिल की एक सबसे श्रद्धेय प्राचीन कृति है, कुरल को दुनिया का आम विश्वास माना जाता है, क्योंकि यह मानव नैतिकता और जीवन में बेहतरी का रास्ता दिखलाता है। संभवतः बाइबिल, कुरान और गीता के बाद कुरल का सबसे अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया हैं। 1730 में तिरुक्कुरल का लैटिन अनुवाद कोस्टांजो बेस्ची द्वारा किया गया जिससे यूरोपीय बुद्धि जीवियों को उल्लेखनीय रूप से तमिल साहित्य के सौंदर्य और समृद्धि को जानने में मदद मिली।

तिरुकुरल का निर्माण तिरु और कुरल दो शब्दों को जोड़कर हुआ है, अर्थात् तिरु+कुरल= तिरुकुरल।

तिरुकुरल तीन वर्गो में विभाजित है। पहले खंड में अरम, विवेक और सम्मान के साथ अच्छे नैतिक व्यवहार (सही आचरण) को बताया गया है। खंड दो में पारुल सांसारिक मामलों की सही ढंग से चर्चा की गई है और तीसरे अनुभाग, पुरुष और महिला के बीच प्रेम संबंधों पर विचार किया गया है। प्रथम खंड में 38 अध्याय हैं, दूसरे में 70 अध्याय और तीसरे में 25 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में कुल 10 दोहे या कुरल है और कुल मिलाकर कृति में 1330 दोहे हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप (कन्याकुमारी) के दक्षिणी सिरे पर संत तिरुवल्लुवर की 133 फुट लंबी प्रतिमा बनाई गई हैं जहां अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर मिलते हैं। 133 फुट, तिरुकुरल के 133 अध्यायों या अथियाकरम का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनकी तीन अंगुलिया अरम, पोरुल और अनबम नामक तीन विषय अर्थात नैतिकता, धन और प्रेम के अर्थ को इंगित करती हैं।

उनके द्वारा रचित ग्रंथ बहुत अधिक मान्यता प्राप्त हैं जिसके द्वारा नीति, धरम और शिक्षा का बहुत अद्वितीय हैं।

नित्य पढ़ो ऐसा साहित्य जिससे हो सुख शांति का अहसास।
इसके पढ़ने से मिलती हैं ऐसी शिक्षा जो वर्तमान में भी लाभकारी।।

नियमसार में प्रतिपादित शुद्धात्म स्वरूप

❋ एलक सिद्धांत सागर जी महाराज ❋

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार के अंतर्गत जीव और अजीव तत्त्व की विवेचना करने के उपरांत शुद्ध जीव आत्मा का स्वरूप निश्चित करने हेतु 19 गाथाओं के माध्यम से शुद्ध भाव अधिकार निबद्ध किया है। इसके अंतर्गत जीवादि छः द्रव्य और सात तत्त्वों में से हेय और उपादेय का रेखांकन किया है हेय का अर्थ त्यागने योग्य और उपादेय का अर्थ ग्रहण करने योग्य है। जीवादि समस्त बाह्य तत्त्व हेय परिधि के अंतर्गत लिये गये हैं तथा कर्म उपाधि से रहित गुण पर्यायों से युक्त आत्मा को उपादेय माना है अथवा विभाव गुण पर्यायों से रहित शुद्धात्मा को आदेय कहा है।

निर्विकल्प शुद्ध आत्म तत्त्व का स्वरूप

शुद्धात्म स्वरूप विभाव शून्य शुद्ध जीवास्तिकाय है इस जीवास्तिकाय में मान अपमान हर्ष-अहर्ष का भाव नहीं हैं तथा इसमें प्रकृति बंध स्थिति बंध अनुभाग बंध प्रदेशबंध और उदय स्थान नहीं होते हैं तथा शुद्ध जीवास्तिकाय में क्षायिक भाव, क्षायोपशमिक भाव, औदायिक भाव और औपशमिक भाव भी नहीं होते हैं। चारों गतियां जन्म, जरा, मृत्यु, रोग, शोक, कुल योनि जीवस्थान मार्गणास्थान गुणस्थान नहीं होते हैं। शुद्धात्मा के समस्त विभाओं का अभाव होता है चाहे वे विभाव मन वचन काय दण्ड रूप हों या द्रव्य कर्म, भावकर्म रूप हों अतः शुद्धात्मा तो निर्द्वन्द निर्मम निकल निरालम्बन निर्दोष निर्मूढ और निर्भय होती है तथा यह शुद्ध जीव निर्ग्रन्थ, निशल्य, निष्काम, निष्क्रोध, निर्मान, निर्मद होती है तथा स्पर्श, रस, गंध, वर्ण से रहित स्त्री, पुरुष, नंपुसक रूप भी नहीं होती तथा शुद्ध जीव आत्मा रस गंध, शब्द से रहित है तथा अव्यक्त चेतना गुण वाला है यह इन्द्रियों से ग्रहण नहीं हो सकता है तथा इस आत्मा का कोई निश्चित आकार या संस्थान नहीं होता है।

सिद्ध आत्मा और संसारी आत्मा में शुद्ध नय की अपेक्षा से समानता- जिस तरह से सिद्धात्मा हैं उसी तरह संसारी जीव आत्मा भी शक्ति की अपेक्षा से समानता रखती है किन्तु सिद्ध आत्मा के जन्म, जरा, मृत्यु का अभाव हो चुका है तथा उनके सम्यक्त्व अनन्तज्ञान अनंतदर्शन अनंतवीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघु अत्याबाध जैसे आठ गुण प्रगट हो चुके हैं तथा वे लोक के अग्र भाग में निवास करते हुये अशरीरी अविनाशी अतिन्द्रिय निर्मल शुद्धात्मा हैं उसी प्रकार संसारी आत्मा भी शुद्ध शक्ति से सम्पन्न होता है व्यवहार नय की अपेक्षा से विभाव पर्यायें संसारी जीव में होती हैं किन्तु शुद्ध नय की अपेक्षा से संसार में रहने वाले सभी जीव सिद्ध अदृश्य होते हैं अतः सभी पूर्व में कथित पर द्रव्य और विभाव पर्यायें शुद्ध निश्चय नय से हेय होती हैं एवम् स्वकीय द्रव्य और शुद्ध अन्तर तत्व की ही कारण समयसार रूप उपादेय होता है।

शुद्ध भाव अधिकार के अंतर्गत रत्नत्रय की विवेचना विशेष तौर पर की गई है सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र का स्वरूप स्पष्ट करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द देव कहते हैं कि - विपरीत अविनिवेश (अभिप्राय) से रहित श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन है तथा संशय विपरीतता अनिश्चितता से रहित श्रद्धान सम्यक्त्व की श्रेणी में आता है एवं हेय और उपादेय का ज्ञान करना ही सम्यग्ज्ञान कहलाता है अर्थात् त्यागने योग्य और ग्रहण करने योग्य स्पष्ट ज्ञान होना ही सम्यग्ज्ञान कहलाता है

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति का बाह्य कारण तो जिनशास्त्र का अध्ययन या द्रव्यश्रुत है तथा अंतरंग कारण दर्शन मोहनीय प्रकृति का क्षय, उपशम और क्षयोपशम है मोक्षमार्ग में चारित्र की ही प्रधानता होती हैं चारित्र के बिना मोक्ष अधूरा होता है इसीलिये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने व्यवहार और निश्चय नय से चारित्र का वर्णन करने की प्रतिज्ञा की है। रत्नत्रय की पूर्णता चारित्र की साधना के बाद होती है तथा पुरुषार्थ सिद्धि के उपाय में चारित्र का अहम् स्थान है। जो लोग ऐसा मानते हैं कि सम्यग्दर्शन होने के उपरांत निश्चय या व्यवहार चारित्र अपने आप हो जाता है उन्हें एक बार नियमसमसार ग्रंथ को पुनः पढ़ना चाहिये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने प्रवचनसार में चारित्रम् खलु धम्मो कहकर चारित्र की प्रधानता सिद्ध की है अतः शुद्ध भाव अधिकार की अंतिम गाथा में कहा गया है कि व्यवहार नय के चारित्र में व्यवहार नय का तपश्चरण होता है तथा निश्चय नय के चारित्र में निश्चय नय का तपश्चरण होता है।

व्यवहार चारित्र -पाँच महाव्रत तीन गुप्ति और पंच समिति रूप घोषित किया गया है।

निश्चय चारित्र - निश्चय चारित्र के अंतर्गत प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, आलोचना प्रायश्चित, परम समाधि ,परम भक्ति और परम आवश्यकों का समावेश होता है।

उपसंहार- शुद्ध भाव अधिकार के अंतर्गत हेय और उपादेय तत्त्व का सीमांकन करते हुये शुद्ध निर्विकल्प आत्म तत्त्व का विवेचन एवं सिद्ध परमात्मा के स्वरूप को बताते हुये संसारी आत्मा और सिद्ध आत्मा को शुद्ध नय की दृष्टि से समान बताते हुये आत्म शक्ति को प्रकट करने के उपाय भी बताये हैं तथा उन लोगों को भी सचेत किया है जो वर्तमान में अपने आपको सिद्ध भगवान मान रहे हैं यदि वे वर्तमान में ही सिद्ध भगवान हो जायेंगे तो फिर रत्नत्रय साधना की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। अतः हम यह कह सकते हैं कि शक्ति की आपेक्षा से आत्मा सिद्ध सदृश्य है किन्तु व्यवहार नय की अपेक्षा से आत्मा संसारी है और मोक्ष साधना करने के लिये सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रय की साधना करके आत्मा को शुद्ध बनाया जा सकता है।

कविता

श्रद्धा के देवता

❋ श्रीमती सुनीता कठरया, बीना ❋

मेरी श्रद्धा के देवता, तुम जहाँ हो
वहां प्रकाश ही प्रकाश है
तुम जहां हो वहाँ उजास ही उजास हैं।
तुम जहाँ हो वहां विकास ही विकास है
तुम जहाँ हो उल्लास ही उल्लास है
मेरी श्रद्धा के देवता तुम जहाँ हो
वहाँ मुझे भी आसरे की तलाश है
शरण मिलेगी जरुर मुझे मात्र यही आस है
देर चाहे कितनी भी लगे बस मुझे पहुँचना आपके पास है
मेरी श्रद्धा के देवता, तुम जहाँ हो वहां प्रकाश ही प्रकाश है।

चलो देखें यात्रा

महान जैन तीर्थ हूमंच हूमंचा (हुंबज पद्मावती)

क्षेत्र का महत्त्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या-10

क्षेत्र पर पहाड़ - हैं। बाहुबलि मंदिर है, साधारण चढ़ाई है।

ऐतिहासिकता- 1400 वर्ष प्राचीन पद्मावती मन्दिर सातिशय है। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि सच्चे मन से प्रार्थना करने पर मनोकामना पूर्ण होती है तथा माता से प्रश्न पूछने से दोनों तरफ फूल गिर जाये तो भक्त की मनोकामना पूर्ण हो जायेगी। हर दिन पंचामृत अभिषेक महोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न होता है। प्रत्येक शुक्रवार सर्वाधिक यात्री आते हैं ।

वार्षिक मेला- फाल्गुन मास में होता है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- वारंग-85 किमी., कारकल-120 किमी., मूडब्रिदी -140 किमी., वेणूर- 150 किमी., धर्मस्थल- 187 किमी., ज्वालामालिनी (एन.आर.पुरा)- 80 किमी., कुंदाद्री- 50 किमी., (आचार्य कुन्दकुन्द तपोभूमि)

निकटतम प्रमुख नगर- शिभोगा- 60 किमी., एयरपोर्ट- मेंगलोर- 160 किमी., बैंगलोर- 350 किमी.

प्रबंध व्यवस्था- संस्था हूमंचा जैन मठ

अध्यक्ष- स्वस्ति श्री श्री देवेन्द्रकीति भट्टारकजी (08185-262721)

आवागमन के साधन- रेल्व स्टेशन- शिमोगा- 60 किमी. उडुपी- 120 किमी., हरिहर- 140 किमी. (गुड़ केरी से तीर्थ छल्ली 22 किमी.), आनंदपुर- 30 किमी.

बस स्टैण्ड- हूमंचा

पहुँचने का मार्ग- सड़क मार्ग द्वारा व्हाया शिमोगा, आइनुर रिपनपेट, हूमँचा

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास-कमरे (अटैच बाथरूम) - 60, कमरे (बिना बाथरूम)-×

हॉल-2 (50-25), **गेस्ट हाउस-** हैं

यात्री ठहराने की कुल क्षमता- 1000

भोजनशाला - निःशुल्क, नियमित, **विद्यालय-** गुरुकुल

औषधालय- है **पुस्तकालय-** है

टेलीफोन- 08185-262722, Email: Shrihombuja@gmail.com

Website: hombujapadmavati.org

नाम एवं पता- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र हुबुंज पद्मावती तह. हासानगर, पोस्ट- हुबुंज जिला- शिमोग (कर्नाटक) पिन- 577436

करोड़ो पूजा, जप, स्तुतियों से महान है क्षमा

❊ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन, मनुज, इंदौर ❊

जैन परम्परा में दशलाक्षणिक धर्म पर्यूषण पर्व सबसे महत्त्वपूर्ण है। इन दिनों में समाज के आबालवृद्ध स्वशक्ति अनुसार धर्माराधना, व्रत, उपवासादि करते हैं। त्यौहार थोड़े मौज-मस्ती के होते हैं , पर्व गन्ने की पोर-गांठ के समान नीरस होते हैं, उस गांठ को भी पर्व ही कहते हैं। यदि कृषक को गन्ना चयन को दिया जाता है तो वह अधिक और परिपक्व पर्व-गांठ वाले गन्ने का चयन करता है, क्योंकि उसी पर्व-गांठ में ही अत्यधिक गन्ने उत्पन्न करने की शक्ति होती है। उसी तरह हमारी संस्कृति में जो पर्व आते हैं वे सादगी, त्याग, व्रत, उपवास, स्नेह, समर्पण, भाईचारा आदि को अन्तर्निहित किये हुये होते हैं। पर्वो में व्यक्ति स्वयं की बाह्य शुद्धि और आत्मिक शुद्धि करके पवित्र होता है। उन्हीं पर्वो में महत्त्वपूर्ण है दशलाक्षणिक पर्यूषण पर्व।

धर्म के दस भेदों के कारण दशलाक्षणिक धर्म का पर्व कहलाता है। जो व्यक्ति को वास्तविक सुख में धारण करावे वह धर्म है शेष परम्परायें मात्र कह सकते हैं। वे दस धर्म हैं, उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम सत्य, उत्तम शौच, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन और उत्तम ब्रह्मचर्य।

इनमें उत्तम क्षमा को प्रथम स्थान पर लिया गया है। निश्चय से तो पर को निरपेक्ष करके आत्मा के शान्त स्वभाव में स्थिर होना है क्षमा और व्यवहारिक दृष्टि से तो क्षमा के प्रभाव हम अपने जीवन में प्रायः देखते हैं। करोड़ों पूजा, जप, स्तुतियों से महान है क्षमा कही गई है। जैसे-

पूजा कोटि समं स्तोत्रं, स्तोत्र कोटि समं जपः।
जपः कोटि समं ध्यानं, ध्यानं कोटि समं क्षमा।।

मानव जीवन में क्षमा का बहुत महत्त्व है। क्षमा से बहुत बड़े बड़े केस सुलझ जाते हैं, यहाँ तक कि मृत्यु की सजा भी क्षमा मांगने से खत्म होने के प्रकरण आये हैं। कुछ राजनेताओं को क्षमा नहीं मांगने पर फांसी की सजा हुई है। पाकिस्तान के जुल्फिकार अली भुट्टो जैसों के उदाहरण हमारे सामने हैं। यद्यपि कुछ प्रकरण स्वाभिमान से जुड़े होते हैं, जिसके कारण लोग क्षमा मांगने के स्थान पर फांसी का वरण कर लेते हैं । किन्तु यहां क्षमा की क्षमता की बात है कि क्षमा फांसी को भी टाल सकती है। भारत में भी फांसी की सजायाफ्ता व्यक्ति के लिये अंतिम अवसर होता है। राष्ट्रपति द्वारा क्षमादान का।

रास्ते चलते भी हम लोग प्रायः देखते हैं कि यदि किसी के वाहन ने छोटी सी भी टक्कर मार दी और सॉरी बोल दिया तो मैटर वहीं खत्म हो जाता है और यदि क्षमा नहीं मांगी तो मामला बहुत बढ़ जाता है, हाथा-पाई, सिर-फुटोल, कोर्ट-कचहरी सब हो जाता है। इसलिये दो अक्षरों के क्षमा या सॉरी में बहुत शक्ति निहित है।

जैन धर्म में श्रावकों और श्रमणों को क्षमा धारण करने के लिये कहा गया है। श्रावकों को क्षमा एक मंत्र दिया गया है-

क्षमाशस्त्रं करे यस्य किंकरः किं करिष्यिति।

अतृणे पतिते बह्वि स्वयमेवोपशाम्यते।।

अर्थात् जिसके हाथ में क्षमा रूपी हथियार है, दुष्ट उसका कुछ भी नहीं कर सकता है, क्योंकि सामने वाला बहुत गालियां देते हुये भी आ जाये और प्रत्युत्तर में यदि उसे गाली नहीं मिली, स्मित चेहरा भी दिखा तो वह स्वतः ही शांत हो जायेगा। जैसे कि अग्नि प्रज्वलित है, यदि उसमें त्रण-ईंधन न डाला जाये तो वह स्वयं ही शांत हो जायेगी। उसी तरह क्रोध को शांत करने के लिये कहा गया है।

क्षमा की और उत्कृष्टता बताते हुये कहा गया है-

गाली सुन मन खेद न आनो, गुन कौ औगुन कहि है अयानो।

कहि है अयानौ वस्तु छीने, बांध मार बहुविध करै।

धरतैं निकारैं तन विदारै बैर जो न तँह धरै।।

यदि कोई गाली दे तो, आपके गुणों को भी दोष बताये तो क्षमाधारण करना चाहिये यहां तक कि आपकी वस्तु छीन ले, बांधे, मारे, घर से भी निकाल दे तो भी क्षमा धारण करते हुये यह सोचना चाहिये कि हमने पूर्व में या पूर्व भव में ऐसे कुछ कर्म किये होंगे जिनके प्रतिफल स्वरूप मेरे साथ यह व्यवहार हो रहा है, ऐसा सोचकर क्षमा धारण करे, वह उत्कृष्ट क्षमा है।

जैन श्रमण परम्परा में अनेक ऐसे उत्कृष्ट क्षमाधारी/उत्तमक्षमाधारी हुये हैं जिनका उल्लेख धर्मग्रंथों में हुआ है। एक मुनिराज की परीक्षा लेने या पत्नी के जैन धर्मानुयायी होने की डाह वश मगध नरेश ने मुनिराज के गले में मृत सर्प डाल दिया था। दो दिन वाह यह बात उन्होंने अपनी पत्नी को बताई, और कहा कि उस मुनि की डर के मारे क्या हालत हुई होगी वही जानता होगा। पत्नी ने कहा-यदि वे सच्चे जैन मुनि होंगे तो इस उपसर्ग को सहन करते हुये वे अब भी वहीं बैठे हुये ध्यानस्थ होंगे। दोनां उसी समय उठकर जंगल में जाते हैं, बहुत करूण दृश्य देखा। मृत सर्प अब भी यथावत गले में डला है, वह सड़ रहा है, हजारों चीटियां उन मुनिराज के शरीर पर लिपटी हुई है, उनका शरीर वृणित हुआ। जगह-जगह फूल गया है। रानी ने तत्काल किसी तरह वह सर्प हटाया, कपड़े-पल्लू आदि से चीटियां साफ की। जब मुनिराज का उपसर्ग दूर हुआ तब उन्होंने अपना ध्यान छोड़ा। उन्होंने दोनों पति-पत्नी को एक साथ, एक जैसा आशीर्वाद दिया- उभयोः धर्मवृद्धिरस्तु-दोनों को धर्म की वृद्धि हो। राजा चकित रह गया मैं अपकारक उपसर्ग करने वाला और ये पत्नी उपकारक उपसर्ग हटाने वाली फिर भी दोनों को एक जैसा आशीर्वाद। राजा ने मन ही मन सोचा ऐसे मुनिराज के चरणों में तो अपनी गर्दन काट कर रख देना चाहिये। निमित्त ज्ञानी मुनिराज ने कहा राजन! ऐसे खोटे विचार मन में मत लाओ। क्षमा मांगने पर उस राजा का भी उद्धार हुआ। और मुनिराज की क्षमा तो अपूर्व है। इसलिये क्षमा के महत्व को समझते हुये प्रत्येक व्यक्ति को यथासक्य इसे धारण करना चाहिये।

आगम दर्शन

तत्व चिंतन का आधार आलाप पद्धति

आलाप पद्धति नय विवेचन की अद्वितीय रचना है आचार्य देवसेन जी अपने इस लघुकाय ग्रंथ में आगम अध्यात्म का सार प्रस्तुत किया है।

यह संस्कृत-गद्य में रचित छोटी-सी रचना है। अन्य ग्रंथों के समान इसका प्रकाशन भी माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रंथमाला से हुआ है। इस ग्रंथ में गुण, पर्याय, स्वभाव, प्रमाण, नय, गुण, व्युत्पत्ति, स्वभाव-व्युत्पत्ति, प्रमाण का कथन निक्षेप की व्युत्पत्ति, नयों के भेदों की व्युत्पत्ति एवं अध्यात्मनयों का कथन किया गया है।

आरम्भ में वचनपद्धति को ही आलापपद्धति कहा है-

1. द्रव्याधिकार,	2. गुणाधिकार	3. पर्यायाधिकार
4. स्वभावधिकार	5. प्रमाणिधिकार	6. नय-अधिकार
7 गुण-व्युत्पत्ति	8. पर्यायव्युत्पत्ति-अधिकार	9. स्वभावव्युत्पत्ति अधिकार
10. एकान्तपक्ष में दोष	11 नययोजना	12. प्रमाणकथन
13. नयलक्षण और भेद	14 निक्षेप व्युत्पत्ति	15. नयों के भेद की व्युत्पत्ति
16. अध्यात्मनय		

नामानुसार विषयों का निरूपण इन अधिकारों में किया गया है। जैन सिद्धांत को अवगत करने के लिये यह छोटा-सा ग्रंथ बहुत उपयोगी है। द्रव्य के सामान्य और विशेष गुणों का विवेचन करते हुये लिखा है।

अस्तित्वं, वस्तुत्वं, द्रव्यत्वं, प्रमेयत्वं, अगुरुलघुत्वं, प्रदेशत्वं, चेतनत्वचेतनत्वं, मूर्तत्वममर्तत्वं, द्रव्याणां देश सामान्यगुणा। प्रत्येकमष्टावष्टो सर्वेषाम्।

एकैकद्र० ये अष्टौ अष्टौ गुणा भवंति। जीवद्रव्ये अचेतनत्वं मूर्तत्वं च नास्ति, पुद्गलद्रव्ये चेतनत्वममूर्तव्यं च नास्ति धर्माधर्माकारकालद्रव्येषु चेतनत्वं मूर्तव्यं च नास्ति। एवं द्विद्विगुणवर्जिते अष्टौ अष्टौ गुणाः प्रत्येक द्रव्ये भवन्ति।

ज्ञानदर्शनसुखर्वार्याणि स्पर्शरसगंधवर्णाः गतिहेतुत्वं स्थितिहेतुत्वमवगाहन हेतुत्वं वर्तनाहेतुत्व चेतनत्वमचेतनत्वं मूर्तत्वममूर्तत्वं द्रव्याणां षोडश विशेष गुणाः।

अर्थात् अस्तित्व वस्तुत्व द्रव्यत्व, प्रमेत्यत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व अचेतनत्व, मूर्तत्व और अमूर्तत्व ये द्रव्यों के सामान्यगुण हैं। सदैव द्रव्यों के साथ रहते हैं, द्रव्यों से प्रथक नही होते। प्रत्येक द्रव्य में दस सामान्यगुणों में से आठ-आठ गुण रहते हैं, दो-दो गुण नहीं होते। ज्ञान, दर्शन, सुख, वार्य, स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, गतिहेतु, स्थितिहेतुत्व, अवगहानहेतुत्व, वर्तनाहेतुत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्तत्व और अमूर्तत्व ये द्रव्यों के सोलह विशेषगुण हैं।

इस प्रकार द्रव्य गुण स्वभाव के अतिरिक्त नय और प्रमाण का भी विवेचन किया है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
फरवरी 2022

सच्ची शरण ये प्रभु के चरण

प्रथम-

वीतराग मय मोहक मुद्रा
मन भावन नित लगती है
पापकर्म के बहुसमूह को
पल भर में यह हरती है
भववन में भटके जन को
परमात्म है सत्य शरण
लगन लगा लो प्रभु से अब तुम
सच्ची शरण ये प्रभु के चरण

श्रीमती कल्पना जैन, रहली

द्वितीय-

कब से तुम भटके
विषयों में अटके
नहीं बोध पाया
प्रभु तारण तरण
सच्ची शरण ये प्रभु के चरण

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

यश गाथा हम सुनते रहते
ईश निकप जो भी रहते
वे सब दुख से पाप उतरते
नही कष्ट वो भारी सहते
वीतराग प्रभु संकट हरण
सच्ची शरण ये प्रभु के चरण

शुचि जैन, गेरतगंज

वर्ग पहेली क्र. 266
जनवरी 2022 के विजेता

प्रथम : श्रीमती डॉ उज्ज्वला जैन, औरंगाबाद
द्वितीय : आयुषी जैन, गंजबासौदा
तृतीय : राजेश जैन, इंदौर

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. र् म् इ उ आ न् ब् र् ई अ र् अ आ ई स् ग् अ ज् म् म् ई ह् आ ज् ने अ
2. र् म् इ उ आ न् ब् र् ई अ र् अ आ अ ग् य् ई स् ग् अ ज् म् ह् आ पु ज् अ
3. र् म् इ उ आ न् ब् र् ई अ र् अ आ य् अ ई स् ग् अ ज् म् ह् आ पा ज् अ
4. र् म् इ उ आ न् ब् र् ई अ र् अ अ त् त् म् अ आ ई स् ग् अ ज् म् ह् आ ज् उ अ
5. र् म् इ उ आ न् ब् र् ई अ र् अ अ न् म् य् अ आ ई स् ग् अ ज् म् ह् आ ज् वि अ

परिणाम :

फरवरी 2022: (1) मुनि श्री नियम सागर जी (2) मुनि श्री वृषभ सागर जी (3) मुनि श्री अभिनंदन सागर जी (4) मुनि श्री प्रबोध सागर जी (5) मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी

पुराण प्रेरणा

संसार भावना का एक अनूठा चिंतन

संसारः पञ्चधा प्रोक्तो द्रव्यं क्षेत्रं तथा परः।
कालो भवस्तयाद प्रोक्तः पञ्चमो भावसंज्ञकः ।।
परावृत्तानि जीवेन कृतानि पञ्च संसृतो।
अनन्तानि च तेषां त्वेकस्य कालोप्यनेकशः ।।
किं रज्यसि वृथा जन्तो संसृतौ शुभलाभतः।
स्थिरीभव स्वचिद्रूपेऽन्यथा चेत्सं सृतिभ्रमः ।।

आचार्यों ने संसार के पाँच भेद बताये हैं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव। पाँच प्रकार के संसार में इस जीव ने ऐसे अनन्त चक्कर लगा जिनका एक एक का काल भी अनंत है और एक-एक का अनेक बार क्रम आया है, फिर हे प्राणी ! तू शुभ की आशा कर संसार में व्यर्थ की काहे को अनुरक्त होता है? अपने चिद्रूप आत्मा में ही लीन क्यों नहीं होता ? देख ऐसा करने में तुझे संसार में चक्कर लगाने के सिवा कुछ भी लाभ न होगा।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान -**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

जैन विश्वविद्यालय क्यों और कैसे ? एक परिकल्पना

❊ डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली ❊

पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी ने सन् 1905 में श्रुतपंचमी के दिन काशी में श्री स्याद्वाद महाविद्यालय की स्थापना करके और स्वयं इस विद्यालय के प्रथम छात्र बनकर जिस अनुपम इतिहास की रचना की, वह अपने-आप में बहुत महत्त्व रखता है। आज उसके गौरवशाली सौ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं । प्राकृत एवं संस्कृत भाषा तथा जैन शिक्षा के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व क्रान्ति का शंखनाद करने वाला यह महाविद्यालय जिन कीर्तिमानों की सृष्टि करता रहा है, उसकी बराबरी कर पाना एक के वश की बात नहीं है। इसका योगदान किसी विश्वविद्यालय से कम नहीं आंका जा सकता। यहीं के स्नातकों ने अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर ऐसे ही अनेक विद्यालयों के संचालन का कार्य कुशलता से सम्हाला और नये शिक्षण संस्थानों की स्थापना भी की। इसके संस्थापक पूज्य वर्णी की जी **मेरी जीवन गाथा** पुस्तक के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने जबलपुर में एक जैन विश्वविद्यालय की स्थापना की भी परिकल्पना की थी और इस दिशा में कुछ प्रयास भी किये थे। अनेक स्थानों में तब से अब तक अनेक प्रयास इस लक्ष्य हेतु हुये, किन्तु अब तक सफलता नहीं मिली। जैन विश्वविद्यालय की परिकल्पना कैसी हो ? इस विषय में मेरे मन भी अनेक रूप उभरे। किन्तु अन्ततः एक सम्पूर्णता को समेटे हुये मेरे अल्पज्ञ मन में जो रूप उभरा, उसे इस आशय से प्रस्तुत कर रहा हूँ ताकि भविष्य में इसका सुनियोजित विशद रूप कभी साकार हो सके-इसी मंगल भावना के साथ प्रस्तुत है जैन विश्वविद्यालय की परिकल्पना-

किसी भी धर्म, दर्शन और संस्कृति के उत्थान में दो घटक महत्त्पूर्ण भूमिका निभाते हैं- पहला है उस धर्म, दर्शन और संस्कृति का पालन-पोषण तथा अनुकरण करने वाली समाज और दूसरा घटक, जिसकी भूमिका काफी महत्त्वपूर्ण है, वह है- उस धर्म, दर्शन और संस्कृति का साहित्य और उसके ज्ञाता। जैन विद्या, संस्कृति और उसके विशाल साहित्य की सुदीर्घ परम्परा जैन संस्कृति की अनमोल धरोहर है। जैन साहित्य की यह विशेषता है कि उसका प्रणयन करने वालों में लगभग सभी सांसारिक मोहमाया से दूर वनों में वास करने वाले संयमी एवं तपस्वी संत ही रहे। गृहस्थ धर्म में रहकर साहित्य संवर्धन करने वाले श्रावक विद्वानों ने भी उत्तरकाल में इसी भूमिका का निवर्तन बड़ी निष्ठापूर्वक किया।

जैन शिक्षा का इतिहास- तीर्थंकर महावीर के निवार्ण के बाद से जब पूरे भारतवर्ष में धार्मिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक क्षेत्रों में परस्पर संवाद एवं प्रतियोगिता जैसा वातावरण बना हुआ था उस समय तीन सौ तिरेसठ मतावलम्बी इस क्षेत्र में अपना वर्चस्व बनाये हुये थे। उस समय प्रत्येक धर्म के आचार्य और प्रवर्तक अपेक्षाकृत बहुत तीव्रता से देश की नदियों , पर्वतों, तीर्थों, पूजा-स्थलों, वृक्षों, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि, आकाश इत्यादि प्राकृतिक तत्त्वों पर अपना-अपना धार्मिक आधिपत्य स्थापित करने हेतु प्रयत्नशील थे, तब उन दूरदृष्टा जैनाचार्यों ने, चाहे वे दिगम्बर रहे हों अथवा श्वेताम्बर, सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी-अपनी प्रतिभानुसार विद्याओं की हर विधा के लिये विशाल साहित्य का सृजन एवं संवर्धन करके संसार की प्रत्येक ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं को अपने-अपने योगदानों से भर दिया । जैन साधु आध्यात्मिक, अनेकान्तवादी,

अहिंसक, अपरिग्रही और ज्ञान-ध्यान तपोरक्तः में विश्वास करने वाले थे। उनकी रुचि निवृत्ति प्रधान थी। वे आत्मरसिया थे, फिर भी वैसे प्रतिकूल एवं कठिन वातावरण में भी जैन सिद्धांत, संस्कृति, साहित्य और समाज को अधिक श्रेष्ठ प्रभावनायुक्त एवं गौरवशाली सिद्ध करने की प्रवृत्ति का लोभ संवरण नहीं कर पाते थे।

हमारी तथा अन्य परम्पराओं की स्थिति- उन दिनों वैदिक संस्कृति का प्रभाव प्रवृत्तिपरक और पूरी तरह लौकिक होने के कारण जनमानस को आन्दोलित और प्रभावित किये हुये था। बौद्ध आचार्य अपनी पूरी शक्ति से उनका मुकाबला कर रहे थे, तभी इस मुकाबले में वे इतने अधिक निखरे और विकसित हुये कि वैदिक परम्परा के आचार्यों को भी उनका खण्डन करने में बहुत श्रम व समय लगाना पड़ा। वैदिक परम्परा के पास बुद्धिजीवियों की एक लम्बी कतार थी। वहाँ धुरन्धर गृहस्थ पण्डित विद्वान भी अधिक संख्या में थे तथा मंत्रदृष्टा साधु, सन्यासी, ऋषि भी। आज भी यही स्थिति है। हमारे जैनाचार्यों को तीर्थंकरों की सर्वज्ञता पर पूरा विश्वास था, किन्तु वे संख्या में अपेक्षाकृत कम थे। उनके श्रावकों में विद्वान कम, किन्तु सम्पन्न श्रीमन्तों की संख्या अधिक थी। इन्हीं को साथ लेकर उन्हें जैनधर्म की पताका लहरानी थी। ये संपन्न गृहस्थ भी विभिन्न क्षेत्रों में फैल होने के कारण लोकधर्म से बहुत जल्दी प्रभावित हो जाया करते थे। जैनाचार्यों के समक्ष इन्हीं लोगों के साथ, इन्हीं संसाधनों का उपयोग करते हुये सिद्धांत और संस्कृति को सुरक्षित रखने का उपाय खोजना था। अतः उन्होंने वैसा मार्ग खोजा भी।

हमारी प्रारम्भिक नीति- जैनाचार्यों ने स्थिति को भाँपते हुये अध्ययन-अध्यापन तथा शास्त्रलेखन की बागडोर स्वयं संभाली। इससे उन्हें दो लाभ थे, एक इससे उनका मोक्षमार्ग प्रशस्त होता था और दूसरा गृहस्थों को मार्गदर्शन मिलता था। गृहस्थों की सम्पन्नता का उपयोग तीर्थ निर्माण की प्रेरणा जिसके फलस्वरूप धर्म भावनाओं से ओत-प्रोत श्रद्धालु मूर्तियाँ तथा उनकी प्रतिष्ठा करवाने लगे। इस फैसले का सबसे अधिक सार्थक परिणाम यह आया कि भारत में ही नहीं, वरन् विश्व के अनेक क्षेत्रों से आज भी खुदायी में मिल रही जैनमूर्तियों, मंदिरों के अवशेषों आदि के साक्षात् प्रत्यक्ष-प्रमाण निरन्तर प्राप्त होने के कारण, जैनों से ईर्ष्या करने वाले विद्वान भी जैन संस्कृति की प्राचीनता को नाकार नहीं पाते हैं।

हमारा योगदान- जैनाचार्यों ने ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में काँटे की टक्कर ली। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, गणित, भूगोल, खगोल, ज्योतिष, वास्तुकला, आयुर्वेद, तंत्र-मंत्र, भाषा, काव्य, व्याकरण, चित्रकला, संगीतकला इत्यादि अनेक विषयों पर उच्चकोटि के सहस्त्रों शास्त्रों को रचकर जैनेतर आचार्यों एवं विद्वानों को भी विस्मय में डाल दिया। इन विषयों में इनकी उपलब्धि इतनी अधिक मौलिक, खोजपूर्ण व गंभीर थी कि जैनेतर आचार्य भीआश्चर्यचकित हो उठे। उनकी खंडन वाली तलवार भी इनको काट नहीं पाती थी और हमारी अनेकान्तात्मक, अहिंसात्मक, विनम्र तथा सबको जोड़ने वाली गंभीर प्रस्तुति की मामूली सी सिलाई करने वाली सुई भी उन्हें चुभती थी।

हमारी दशा- जैनाचार्य पूरी ताकत से लग रहे ज्ञान-विज्ञान की विविधताओं से साहित्य समृद्ध करते रहे, भोली समाज श्रद्धावशात् उस विरासत को सुरक्षित रखने की कोशिश करती रही, किन्तु कहीं हमारी नादानी हमें मार गयी तो कहीं अज्ञान। विरोधियों ने हमारे शास्त्रों की होलियाँ भी जलायीं । हमारे सामने आचार्यों एवं साधुओं की श्रुति-परम्परा के आधार पर ज्ञान को सुरक्षित रखने

का विकल्प नहीं था। समाज में विद्वान् कम, व्यापारी अधिक थे। बौद्ध इस मुकाबले में लाभ ले गये। उन्होंनें राजाश्रय प्राप्त किया और देश के विभिन्न क्षेत्रों में कई विश्वविद्यालय स्थापित किये और सम्पूर्ण विश्व पर हावी हो गये। वैदिक समाज अपनी समर्पित पण्डित परम्परा और राजाश्रय के बल पर, अपनी शास्त्रीय विद्वत्ता, कर्मकाण्ड और पूजनपाठ के बल पर चमत्कार दिखलाते रहे और जन-समुदाय को अपनी और प्रभावित करते रहे। हम बहुत पीछे रह गये। हमारे आचार्यों ने जो शास्त्र रचे हम उन्हें बचा तक नहीं पाये, जो बचा पाये, उसे पढ़-लिख नहीं पाये और उसके महत्त्व को भी नहीं समझ पाये। हम खुद नहीं समझ पाये, इसलिये दुनिया को नहीं समझा पाये। इसलिये आज हमसे हमारी पहचान पूछी जा रही है। हमें आज कोर्ट में सिद्ध करना पड़ता है कि हम अन्य नहीं, अपितु जैन हैं ? हम अपने समृद्ध इतिहास और वैभव से अनजान होने के कारण उसी प्रकार रो रहे हैं, जिस प्रकार बचपन में मेले में खो जाने के बाद करोड़पति बाप का लड़का रिक्शे खींचते हुये रोता है। क्योंकि उस लड़के को उस समय यह पता नहीं है कि वह किसका पुत्र है ? यही स्थिति हमारी है।

आशा की किरण- अनेक संघर्षो उत्थान-पतन के बाद जाकर एक आशा की किरण जागी। कुछ जागरूक नेतृत्व के कारण समाज में काफी शास्त्रीय पण्डित हो गये। ये भी श्रद्धावशात् आचार्यों भगवन्तों द्वारा रचित शास्त्रों को जीवन्त करने का काम करने लगे। कुछ ने समाज को जागृत किया, कुछ ने जैनेत्तर विद्वानों के समक्ष जैन सिद्धांतों , संस्कृति और समृद्ध साहित्य को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया। वर्तमान युग के जैनाचार्यों, साधु और श्रावक भी इस दिशा में गतिशील हुये हैं। उन्होंने जैन शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन-अनुसंधान-अनुवाद तथा सम्पादन के महत्व को पहचाना और आज अपने-अपने स्तर पर सभी इसे आगे बढ़ाने में लगे हैं। जैन शास्त्रों की अस्मिता सुरक्षित करने में जहाँ उन्हें एक तरफ कुछ जैनेत्तर विद्वानों की उपेक्षणीय दृष्टि झेलनी पड़ी वहीं दूसरी ओर हम ऐसे अनेक विद्या-प्रेमी ब्राह्मणों के ऋणी भी है, जिन्होंने जैन शास्त्रों के संवर्धन व सम्पादन आदि में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी-मूल भारतीय में पली-पुसी जैन संस्कृति ने जनमानस पर भरपूर प्रभाव डाला और अपनी जड़ें मजबूत की। सैद्धांतिक दृष्टि से वैदिक स्वर के साथ स्वर न मिलाने के कारण जैनों को सदा सत्ता और बाहुबलों की कोप-दृष्टि भी झेलनी पड़ी और आज भी झेलनी पड़ रही है। सरकार द्वारा परम्परागत जैन अध्ययन-अध्यापन तथा शोध आदि पर या इनसे संबंधित संस्थानों को कभी कोई विशेष आर्थिक आदि सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। मुसलमानों के मदरसों आदि के लिये भरपूर सरकारी अनुदान मिलते हैं, बौद्धों के शिक्षा, शोधसंस्थान और मान्य विश्वविद्यालय भी पूरी तरह सरकारी अनुदान से चल रहे हैं, और वैदिक ज्ञान-विज्ञान का अधिकांश अभ्युदय अब भी सरकारी अनुदानों से करवाया जा रहा है।

दिगम्बर परम्परा की मान्यतानुसार श्रुत परम्परा विच्छिन्न हो गयी। कसायपाहुड एवं षट्खण्डागम आदि के रूप में मात्र कुछ अंश शेष बचे हैं। श्वेताम्बर जैन तेरापंथ के युगप्रधान आचार्य तुलसी ने एक ऐतिहासिक भूल को सुधारने का प्रयास किया। लाडनूं (राजस्थान) में जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय की स्थापना करके विश्व का प्रथम जैन विश्वविद्यालय खड़ा कर दिया। यद्यपि यह बहुत सराहनीय कदम है। किन्तु इसका भी वह स्वरूप नहीं आ पा रहा है ! जिसकी जरूरत वास्तव में है। यहाँ भी प्रोफेशनल कोर्स चालू होने से विश्वविद्यालय का मुख्य

उद्देश्य गौण होता जा रहा है। समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि भगवान महावीर के 2600वें जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में विहार सरकार द्वारा भगवान महावीर विश्वविद्यालय बनाने की घोषणा हुई थी। वह कब खुलेगा ? यह कह नहीं सकते, किन्तु उसकी रूपरेखा कैसी होनी चाहिये, यह विचारणीय बिन्दु है।

श्रुत-रक्षा हेतु प्रयास- बीसवीं सदी के प्रारम्भ में जैन विद्या के पठन-पाठन को सुरक्षित रखने के लिये हमारी समाज के कर्णधारों ने जैन विद्यालयों का शुभारंभ किया। मध्यमा, शास्त्री, आचार्य की कक्षाओं में परम्परागत शास्त्रीय विषय पढ़कर शास्त्रीय विद्वानों की श्रृंखला तैयार हुई। कुछ विश्वविद्यालयों तक में जैनदर्शन एवं प्राकृत विभाग खोले गये। जैन चेयर स्थापित की गयीं। इन सभी प्रयासों से जैन संस्कृति के दर्शन-पक्ष का स्वरूप तो यत्किंचित् निखरा और काफी कार्य हुआ, किन्तु फिर भी प्राकृत अपभ्रंश भाषाओं तथा जैन संस्कृति के अन्य महत्वपूर्ण विषय एवं पक्ष बिल्कुल उपेक्षित रह गये, जिनका अध्ययन-अध्यापन और अनुसंधान कार्य बहुत आवश्यक था।

जैन विश्वविद्यालय की परिकल्पना- आज कुछ लोगों से जैन विश्वविद्यालय बनाने एवं उसकी सम्भावनाओं की चर्चाएँ प्रायः सुनता हूँ, किन्तु जैन विश्वविद्यालय कैसा होना चाहिये, इसका कोई निश्चित स्वरूप अभी तक देखने में नहीं आया। जैन नाम से तो विश्वविद्यालय स्थापित हो सकते हैं, किन्तु वहाँ भी यदि अन्य विश्वविद्यालयों जैसे व्यावसायिक या लौकिक शिक्षा के पाठ्यक्रम ही लागू रहें तो नाम मात्र से ही क्या फायदा ?

हमारे मन में ऐसे ही विश्वविद्यालय की परिकल्पना बहुत दिनों से बार-बार बनती रही है जो अन्तराष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता को बनाते हुये पूर्ण रूप से जैन संस्कृति मात्र के प्रति समर्पित हो। किसी भी विश्वविद्यालय में एक मात्र जैन दर्शन एवं प्राकृत-विभाग चलाने से संपूर्ण संस्कृति का संवर्धन संभव नहीं , समग्रता जैनधर्म के विभिन्न उपेक्षित महत्त्वपूर्ण विषयों के अध्ययन में होगी। एक पूर्णतः स्वायत्तशासी तथा सरकार द्वारा अनुदानित जैन विश्वविद्यालय देश के किसी बड़े शहर में स्थापित होना चाहिये। यह विश्वविद्यालय कोई धर्म प्रचार का केन्द्र न बनकर मात्र शैक्षणिक रूपरेखा वाला केन्द्र बने और सरकारी अनुदान से इसलिये कि जैनधर्म दर्शन संस्कृति एवं साहित्य भी हमारे देश की गरिमा है। अतः वैदिक, बौद्ध, मुस्लिम शिक्षण संस्थानों की तरह हमें भी इनके संवर्धन, संरक्षण हेतु सरकार से आर्थिक अनुदान का उतना ही अधिकार है जितना अन्यों को। हमारी समाज का टैक्स आदि के रूप में सरकारी खजाने भरने में सर्वाधिक योगदान भी है।

अतः यहीं ढंग से चलाया जाय तो विशिष्ट अनुसंधान तथा अध्ययन के उद्देश्य को लेकर चलने वाला यह जैन विश्वविद्यालय नये कीर्तिमान स्थापित कर सकता है। विश्वविद्यालय और पारम्परिक महाविद्यालयों , पाठशालाओं में मौलिक अन्तर यही होता है कि विश्वविद्यालय पूजन, पाठ, विधान और प्रवचन आदि के ट्रेनिंग केन्द्र नहीं है। इसलिये यह हो सकता है कि समाज को इस विश्वविद्यालय से सीधा-सीधा विशेष लाभ न दिखे, किन्तु प्रकारानतर से यह समाज का ऐतिहासिक सच्चा सेवक सिद्ध हो सकता है। यदि हम अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षणिक स्तर पर जैन संस्कृति की कोई स्थिति प्राप्त करना चाहते हैं , तो हमें अवश्य ही छोटे-छोटे लाभ के लोभ का संवरण करना ही पड़ेगा, क्योंकि इस प्रकार के अन्य स्रोत बहुत हैं । सुप्रसिद्ध खिलाड़ी सचिन तेन्दुलकर से यह अपेक्षा नही की जानी चाहिये कि वह हमारे लिये तभी उपयोगी होगा जब हमारे गली मुहल्ले में होने वाले खेलों में भी भाग लें।

विभागों का वर्गीकरण- जैन विश्वविद्यालय संचालित करने में जो प्रमुख उद्देश्य है वह है- अध्ययन, अध्यापन-अनुसंधान-अनुवाद और सम्पादन। इस दृष्टि से जैन विश्वविद्यालयों में निम्नलिखित विभागों का वर्गीकरण होना चाहिये।

1. प्रथमानुयोग विभाग- इस विभाग में जैन 63 शलाका पुरुषों के चरित्र के आधार पर रचित पुराणों , कथा ग्रंथों तथा उनमें वर्णित कथाओं और उपदेशों का अध्ययन व अनुसंधान हो। कथानुयोग के समस्त ग्रंथों का इस विभाग में अध्ययन-अध्यापन कराया जाये। उस पर शोध कार्य हों। हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो।

2. करणानुयोग विभाग- यह विभाग एक संकाय के रूप में भी कार्य कर सकता है। जिसके अंतर्गत कई विभाग अलग-अलग विषयों पर कार्य कर सकते है। जैसे-

(क) जैन गणित विभाग- इस विभाग में गणित की उत्पत्ति से लेकर आज तक की गणित में जैन गणितज्ञों द्वारा रचित शास्त्रों को क्रमबद्ध पाठ्यक्रम बनाकर उसका अध्ययन-अनुसंधान किया जाये। जैन गणित के चमत्कारों को दुनिया को समक्ष रखा जाये। वैदिक गणित व आधुनिक गणित से जैन गणित का तुलनात्मक अध्ययन हो। अप्रकाशित प्राचीन ग्रंथों का सम्पादन व प्रकाशन हो।

(ख) जैन भूगोल विभाग- इस विभाग में जैन भूगोल का शास्त्रीय व वैज्ञानिक तुलनात्मक अनुसंधान व अध्ययन हो। अप्रकाशित ग्रंथों का सम्पादन व प्रकाशन हो।

(ग) जैन खगोल विभाग- इस विभाग में जैन खगोल का जैन दृष्टि से तथा अन्य धर्मों से तुलना करते हुये अध्ययन अनुसंधान हो तथा अप्रकाशित पाण्डुलिपियों को एकत्रित कर उसका संपादन व प्रकाशन कार्य हो।

(घ) जैन ज्योतिष विभाग- इस विभाग में जैन ज्योतिष विद्या से अन्य सभी ज्योतिष विद्याओं का तुलनात्मक अध्ययन हो। ज्योतिष, हस्तेरखाविज्ञान, निमित्त ज्ञान, सामुद्रिक शास्त्र इत्यादि विषयों पर इस विभाग के अंतर्गत अध्ययन-अध्यापन व अनुसंधान हो।

3. चरणानुयोग विभाग- इस विभाग में श्रावक एवं श्रमण के आचारपरक शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन हो। इसका सभी छोटी बड़ी कथाओं के अनुरूप सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम तैयार किया जाये। ग्रंथों पर शोधकार्य हो। प्राचीन अप्रकाशित पाण्डुलिपियों को खोजा जाय, उनका सम्पादन व प्रकाशन हो। इसमें आर्यिका साधु बनने वाले सुपात्रों को शिक्षा के साथ व्रती बनने की पूर्व ट्रेनिंग दी जाये।

4. जैन द्रव्यानुयोग विभाग- इस विभाग के भी दो उपविभाग होंगे। पहला अध्यात्म-शास्त्र विभाग और दूसरा न्याय-शास्त्र विभाग। इनसे संबंधित प्रमुख शास्त्रों का व्यवस्थित पाठ्यक्रम बनाकर इस विभाग में पढ़ाया जाये तथा इस दृष्टि से अध्ययन-अध्यापन व अनुसंधान कार्य भी कराया जाये। अन्य परम्पराओं के शास्त्रों से तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाये।

5. जैन इतिहास, कला एवं पुरातत्त्व विभाग- इस विभाग में जैन इतिहास को एक नये सिरे से नये खोजे गये प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर लिखा जाय, उसका अध्ययन अनुसंधान हो। लिपि विज्ञान, मूर्तिकला वास्तुकला, चित्रकला इत्यादि विषयों पर अध्ययन हो तथा तत्संबंधित अप्रकाशित ग्रंथों का प्रकाशन हो। जैन पुरातत्त्व के साक्ष्यों को इस विभाग में एकत्रित किया जाये। जैन

इतिहास के तथ्यों को दुराग्रहवश तोड़ मरोड़कर विश्व में किसी के द्वारा यदि कहीं भी प्रस्तुत किया गया हो, जो उसका यहाँ से समाधान मिले। सिंधु घाटी सभ्यता, मोहनजोदड़ो, हडप्पा संस्कृति , विभिन्न प्राचीन शिलालेखों इत्यादि का पुनः अध्ययन हो। इसी विभाग के अंतर्गत एक व्यवस्थित विशाल जैन पुरातत्त्व संग्रहालय भी विश्वविद्यालय में स्थापित किया जाय।

6. जैन संगीत एवं नृत्यकला विभाग- इस विभाग में इस बात का प्रशिक्षण व अनुसंधान हो कि संगीत एवं नृत्य जगत के लिये जैन संस्कृति का क्या अवदान रहा ? इन विषयों से संबंधित शास्त्रों का अध्ययन, सम्पादन व प्रकाशन हो। प्रायोगिक रूप से भी उनका एक प्रारूप तैयार हो, जिसका प्रस्तुतिकरण देश- विदेश में किया जा सके।

7. प्राकृत भाषा साहित्य एवं भाषा विज्ञान विभाग- इस विभाग में सभी प्राकृत भाषाओं एवं उसके साहित्य का सुव्यवस्थित रूप से अध्यापन होगा। यहाँ प्राकृत व्याकरण साहित्य के सभी पहलुओं पर विचार-विमर्श व अनुसंधान अपेक्षित है।

8. अपभ्रंश भाषा विभाग- इस विभाग में भी अपभ्रंश भाषा एवं इसके साहित्य का अध्ययन तथा अनुसंधान किया जाये।

9. जैन योग विभाग- जैन परम्परा द्वारा प्रतिपादित योग एवं ध्यान पद्धतियों का प्रायोगिक व सैद्धान्तिक अध्ययन करेगा। नये युग में योग की भूमिकाओं का ध्यान करते हुये उसे आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करेगा। अन्य सभी योग पद्धतियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन होगा। यहाँ योग व ध्यान से संबंधित पाण्डुलिपियों, ग्रंथों व अनुसंधानों का संपादन व प्रकाशन अपेक्षित है।

10. जैन विद्या एवं आधुनिक विज्ञान विभाग- इस विभाग में जैन सिद्धांतों का आधुनिक विज्ञान व सिद्धांतों का तुलनात्मक विश्लेषण होगा।

11. जैन विधि-विधान विभाग- यह विभाग जैनधर्म सभी परम्पराओं की पूजन पद्धतियों, विधि-विधानों के स्वरूपों, प्रतिष्ठाओं तथा अन्य सभी संस्कारों एवं क्रिया-काण्डों की शास्त्रीयता व वैज्ञानिकता का अध्ययन, अनुसंधान करेगा। अप्रकाशित ग्रंथों का प्रकाशन करेगा। मंत्रों-मंत्रों आदि पर अनुसंधान हो।

12. जैन शिक्षाशास्त्र विभाग- इस विभाग में इस बात का अनुसंधान किया जायेगा कि जैन शिक्षाशास्त्र कैसा है ? और मूल्यपरक शिक्षा के विकास में जैन शिक्षा पद्धति की क्या भूमिका है ? वर्तमान में जो बी.एड. एवं एम.एड के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षण होता है, क्या उसमें जैन शिक्षा पद्धति संयोजित करने से सार्थक परिणाम सामने आ सकते हैं ? इनके अलावा भी इस विषय पर गंभीर चिन्तन, शोध इसी विभाग से संभव हो सकेगा।

13. आयुर्वेद चिकित्सा विभाग- यह जानकारी बहुत कम लोगों को है कि प्राकृतिक चिकित्सा, शुद्ध जड़ी बूटी द्वारा औषधि निर्माण आदि कार्य, जिन्हें आयुर्वेद के अंतर्गत गिना जाता है, इस विषय के अनेक शास्त्र जैनाचार्यों द्वारा रचे गये। आयुर्वेद क्षेत्र के विशेषज्ञ इस विभाग से इस ज्ञान राशि पर अनुसंधान, अध्यापन व अध्ययन करेंगे। यह विभाग एक प्रयोगशाला व एक रसायनशाला एवं चिकित्सालय भी स्थापित करेगा, जिसमें जनसामान्य अपना इलाज भी करवा सकेंगे।

14. अनुवाद विभाग- इस विभाग में सभी प्रमुख जैन शास्त्रों का अंग्रेजी सहित संसार की कई भाषाओं में अनुवाद करवाया जायेगा। ताकि समग्र महत्त्वपूर्ण जैन साहित्य तथा विचारधारा

को संपूर्ण विश्व में फैलाया जा सके।

15. प्रकाशन विभाग- यह विभाग सभी विभागों के अनुसंधान व संपादन को प्रकाशित करेगा। एक शोध पत्रिका भी इसी विभाग से प्रकाशित होगी।

इनके अतिरिक्त हस्तलिखित शास्त्र विभाग पांडुलिपि संरक्षण विभाग जैसे अन्य विभाग भी आवश्यकतानुसार संभव हो सकते हैं , जिनकी जानकारी जैन विद्या के विशेषज्ञों से प्राप्त की जा सकती है जैन विश्वविद्यालय में देश-विदेश के कोने कोने से खोजकर उन महान समर्पित विद्वानों को विभाग सौपे जायें, जो अनुभवी है तथा तत्संबंधी विषय का तलस्पर्शी ज्ञान रखते हों। इसके लिये भले ही उनके पास औपचारिक डिग्रियाँ न हों किन्तु यदि उनकी इस विषय से संबंधित विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं तब भी उन्हें उनके अनुभव एवं कार्य के आधार पर, सम्मानजनक वेतनमान देकर रखा जायेगा ताकि प्रतिभाओं का सही उपयोग किया जा सके। इसके लिये जरूरी नहीं कि हम शुरूआत में ही पहले करोड़ों की व्यवस्था की बात साचें। देश में समाज द्वारा बनी न जाने कितनी इमारतें विभिन्न नगरों में जिनका उपायोग इसके लिये किया जा सकता है। आज देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में जैन विद्या एवं अन्य विषयों को पढ़ाने वाले जैन प्रोफेसर्स कार्यरत् हैं , जिन्हें सम्मानित रूप से इन विभागों में सेवा हेतु रखा जा सकता है और विश्वास मानें इन सभी लोगों में ऐसा कोई न होगा जो सेवा देने को तैयार न हो। आरम्भ में मात्र अनुसंधान कार्य रखा जाये तथा एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना की जाये। सभी विभागों का स्वरूप तय करने तथा विषय प्रवर्तन में भी कई वर्ष लग जायेंगे किन्तु यदि अभी शुरूआत हो गयी और कुछ कार्य तथा स्वरूप सामने आने लगा तो भविष्य में इसकी मान्यता तथा सरकारी अनुदान लेने हेतु आधारभूमि भी तैयार हो जायेगी।

शुरूआत तो करनी ही होगी, शुरूआत भले ही छोटे रूप में हो किन्तु यदि ख्वाब ऊँचे होंगे तो हम उनको एक न एक दिन सच कर ही लेंगे। ऐसे विश्वविद्यालय वास्तव में उच्च शिक्षा का एक विशिष्ट महत्त्वपूर्ण केन्द्र होगा। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की तरह व्यापक अनुसंधान कार्यों के लिये स्थापित यह विश्वविद्यालय अपने आप में अद्वितीय होगा। जिन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे विश्व के अद्वितीय विश्वविद्यालय की स्थापना की ऐसे पंडित मदन मोहन मालवीय जी कोई सेठ नहीं थे, न ही कोई साधु, वे एक संकल्पी, आत्मविश्वासी विद्वान व कर्मठ पुरुष थे। अपनी भावनाओं से न जाने क्या-क्या विपत्तियाँ एवं अपमान सहकर इसकी स्थापना की। आज यह विश्वविद्यालय पूरे विश्व में विख्यात है। देखना यह है कि अपने जैन विश्वविद्यालय की स्थापना करके इतिहास की एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति क्या हो पायेगी ? क्या कोई नया इतिहास रचा जायेगा ? बहुत से लोगों के मन में ये बाते हैं। कितनों ने प्रयास भी किये, पूज्य वर्णी जी एवं बैरिस्टर चम्पतरायत जी ने सभी अब से सत्तर वर्ष पूर्व इसकी कल्पना की थी। किन्तु उन सबकी आशायें अब तक हम पूरी नहीं कर पाये। हम अपने आपसी विवादों, कटुताओं, मनमुटाव, स्वार्थवादिताओं, पदलोलुपताओं, नेतागिरी एवं आडम्बर- युक्त क्रियाकाण्डों में रहकर अपनी बहुमूल्य शक्ति व्यर्थ खर्च करते रहे। इसीलिये हम अब तक इस दिशा में सफल नहीं हुये। हम नाकाम भले ही रहे हों, किन्तु नाउम्मीद नहीं है। यह स्वप्न कभी न कभी यथार्थ में परिणत होकर-रहेगा ऐसा हमें अब भी दृढ़ विश्वास है। क्योंकि

दिल ना उम्मीद तो नहीं नाकाम ही तो है।
लम्बी है गम की शाम मगर शाम ही तो है।

केरियर

फूड टेक्नोलॉजी में कमाई के अवसर

आधुनिक समय में फूड टेक्नोलॉजी की सहायता से खानें में नये-नये व्यंजनों की खोज हो रही हैं, जिसके कारण हमें अनेक प्रकार के नये व्यंजनों की प्राप्ति होती है, इस क्षेत्र में कभी भी मंदी का समय नहीं होता है, जिसके कारण इस क्षेत्र में युवाओं की रुचि अधिक देखनें को मिल रही है। विश्व में रेटिंग देनें वाली कम्पनी फिक्की के अनुसार भारत में फूड प्रोसेसिंग के कारोबार में योग्य लोगों की कमी अधिक है, इससे भविष्य में कुछ वर्षों में फूड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में काफी संख्या में रोजगार प्राप्त होंगे।

योग्यताः इस क्षेत्र में केरियर बनाने के लिये आपको फिजिक्स, केमिस्ट्री व बायोलॉजी अथवा मैथमेटिक्स विषयों के साथ बारहवीं में कम से कम 50 प्रतिशत अंक अनिवार्य हैं, इस क्षेत्र में स्नातक करने के बाद आप फूड टेक्नोलॉजी में एमएसपी की उपाधि प्राप्त कर सकते हैं।

फूड टेक्नोलॉजी के क्षेत्रः मैनुफैक्चर्ड प्रोसेसेज व वैल्यू एडेड प्रोसेसेज

प्रमुख कोर्सः बी.एस.सी (ऑनर्स) फूड टेक्नोलॉजी
बी.टेक फूड टेक्नोलॉजी
एम.टेक फूड टेक्नोलॉजी
पी.जी डिप्लोमा इन फूड साइंस एंड टेक्नोलॉजी
एम.बी.ए (एग्री बिजनेस मैनेजमेंट)

रोजगार के अवसरः इस कोर्स को करनें के पश्चात् जॉब के बहुत से विकल्प खुल जाते हैं, आप प्रोसेसिंग यूनिटों, रिटेल कंपनियों , होटल, एग्री प्रोडक्टस का उत्पादन करनें वाली कंपनियों में आप जॉब प्राप्त कर सकते हैं, इसके बाद आप खाद्य वस्तुओं की गुणवत्ता जाँचने, उनके निर्माण कार्य की निरिक्षण करने और खाद्य वस्तुकों को अधिक समय तक संरक्षित करने की तकनीकों पर काम करने वाली प्रयोगशालाओं में भी जॉब प्राप्त कर सकते हैं।

एम.बी.ए. (एग्री बिजनेस मैनेजमेंट)- रोजगार क्षेत्र गुणवत्ता जाँचने वाली प्रयोगशाला, फूड प्रासेसिंग यूनिट, रिटेल कंपनियाँ , एग्री प्रोडक्ट कंपनी आदि।

फूड टेक्नोलॉजी में कार्य- कच्चे माल से लेकर प्रोडक्ट बननें तक कम्पनी द्वारा इसके प्रत्येक स्तर पर जाँच की जाती है, विश्व स्तर पर कम्पनी का भविष्य उसकी गुणवत्ता पर आधारित रहता है, इसलिये कम्पनी इस पर विशेष ध्यान देती है।

वेतनः फ्रेशर के रूप से 10 से 15 हजार रुपये प्रतिमाह अनुभव के साथ 30 से 45 हजार रुपये प्रतिमाह तक प्राप्त कर सकते हैं ।

दुनिया भर की बातें

जनवरी 2022

■ 1 जनवरी

- कवर्धाः शहर के नंदी विहार कॉलोनी के पास नेशनल हाइवे किनारे खुले शराब दुकान के खिलाफ फिर प्रदर्शन हुआ।

- जम्मू-कश्मीर में पीपुल्स अलायंस फॉर गुपकार डिक्लेरेशन के नेता नये साल के पहले ही दिन नजरबंद हो गये हैं ।

- माता वैष्णों देवी तीर्थ क्षेत्र में मची भगदड़ में 12 श्रद्धालुओं की मौत हो गई। 15 घायल हैं।

■ 2 जनवरी

- हरियाणा के जींद में आर्मी के हेलीकॉप्टर में तकनीकी खराबी आने के कारण उसकी आपातकालीन लैंडिग करवानी पड़ी।

- गुजरात के छोटा उदयपुर से अलीराजपुर आ रही निजी बस नदी में गिर गई।

- छोटे से देश कतर ने फीका वल्डकप की तैयारी पर खर्च किये 22 लाख करोड़।

■ 3 जनवरी

- बीते 3 अक्टूबर को लखीमपुर खीरी में जीप से कुचलकर चार किसानों की हत्या के मामले में एसआईटी ने आरोप पत्र दाखिल किया।

- आरबीआई के लखनऊ चेस्ट में 47710 रुपये के नकली नोट मिले हैं।

- जम्मू कश्मीर में सुरक्षा बलों ने लश्कर ए-तोएबा के खतरनाक आतंकी सलीम पर्रे को मार गिराया।

■ 4 जनवरी

- यूनिवर्सिटी और संबद्ध कॉलेजों में सूर्य नमस्कार कार्यक्रम का मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एमपीएलबी) ने विरोध किया है मुस्लिम विद्यार्थियों के लिये फरमान जारी किया है।

- ब्रिटेन में भारतीय मूल की महिला आशा रानी ने बालों से 12,216 कि.ग्रा. वजनी डबल डेकर बस खींचकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है।

- यू.पी. के बरेली में काँग्रेस ने महिला मैराथन का आयोजन किया इसमें ज्यादा भीड़ होने से भगदड़ मची।

■ 5 जनवरी

- पंजाब के फिरोजपुर में फ्लाई ओवर पर किसानों ने ट्रक ट्रैक्टर अड़ाकर रोका पीएम का काफिला 20 मिनिट खड़ी रही गाडियाँ, मोदी को रैली शिलान्यास किये बगैर दिल्ली से लौटना पड़ा।

- जालंधर के थाना लांबड़ा की हवालात से शाम को दो शराब तस्कर फरार हो गये।

- सोवियत देश कजाकिस्तान में एलपीजी और गैसोलीन की कीमतें दोगुनी करना सरकार को महंगा पड़ गया है । इसके विरोध में देशभर में प्रदर्शन और हिंसा हुई । इसके बाद सरकार को इस्तीफा देना पड़ा।

■ 6 जनवरी

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोलकाता में चित्तरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान के दूसरे परिसर का वर्चुअल उद्घाटन किया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पंजाब यात्रा

के दौरान सुरक्षा में चूक के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब हरियाणा हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल को यात्रा से जुड़े सारे रिकार्ड तत्काल संरक्षित करने का आदेश दिया।

- हैंती में अपराधियो की गैंग ने दो पत्रकारों को जिंदा जला दिया।

■ 7 जनवरी

- मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने सीनियर आईपीएस अफसर वीरेश कुमार भावरा को नया डीजीपी नियुक्त किया।

- चुनाव आयोग ने शनिवार को यूपी पंजाब उत्तराखंड, मणिपुर, गोवा की चुनाव तारीखों का ऐलान कर दिया।

- केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने शनिवार को ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर की पूजा की।

■ 8 जनवरी

- नये साल में आतंक पर प्रहार 9 दिनों में दहशत गर्दो से सुरक्षाबलों की आदमी मुठभेड़ हुई।

■ 9 जनवरी

- पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत फिर समुद्र में परीक्षण के लिये उतरा।

- ब्राजील के मिनस गेरैस प्रांत की फर्नीस लेक में चट्टान का हिस्सा ढहकर तीन वोट पर गिरा इससे 7 लोगों की मौत हो गई 9 लोग घायल हैं।

- अफगानिस्तान में पिछले साल अगस्त में काबुल हवाई अड्डे से गायब हुआ दो महीने का बच्चा सोहेल मिल गया।

■ 10 जनवरी

- अमेरिका में लॉस ऐंजिसिल के पास एक छोटा प्लेन उड़ान भरने के बाद ही रेल की पटरी पर क्रेश हो गया।

- मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बड़ा हादसा टल गया। एयर इंडिया के विमान को खींचकर लाने वाले वाहन में आग लग गई।

■ 11 जनवरी

- लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कैबिनेट मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने मंत्री मण्डल से इस्तीफा दे दिया। उनके साथ भाजपा विधायक, बृजेश प्रजापति भगवती प्रसाद सागर रोशन वर्मा ने भी इस्तीफा दिया।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा घर बनाने के लिये ससुराल पक्ष से पैसे की मांग करना भी दहेज की मांग है जो भारतीय दंड संहिता की धारा 304 बी के तहत अपराध है।

- स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर भी कोरोना संक्रमित हो गई।

■ 12 जनवरी

- रियादः सऊदी अरब में शिप्स ऑफ डेजर्ट ऊँट सौदय स्पर्धा में पहली बार महिलाओं को भी शामिल किया गया।

- बैंगलुरुः रॉकेट साइंटिस्ट एस सोमनाथ को इसरो का नया चैयरमैन नियुक्त किया गया है।

- मई 2020 में अपने सरकारी आवास पर दोस्तों के साथ शराब पार्टी पर घिरे ब्रिटिश प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने सांसद में माफी मांग ही ली।

■ 13 जनवरी

- बीकानेरः गुवाहाटी एक्सप्रेस बंगाल के उत्तरी भाग में मैनागुरी के पास डोमोहानी के पास पटरी से उतर गई हादसे में तीन यात्री की मौत हो गई जबकि कई यात्री घायल हो गये।

- भारतीय रविकुमार और टेक्सास के एंथनी मुनिगेटी पर देशभर के बुजुर्ग लोगों से करीब 6 लाख डॉलर की धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया गया।

- राजोरी जिले में नियंत्रण रेखा पर अग्रिम क्षेत्र में संदिग्ध गोलाबारी में सेना के दो जवान शहीद हो गये।

■ **14 जनवरी**

- पश्चिम बंगाल रेल हादसे में मृतकों को मिलेंगे 5-5 लाख रुपये रेल मंत्री ने किया ऐलान।

- इजराइल में वृक्षारोपण अभियान का विरोध करने वाले प्रदर्शनकारियों को पुलिस ने खदेड़ा आंसू गैस गोले भी छोड़े।

-आस्ट्रेलिया के ओन्स्लो में गर्मी का कहर 50.7 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा हुआ तापमान।

■ **15 जनवरी**

- उज्जैनः ब्रिज पर स्कूटर से सहेली के साथ जा रही छात्रा नेहा आंजना (20) का गला चाइना के मांझे से कट गया उसकी मौत हो गई।

- नई दिल्लीः विराट कोहली ने ट्विटर पर एक पोस्ट शेयर करते हुये टेस्ट टीम की कप्तानी छोड़ने का ऐलान किया।

- केन्द्र सरकार का बड़ा फैसला नेताजी ने जन्मदिन से शुरू होगा। गणतंत्र दिवस समारोह।

■ **16 जनवरी**

- उत्तर भारत में हो रही बर्फबारी के कारण पूरे प्रदेश में प्रचंड ठंड पड रही है मौसम विभाग की चेतावनी अगले एक हफ्ते पूरे प्रदेश में ऐसा ही बना रहेगा मौसम। कई जगह घना कोहरा फसलों को नुकसान।

- जो कोविच ऑस्ट्रेलियन ओपेन से हुये बाहर, मुकदमा हारे 3 साल का लगा बैन।

-ऑटो पर पलटा धान से लदा ट्रक चार की मौत। सतना जिले के अमर पाटन क्षेत्र में सड़क दुर्घटना।

■ **17 जनवरी**

- नई दिल्लीः चीफ जस्टिस एन.वी. रमना ने वर्चअल सुनवाई के लिये मोबाइल फोन का इस्तेंमाल करने वाले वकीलों पर नाराजगी जताई है।

- कत्थक के पर्याय बिरजू महाराज का निधन हो गया।

-आज सुबह 3100 फीट ऊँचे हर्ष पहाड़ से ली गई तस्वीर में पूरा सीकर शहर 700 मीटर ऊँची कोहरें की चादर में लिपटा नजर आया।

■ **18 जनवरी**

- नई दिल्ली- भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1993 बैच के अधिकारी विक्रम देवदत्त को एयर इंडिया लि. का चैयरमेन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर नियुक्त किया गया।

- मुंबई के पूर्व पुलिस आयुक्त परमवीर सिंह भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) में पेश नहीं हुये।

- पंजाब में भगवंतमान आम आदमी पार्टी के मुख्यमंत्री प्रत्याशी होंगे।

■ **19 जनवरी**

- दिल्ली की तिहाड़ जेल में चैकिंग के दौरान कैदी संतोष ने मोबाइल छिपाने के लिये फोन को निगल लिया।

-राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग का जो कार्यकाल है उसे 3 साल के लिये बढ़ाया गया है।

-मेडागास्कर की राजधानी ऐटानानैरिवों में आई बाढ़ से 10 लोगों की मौत हो गई और 12,000 से अधिक लोग बेघर हो गये।

■ **20 जनवरी**

- लखनऊ- यूपी चुनावी समर में भीम आर्मी के प्रमुख चन्द्रशेखर आजाद सी.एम. योगी आदित्यनाथ को चुनौती देने उतर रहे हैं।

- म.प्र.: हाईकोर्ट ने एक अहम फैसले में कहा कि रेल्वे स्टेशन का नाम जनहित का मसला हो सकता है स्टेशन में उपलब्ध जनसुविधाओं का नाम से कोई संबंध नहीं।

- सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार को मेडिकल पाठ्यक्रमों में अखिल भारतीय कोटा सीटों में ओबीसी के लिये 27 फीसदी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को 10 प्रतिशत आरक्षण देने की अनुमति दे दी।

■ **21 जनवरी**

- गाजियाबाद के डासना मंदिर के प्रमुख एक धर्म के खिलाफ नफरत फैलाने और महिलाओं पर अभद्र टिप्पणी करने के आरोपी यति नरसिंहानंद पर सुप्रीम कोर्ट की अवमानना का केस चलेगा।

- ठगी के मामले में रोहणी जेल में बंद सुकेशचन्द्र शेखर को खास सुविधायें देने के लिये जेल के 80% कर्मचारी और सुरक्षाकर्मी रिश्वत ले रहे थे।

- असम की जिला अदालत ने पद्म श्री से सम्मानित उद्धव भराली को नाबालिग छात्रा से दुष्कर्म के मामले में 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया।

■ **22 जनवरी**

- मथुरा में अवैध असलहा फैक्ट्री का पर्दाफास मुख्य ऑपरेटर गिरफ्तार पिस्तौल बंदूक और 13 जिंदा कारतूस बरामद।

- बिहारः गया में पकड़ी गई शराब से लदी एंबुलेंस वेन दो आरोपी गिरफ्तार रांची से पटना भेजी जा रही थी शराब।

- लाहौर के अनारकली इलाके में हुआ धमाका हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई बाईस लोग घायल हो गये।

■ **23 जनवरी**

- पी.एम.मोदी ने सुभाषचन्द्र बोस के होलोग्राम स्टैच्यु का अनावरण किया।

- उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू कोरोना संक्रमित हो गये।

- अरुणाचल प्रदेश से लापता लड़के की जल्द वापसी होगी। चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) ने कहा है कि एक लड़का उसकी सीमा के भीतर मिला है।

■ **24 जनवरी**

- मुंबईः लता मंगेशकर अब भी आईसीयू में भर्ती।

- उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिये कांग्रेस ने अपने 30 स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी। भाजपा की तरह इस सूची में भी म.प्र. से एक भी नेता का नाम शामिल नहीं है।

- देश के विख्यात उद्योगपति मुकेश अंबानी ने ब्रिटेन में 10 करोड़ रुपये पाउंड यानी 10 अरब रुपये से ज्यादा का सोडियम खरीदकर दुनिया को हैरान कर दिया है।

■ **25 जनवरी**

- लंदनः ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन के खिलाफ कोरोना नियमों के उल्लंघन के आरोपों की ब्रिटिश पुलिस ने जाँच शुरू की।

-मनमोहन सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे आर.पी.एन सिंह कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गये।

- केन्द्र सरकार ने गणतंत्र दिवस की पूर्व

संध्या पर पद्म पुरस्कारों का ऐलान किया राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कुल 128 लोगों को सम्मानित करने का किया ऐलान।

■ 26 जनवरी

- राजस्थान के बारां में एक सप्ताह में फिर सेरेप घर में घुसकर लड़की को किडनेप कर 2किमी. दूर ले जाकर खेत में किया रेप।

- समाजवादी पार्टी के नेता फतेह बहादुर सिंह के बेटे पर लगा लड़की के किडनेप का आरोप।

-बाल्टी मोर में एक खाली घर का हिस्सा ढह गया हादसे में तीन फायर फाइटर्स की मौत एक घायल।

■ 27 जनवरी

- अरुणाचल प्रदेश के लापता युवक मिराम तरोन को चीन की सेना पीएलए ने भारत को सौंप दिया।

- पद्म श्री और अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित हॉकी खिलाड़ी चरणजीत सिंह का निधन हो गया। वह 92 साल के थे।

- पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी द्वारा भारत में असहिष्णुता और हिन्दू राष्ट्र प्रवृत्ति बढ़ने को लेकर दिये बयान पर विवाद गहरा गया।

■ 28 जनवरी

- पाक तस्करों से हेरोइन के 47 पैकेट 4एके - 47 व चीनी पिस्टल बरामद।

- 2022-23 का बजट पेश करने से पहले केन्द्र ने वेंकटरमन अनंत नागेश्वर को नया मुख्य आर्थिक सलाहकार नियुक्त किया।

- सुप्रीम कोट ने महाराष्ट्र में भाजपा के 12 विधायकों के निलंबन को असंवैधानिक और तर्कहीन करार दिया है।

■ 29 जनवरी

- मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने दिल्ली में कांग्रेस पाटी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की।

- भारत ने संकट ग्रस्त अफगानिस्तान को मानवीय सहायता के तहत तीन टन जीवन रक्षक दवाओं की चौथी खेप भेजी है।

- हर साल की तरह इस साल भी गणतंत्र दिवस समारोह के समापन की प्रक्रिया यानी बीटिंगरिट्रीट समारोह दिल्ली में संपन्न हुआ।

■ 30 जनवरी

- अमेरिका के ईस्ट कोस्ट में बर्फीला तूफान केनान तबाही मचा रहा है, तूफान से 7 करोड़ लोग आफत में पड़ गये।

- जम्मू कश्मीर में दो अलग-अलग मुठभेडों में लश्कर ऐ तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद के 5 आतंकी मारे गये।

-म्यांमार में सेना अपने खिलाफ उठने वाली किसी भी आवाज का दमन करने में जुटी पश्चिमी चिन प्रांत में कई गाँव जला दिये।

■ 31 जनवरी

- जबलपुरः वरिष्ठ अधिवक्ता व अतिरिक्त महाधिवक्ता आर.के.वर्मा ने अपने पद से इस्तीफा दिया।

-मिस यूएसए 2019 रहीं अमेरिकी मॉडल चेल्सी क्रिस्ट ने 60 मंजिला इमारात से कूद गई उनकी मौत हो गई।

- उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठतम न्यायाधीश न्यायमूर्ति यू यू ललित ने 2013 के यौन उत्पीड़न मामले में पत्रकार तरुण तेजपाल की याचिका पर सुनवाई से सोमवार को खुद को अलग कर लिया।

इसे भी जानिये

राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण तिथियाँ

1. सूरत काँग्रेस में फूट 1907
2. तिलक को राजद्रोह की सजा 1908
3. मार्ले मिन्टो सुधार 1909
4. ब्रिटिश साम्राज्य का दिल्ली दरबार 1911
5. प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1919
6. होमरूल लीग का निर्माण 1916
7. मुस्लिम लीग-काँग्रेस समझौता (लखनऊ पैक्ट) 1916
8. महात्मा गाँधी द्वारा चम्पारण में आंदोलन 1917
9. रॉलेट अधिनियम 1918
10. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड 1919
11. मोण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार 1919
12. खिलाफत आंदोलन 1920,
13. असहयोग आंदोलन 1920 से 1922 तक
14. एम.एन. राय द्वारा ताशकन्द में भारतीय साम्यवादी दल का गठन 1920
15. चौरा- चौरा काण्ड 1922
16. स्वराज पार्टी का परिषदों के चुनाव में हिस्सा लेना 1923
17. सी.आर दास की मृत्यु 1925
18. साइमन कमीशन की नियुक्ति 1927
19. बटलर समिति की नियुक्ति 1927
20. साइमन कमीशन का भारत आगमन, लाला लाजपतराय की मृत्यु 1928

दिशा बोध

पापकर्मों से भय

1. दुष्ट लोग भय मूर्खता से नहीं डरते, जिसे पाप कहते हैं; परन्तु भद्रजन उससे (पाप से) सदा दूर भागते हैं।
2. पाप से पाप उत्पन्न होता है, इसलिए आग से बढ़कर उससे (पाप से) डरना चाहिए।
3. कहते हैं कि सबसे बड़ी बुद्धिमानी यही है, कि 'शत्रु को भी हानि पहुँचाने से परहेज किया जाय।'
4. भूल से भी दूसरे के सर्वनाश का विचार न करो; क्योंकि न्याय उसके विनाश की युक्ति सोचता है, जो दूसरों के साथ बुराई करना चाहता है।
5. 'मैं गरीब हूँ'' - ऐसा कहकर किसी को पापकर्म में लिप्त नहीं होना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से वह और भी नीची दशा में पहुँच जायेगा।
6. जो मनुष्य आपत्तियों द्वारा विषाद में पड़ना नहीं चाहता, उसे दूसरों का अपकार करने से बचना चाहिए।
7. दूसरे प्रकार के सब शत्रुओं से बचने का उपाय हो सकता है, पर पापकर्मों का विनाश नहीं होता। विवेकी पुरुष उनका पीछा करके, उनको नष्ट किये बिना नहीं छोड़ते।
8. जिस प्रकार छाया मनुष्य को कभी नहीं छोड़ती, बल्कि जहाँ-जहाँ वह जाता है, उसके पीछे-पीछे लगी रहती है। बस, ठीक इसी प्रकार पाप कर्म पापी का पीछा करते हैं और अन्त में उसका सर्वनाश कर डालते हैं।
9. यदि किसी को अपनी आत्मा से प्रेम है, तो उसे पाप की और किंचित् भी न झुकना चाहिए।
10. उसे आपत्तियों में सदा सुरक्षित समझो, जो अनुचित कर्म करने के लिए सन्मार्ग को नहीं छोड़ता।

क्रमांक- 13 वरिष्ठ नागरिक

ढलती उम्र में आवश्यक है- वसीयत

क्या आपने अपनी वसीयत Will लिखी, लिखवाई या बनवाई है या अपनी मृत्यु के पश्चात् किसी को क्या देना है ? ऐसा कभी सोचा है।

यह एक ऐसा प्रश्न है जो प्रायः मनुष्य की आयु 50 वर्ष से ज्यादा और 60-70 वर्ष का जब हो जाता है तो उसको यह बात याद आती है। **सरकार द्वारा निर्धारित Will का स्वरूप लिख दिया है।** इस प्रकार पाठकगण इससे शिक्षा लेकर वर्तमान का विचार करें भविष्य की चिन्ता न करें। क्योंकि भविष्य की चिन्ता आपको दुःखी करेगी, परन्तु मैं यह नहीं कहता कि आप अपने लक्ष्य की ओर न बढ़ो या रूपया पैसा जेवर जायदाद आदि बनाने में मेहनत न करें। लेकिन बिना वजह आप को आने वाले समय में उलझना और हमारे बाद क्या होगा, किसको क्या मिलेगा, यह सोचना सर्वथा निराधार मानना चाहिये।

What is will ? why to make a will?

A will is a very secret and confidental document, with the basic aim of providing a ligal platform for distribution of ones assets to various members of the family after his demis. It is better that every person, generally after the age of 50 yers, makes a will. By doing this, a persons does a great service to his family and loved ones so that the future generations do not fight among themselves on the mode of succession or inheritance. A will may be made on a stamped paper or a plain paper. although is not necessary to register a will. However, **it is always better that the will is registered at the office of the sub-registrar.** If a person dies intestate, that is without making or writing a will, then his assests, both movable and immovable, will be divide amongst his legal heris, as per the provisions contained in the Hindu succession Act. those who do not fall under the Hindu Successions Act. are governed by their personal law or the indian Successions Act. when the person prepares a will, then enjoys the oppertunity of distributing his assets in the manner he considers appropriate and just. whether the distribution of the assets through a will is reasonable or not, it cannot be challenged by anyone, Even the legal heirs or the persons receiving the assets through a will cannot challenge the will if they find they are in receipt of assets much lower than what they would gave inherited, had there been no will, A will can be written in Hindi or in English or in any other language. The expenses for registration at the Registrar's office are very nominal, A will is a revocable document, It can be changed by the testator whenever he so desires. No matter how many times he make will in respect of a particular asset, it is his last will or the one that

has latest date, will prevail.

Advantage of Making will

1 The biggest advantage of preparation of a will lies in the mobility in distribution of the movable and immovable assets. As a result of this, a testator has all the power and authority of doing whatever he wants with his property. A tester can express his appreciation for relatives and legal heris in his will, Through a will it is also possible to reward a person, whether a relative or a non-relative for his sincerity, loyalty and affection.

2 Through a will. it is possible to allocate a particular property to one family members and ask that family member to pay a certain fixed amount per month towards pocket money, etc. to another family members. This concept is known as the concept of annual charge creating annual charge through the process of a will is legal.

Draft will

1 This is the last will of me...
son/daughter/wife of...
aged ....year, resident of.......................................

2 I hereby revoke all former wills made by me.

3 I am executing this last will and testament of mine voluntarily and without any compulsion or pressure from any source or person and in sound health and disposing state of mind.

4 I own the following movable and immovable properties, which are all my self-acquired, out of my own earning and income, without any assistance of any ancestral estate and have absolute power of disposal of the same.

(Give details of all the immovable properties- houses, plot, land, etc. and movable properties, including insurance Policies, Provident Fund, Deposits in bank, National Saving Certificates, Shares, debentures, etc. listing them seriatim)

5 I hereby bequeath all my movable and immovable as described above to my wife...................................... (or to my son).................... (or anyone else) fully and absolutely.

6 I also declare that whatever nominations have been made by me, whether for dues to me or my estate from provident fund, gratuity benefits of superannuation, pension and personal accident policy recoverable from.............. with whom I am presently employed post office saving bank accounts, cumulative time deposit accounts public provident fund life and accident insurance policies have been so done by me only for the sake of convenience and for the sole purpose of facilitating prompt collection of all amounts due to me without any intention of conferring any beneficial interest

upon wuch nominee/nominess and the that the person or persons so nominated by me has or have no right same and they shall hand over and deliver to legal heirs/beneficiaries all amounts collected by or paid to them. I declare and direct that all such assets, funds and properties as aforesaid, shall form part of may estate and shall be dealt with accordingly.

7 I give and bequeath all my furniture, fixtures, fittings, carpets, paintings, picture, drawing and other household goods, effects and thing and all other articles personal, domestic or household use or decoration, consumption lying in flat No. .... to my wife/son............................... absolutely.

8 I also bequeath all my money and other property movable and immovable whatsoever and whatsoever, not otherwise disposed of by this will to my wife............. (or son)................. or anyone else.

9 in witness whereof, I the said .... Have put my signature to each sheet of my this will, contained in this sheet and in the preceding one/two/three sheets of paper, in the day and the year mentioned, above, i.e. the................ day of................

(Signature of person making the will) (Testator)

Signed by the above-named signatory in our presence at the same time and each of us has in the presence of the signatory signed his name hereafter as the attesting witnesses.

1. Name
Son of
Residential Address
(Modification can be made where necessary)

Matters to be Nept in view while making the will

in order to be valid, a will must comply with the following conditions:

1 It must not have been obtained by fraud or coercion.

2 The will must be signed by the testator, i.e., one who is making will of the testator is not able to sign, he may place some mark such as the thumb impression, in the alternative, any person may sign at the request of testator on his behalf in his presence.

3 The will must be attested by two witnesses. Each witness must sign in the presence of the testator and give his residential address also.

The wording of the will should be clear:

The wording of the will should be clear and leave no ambiguity regarding property in the will.

Who can be a witness:

any person can be a witness . The witness need not know the contents of

the will- he is merely a witness to the signature. **A beneficiary under a will must not be witness.** The age of witness should be kept in mind. Hostile and greedy witness should be avoided.

Can a will be changed:

A will can be revoked or changed at any time by the testator by executing another will. It must be specially noted in the now will that all the previous wills are revoked. This intention must be made clear. All wills made before marriage become invalid after marriage. Hence a new will must be written after. marriage. In any case, a will must be periodically reviewed and **updated to reflect changing circumstances and preferences.**

Tho whom can one will one's assets:

There is nothing to prevent a person from leaving his property to a complete stranger, even to the exclusion of his own kith and kin.

One of the important circumstance which raise suspicion is where testator ignores his near relatives such as wife and children.

A person can make will of his own property only

What safeguards can one make against tempering of a will:

First option is for the testator to register the will with the registrar under the registration Act during his lifetime. The testator himself can appear before the registrar, and if the registrar records evidence of this fact, the will can easily be proved in court subsequently, if this is necessary. Secondly its contents should be kept secret and a copy can be kept in bank locker and in a closed envelope with a trusted friend.

Registration, however, is not necessary but highly desirable and prudent. Municipal corporation banks companies, Mutual funds generally ask for registered will, No stamp duty is required. for will, registration charge in sub registrar's office is only a small amount.

The will should be kept in a sage place and its location should be known.

What happens if there is no will:

If a person dies without making a will, the property goes by what is called intestate succession, This means that the law steps into the place of testator and depending on the community to which the deceased belonged, the property is divided between his relatives as defined by law.

Problem regarding: Nominee

The general assumption is that a nominee for national saving certificate (NSC), life policies, Fixed deposits, Mutual funds, provident fund is the legal heir for the proceeds for which he or she was nominated.

To remove any ambiguity, it is advisable that nominee in immovable and movable property and beneficiary in the will the property would not, as a

matter of course, go to the spouse as mistakenly believed. nomination is a process to facilitate smooth, easy and quick withdrawal of the deceased person's investment. However due to misinformation it is assumed that the nominee is also, by default, the beneficiary.

Where Property is in joint name

Some people avoid making a will because they are under the impression that if a property is in joint names on the death of the first named person, the survivor will automatically, as a matter of course, inherit the property by law. This is a, wrong notion.

Joint names have little meaning until and unless both of them have paid form their own resources for the purchases of property.

Even after such payment. the person ought to will his/her portion to the surviving spouse, Otherwise that portion of the property goes to legal heirs of person crating more problems for survivor. Assets can only be inherited by will, or if there is no will, by law of intestate succession. For mutation purposes, authorities like municipal corporation, DDA and Government Agencies insist for registered will.

Where A Name Is Noted as A beneficiary for provident funds, Gratuity life insurance policy:

It is also wrong to believe that because one has nominated one's wife or children as beneficiaries under an insurance policy. for one's provident fung or gratuity there is o need to make a will in respect of these amounts. A nominee under an insurance policy, Provident fund, and gratuity receives the money only on behalf of the legal heir as a trustee would. If the intention is that the nominee should inherit the money, it is best to provide for same clearly in the will. in the case of provident fund and gratuity also. it is best to receive as beneficiaries themselves.

C**aution:** Do not give away assets in your lifetime, remember your need to fend for yourself in old age.

Very Important: Will के अंत में अंतिम पेरा इस प्रकार अवश्य लिखना चाहिये।

अर्थात- मैं अपनी जिन्दगी में अपनी चल एवं अचल सम्पत्ति का खुद मालिक रहूँगा- मेरे वारिश मेरी चल अथवा अचल सम्पति के जिनका मैंने ऊपर अपनी Will में नाम लिखा है, वह केवल मेरी मृत्यु के बाद ही हकदार होंगे।

तहसीलदार के पास Will रजिस्टर करवाने के लिये इस समय वसियत करने वाले की 3 फोटो ली जाती है, एक आधार कार्ड (जो वापस मिलेगा) एक आधार कार्ड की फोटो कापी तथा गवाह का कोई भी पहचान पत्र तथा पहचान पत्र की फोटो ले जानी होती है।

Witness	Executant	Witness
गवाह	वसियत करने वाला	गवाह

कहानी

जेल की प्रार्थना

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

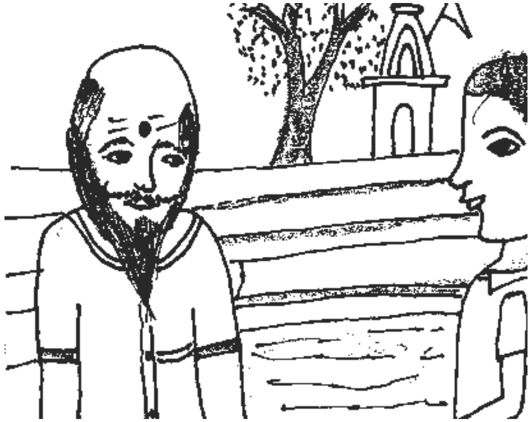

सुनार नदी की कलकल धार अविरल बह रही थी मेघ शून्य अम्बर से सूर्य उन्मुक्त निहार रहा था सुनार नदी गढ़ाकोटा की प्राणदायनी नदी मानी जाती है पावन नदी के घाट-घाट पर अमृत सलिला सुनार नदी बिना भेदभाव के जन जन की प्यास है कोई आकर इन घाटों पर बुजुकी बनाता था, तो कोई इन घाटों पर तर्पण करता था चारों तरफ धर्म की ध्वनि गूँजती रहती थी उन्हीं घाटों में एक कुरया घाट कहलाता था कुरया घाट पर विशाल पत्थरों का समूह था, उन पत्थरों पर कोई कपड़े धोता था कोई मुख प्रक्षालन करता था यादों में खोया मैं भी एक पत्थर पर बैठा था पलकों में आलस्य और नयनों उन्नीदापन बार-बार झोंका सा खा रहा था न गरमी न ठण्ड समशीतोष्ण वायु के प्रवाह का आनन्द ले रहा था तभी यादों के परदे उठ गये और आँखों के सामने वह दृश्य छा गया। जब मैं मात्र 6 वर्ष का था। पिताजी के साथ नहाने नदी पर आया था पिताजी अपने कपड़े धाने में मस्त थे और मैं एक बाल्टी को हाथों से पकड़कर डुबा रहा था और निकाल रहा था पीतल की चमचमाती सी उजली बाल्टी कब मुझे अपने साथ ले गई पता नहीं चला। कोई आया और अचानक बोला क्यों गुलजारी लाल तुम देख नहीं रहे हो पानी में बुलबुले क्यों उठ रहे हैं तब गुलजारी लाल ने अपनी गर्दन को घुमाया उनका लाडला सुमन नजर नहीं आया गुलजारी लाल ने बिना समय गवायें पानी में छलांग लगा दी और मुझे पानी से बाहर निकाला लिया और एक पत्थर पर उल्टा लिटा दिया मुँह और नाक से पानी निकलने लगा श्वॉस थमने से रुक गई और अविरल श्वॉस चलने लगी और पुनर्जीवन की घोषणा करते हुये गुलजारी लाल ने घर की ओर चल दिया हाथों में अपने बेटे को लेकर सीधे डॉ. शिखरचंद जैन की क्लीनिक पहुँच गये डॉ. शिखरचंद जी ने बड़ी तत्परता और प्राथमिकता के साथ मेरा उपचार करना प्रारंभ कर दिया और कहा जीजा जी चिंता मत करो अब सुमन खतरे से बाहर है इन शब्दों का अर्थ तो मैं उस समय नहीं समझ पाया परन्तु अब

समझ आया कि उस दिन जिन्दगी का नया दिन पाया था।

जब मैं अपनी स्मृतियों में खोया हुआ था तभी एक आवाज आई उस सुरीली ध्वनि में एक अद्भुत संमोहन था और चेतावनी भी थी।

जिसने रागद्वेष कामादिक जीते सब जग जान लिया।

सब जीवों को मोक्षमार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया।

इस ध्वनि ने मुझे अपनी तरफ आकर्षित किया गर्दन घुमाकर मैनं देखा तो एक लम्बा गोरा चेहरा उस चेहरे पर भी बड़ी लम्बी दाड़ी घनी मूँछे माथे पर गोल सूखा सा चंदन का तिलक हाथों में लयबद्ध कार्य करने की क्षमता तथा नगरपालिका गढ़ाकोटा के उपाध्यक्ष श्रीकृष्ण जी शर्मा अपने चुम्बकीय व्यक्तित्व के लिये गढ़ाकोटा में अपनी पहचान बनाये हुये थे वे आजाद हिन्द फौज के तथा नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के अनन्य भक्त सिपाही थे। देश की आजादी के बाद वर्षों बीत गये परन्तु उनके पास आजाद हिन्द फौज के शस्त्र-वस्त्र और बिगुल निशानी के तौर पर दीवालों पर टंगे हुये रहते थे। जिन्हें देखकर बच्चे प्रायः अपने मन में वीरता का भाव जगा लेते थे तथा एक श्रेष्ठ देशभक्त बनने का अपने में संकल्प ले लेते थे। हर तरफ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की राष्ट्र भावना को संचारित करने के लिये श्रीकृष्ण शर्मा का नाम पर्याप्त होता था संघ शाखा में वे नियमित तो नहीं आते थे परन्तु जब भी आते थे तो देशभक्ति के गीत नये-नये सुनाते थे। कभी वे सुनाते थे -

शपथ लेना तो सरल है,
पर निभाना ही कठिन है।
साधना का पथ कठिन है,
साधना का पथ कठिन है।
शलभ बन जलना सरल है,
स्नेह की जलती शिखा पर।
स्वयं को तिल-तिल जलाकर,
दीप बनना ही कठिन है।
साधना का पथ कठिन है,
साधना का पथ कठिन है।
तप तपस्या के सहारे,
इन्द्र पद पाना सरल है।
स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर,
मद भुलाना ही कठिन है
साधना का पथ कठिन है,
साधना का पथ कठिन है
है अचेतन जो युगों से,
लहर के अनुकूल बहते।
साथ बहना तो सरल है,
प्रतिकूल बहना ही कठिन है।
साधना का पथ कठिन है,
साधना का पथ कठिन है।
नियत की खाता रहा है,
ठोकरें मानव युगों से।
सरल है आँसू बहाना,
मुस्कुराना ही कठिन है।
साधना का पथ कठिन है,
साधना का पथ कठिन है।

इस गीत को अभिव्यक्ति शर्मा जी इतने सुंदर तरीके से करते थे कि हर स्वयं सेवक अपनी ली हुई शपथ को पूरी करने के लिये कटिबद्ध हो जाता था। श्रीकृष्ण शर्मा से एक बार किसी ने शाखा में पूछा कि युवा कौन होता है और कितनी उमर तक युवा की श्रेणी मानी जाये तो उनका जबाब होता था कि युवा होने का मतलब हौसला और लगन होता है और कुछ कर गुजरने की योजना होती है फिर चाहे

व्यक्ति कितनी ही उमर का क्यों न हो युवा ही माना जायेगा।

उन्होंने पूरी मेरी भावना कपड़े धोते-धोते पढ़ ली थी जब उनकी मेरी भावना पूरी हो गयी। हुई तब मैने पूछा दादाजी आप तो ब्राह्मण हैं- हाँ बेटा मैं पक्का ब्राह्मण हूँ तो मैने कहा फिर आप मेरी भावना क्यों पढ़ते हैं ये मेरी भावना तो जैनों की है। मेरा इतना कहते ही शर्मा जी बड़ी शांति से बोले बेटा यह रचना न जैन की है न अजैन की है यह मेरी भावना तो हर मानव की है। किसी को भी अच्छा इंसान बनाने के लिये उत्तम प्रेरणा देती है, इसके एक-एक शब्द में मानवता का आधार सुनिश्चित किया गया है इसके लिये कोई भी व्यक्ति अस्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि मानवता के लिये चार भावनाओं की आवश्यकता होती है- सर्वप्रथम हमें सभी प्राणियों के प्रति मैत्री का भाव प्रगट करना चाहिये क्योंकि किसी से बैर नहीं रखना ही मैत्री कहलाती है। क्योंकि मैत्री की भावना ही व्यक्ति को महान बना देती है, जिसके पास बैर विरोध को भूलकर मैत्री भाव पैदा करने का जज्बात नहीं होता है वह कभी भी इंसानियत के रूप को आचरण नहीं उतार सकता है अतः हम सभी को मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे की भावना को आत्मसात करना चाहिये मैत्री भाव रखना किसी भी धर्म से संबध नहीं रखता है और न ही इसे किसी धर्म विशेष से जोड़ा जा सकता है अतः हम कह सकते हैं कि मैत्री भाव का संबध मानव धर्म से है।

प्रेम और करुणा इंसानियत की सबसे बड़ी निशानी है बेटा प्रेम और अहं दो एक साथ नहीं रह सकते हैं जहाँ प्रेम होगा वहाँ अहंकार नहीं हो सकता,अहंकारी के हृदय में भगवान नहीं होता है। प्रेम की भक्ति है कोई शरीर से प्रेम करता है तो कोई आत्मा और परमात्मा से प्रेम करता है बेटा जिसे आत्मा से प्रेम होता है वह गुणों का अभिवादन करता है पूज्य पुरुषों के गुणों के प्रति प्रेम करने को ही हमारे भारतीय धर्म दर्शनों में भक्ति कहा गया है। मेरी भावना में बड़ा सुंदर सा छन्द लिखा गया है जिसमें कहा गया है गुणीजनों को देख हृदय में मेरे प्रेम उमड़ आवें बने जहाँ तक उनकी सेवा करके यह मन सुख पावे। इन पंक्तियों में देखो कितनी गहराई छुपी हुई है तथा गुणवानों के प्रति कितना आदरभाव प्रगट करने का उपदेश दिया गया है। जिस समाज में गुणीजनों का सम्मान किया जाता है वही समाज आदर्श समाज कहलाता है।

श्री शर्मा जी मेरी ओर अपनी गम्भीर दृष्टि डालते हुये कहा-बेटा तुम्हारा नाम क्या हैं मैंने कहा-सुमन, वे बड़े अट्टाहास के साथ कहने लगे ये तुम्हारा नाम किसने रखा है मैंने कहा कि ये नाम मेरे दादाजी ने रखा है, तो उन्होंने पूछा हमारे दादाजी का नाम क्या है मैंने कहा गुलजारी लाल। अरे समझ गया समझ गया नन्दा जी के बच्चे हो उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुये कहा-तुम तो यार कभी-कभी शाखा में दिखते हो मैंने कहा हाँ दादाजी मैं प्रतिदिन नियमित शाखा में जाता हूँ क्योंकि मुझे मुख्य शिक्षक का दायित्व सौपा गया है।

वाह बेटा वाह खूब अच्छा काम करो धर्म से बड़ा राष्ट्र होता है राष्ट्र की सेवा करने वाला धर्म की रक्षा अपने आप कर लेता है।

जो राष्ट्र का महत्त्व नहीं समझता है वह तो मात्र लकीर का फकीर बनकर धर्म में लगा रहता है और वह आपस में लड़वाकर दंगा फसाद करता रहता है, इसलिये जाति पंथ और संप्रदाय की छोटी मानसिकता में कभी धर्म होने वाला नहीं है, क्योंकि धर्म वही समझ सकता है जो सब मानव जाति के साथ नीच ऊँच का व्यवहार न करे, घृणा अपराध से करे अपराधी से नहीं क्योंकि मेरी भावना में लिखा है-

दुर्जन क्रूर कुमार्गरतों पर क्षोभ नहीं मुझको आवे, साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर ऐसी परिणति हो जावे।

इन दो पंक्तियों के माध्यम से एक बहुत बड़ा संदेश दिया गया है जो मानव जाति के उत्थान के लिये काफी है मेरी भावना में बेटा एक और बड़ी बात है वह है कि न्याय पथ पर अडिग रहना। बहुत सारे लोग न्यायपथ को इसलिये छोड़ देते हैं कि कोई मुझे बुरा कहेगा यह अज्ञात भय हर व्यक्ति को न्याय पथ से विचलित कर देता है तथा अच्छे बनने का लोभ और अच्छे कहलाने की लालसा व्यक्ति को न्याय पथ में स्थिर नहीं रहने देती है एवं जब व्यक्ति मृत्यु से डर जाता है अथवा धन के लालच में पड़कर अपनी समस्त निष्ठाओं को खो देता है। भय और लालच सत्य और न्याय के पथ से दूर खड़ा कर देते हैं। अतः हमें किसी से प्रीति और किसी से भीति किये बिना हमे न्यायमार्ग पर सतत् आगे बढ़ते जाना चाहिये। श्री कृष्ण शर्मा इतनी बात कहकर पुनः अपने कपड़े धोने में लग गये परन्तु मेरे अन्दर बैचेनी बढ़ती जा रही थी नदी की पानी की तरंगों की तरह बार-बार मन में प्रश्न उठते चले जा रहे थे मैं कभी खांसकर उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाह रहा था परन्तु वे तो अपने कपड़े धोने में मस्त रहे। एक बार पलटकर फिर उन्होने मेरी ओर देखा और बोले तुम ऐसे गुमसुम क्यों बैठे हो। 10 बजने वाले हैं तुम्हें स्कूल नहीं जाना क्या ? मैने कहा स्कूल तो जाऊँगा परन्तु मेरे स्कूल में ये बातें नहीं पढ़ाई जायेंगी जो आप बता रहे हैं बस मैं आपसे आखरी बात पूछना चाहता हूँ, कि आपको मेरी भावना में कौन सी बात सबसे अच्छी लगी जिसे अपने अपने जीवन में उतारा हो उन्होंने कहा **होकर सुख में मग्न न फूलें दुख में कभी न घबरावें, पर्वत नदी श्मशान भयानक अटवी से नहीं भय खावें- ये मुझे सबसे अच्छी लाइन लगती है एक और पंक्ति मुझे बड़ी प्यारी बनकर सब युगवीर हृदय से लगती है। देश उन्नतिरत रहा करे।** हर आदमी को अच्छे कर्म करके युगवीर बनना चाहिये तथा अपने देश की उन्नति में निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिये आज लोग अपनी-अपनी उन्नति में लगे हुये हैं पर राष्ट्र के बारे में कम ही सोचते हैं जबकि देश का भाग्य ही अपना भाग्य होता है। जिनने देश का भाग्य नहीं समझा वे अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बनाने के लिये राष्ट्र की प्रतिष्ठा को एक ताक में रख देते हैं ऐसे लोग राष्ट्र कण्टक होते हैं। इतनी सब बात करने के उपरांत शर्मा जी ने अपने धुले कपड़ों को हाथ पर लटकाया और पानी की भरी बाल्टी हाथ में लेकर घाट की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे मैं भी उनकी तरफ एक-टक देखता रहा तभी उन्होंने पीछे मुड़कर कहा बेटा तुम आज से इस मेरी भावना का रोज पाठ करना क्योंकि यह मेरी भावना हमारे जेल जीवन में प्रार्थना के रूप में सामूहिक गायी जाती थी। मैंने कहा हाँ दादी जी मैं रोज मेरी भावना का पाठ करूँगा।

कविता

बड़े जतन से, बड़े यतन से

रचयिताः सुभाषचंद्र सरल, अशोकनगर

जड़काया मैं चलते-चलते थककर चूर
पर उत्साहित, रत्नत्रय के पथ को पाने
संयम पथ में , आत्मज्ञान के पुष्प पिरोकर
उत्साहित हूँ मैं अपनाने
बड़े जतन से, बड़े यतन से

कषाय भाव को लाद पीठ पर
ममत्व भाव को, सिर पर रखकर
मेरा आतम घायल होकर
कभी भागता, कभी उलझता
कभी जकड़कर, कभी उलझता
कभी जकड़कर, कभी निकलकर
चल देता है, सम्यक पथ पर
सच्चे सुख की लिये लालसा
बड़े जतन से, बड़े यतन से।

मैं समझ रहा हूँ बिन कषाय निर्मूलन
नहीं है सम्भव मुक्ति पाना
छदम ज्ञान से, बिन रत्नत्रय
नहीं हैं सम्भव, शुद्धत्व को पाना
मैं समझ रहा हूँ व्यवहार मार्ग ही
निश्चय पथ तक, इस आतम को पहुँचाता है

फिर यही आत्मा रत्नत्रयी होकर
केवल्य प्राप्त कर सिद्धत्व पने को पाता है
नय दोनों ही, लक्ष्य प्राप्ति में, सरल साध्य है
इनके बिन, नहीं कोई साधना,
कोई रास्ता, कोई उपाय है
अब नित-नित बढ़ना, सम्यक पथ पर
बड़े जतन से, बड़े यतन से

भ्रमित होकर अब तक मैंने
निज आत्म को बहुत छला है
ग्रहस्थ पन में, शुद्धत्म पने का,
मन मंदिर में ढोंग पला है
सम्भव होता तब, अरिहन्त प्रभो क्यों
सम्यक पावन पथ अपनाते
सम्भव होता तब, महामना तीर्थंकर प्रभो क्यों
राजपाट त्यागकर, मुनिचर्या को अपनाते
नहीं है सम्भव, बिन अपरिग्रह
बिन त्याग तपस्या, रत्नत्रय पाना
नहीं है सम्भव, बिन रत्नत्रय
मुक्ति वधु से व्याह रचना
अब चलना मुझको को सम्यक पथ पर
बड़े जतन से, बड़े यतन से।

मदुरै में 8000 का जनसंहार

टी लाजपथि राय

वैसे तो मदुरै में 8000 जैनियों को सूली पर चढ़ाए जाने को लेकर इतिहासकारों के विभिन्न मत हैं, लेकिन इस बात के पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं कि मदुरै में इस तरह का भयावह नरसंहार हुआ था। समनाथम जिसे पहले समणर रत्तम या जैनों का बलिदान के नाम से जाना जाता था मदुरै से लगभग छह किमी दूरी पर स्थित है। यहाँ बबूल की झाड़ियों और कांटों के बीच होते हुये एक घुमावदार रास्ता है जो मयंडी मन्दिर तक जाता है। यह स्थान सुनसान जगह पर स्थित है और यहाँ का वातावरण डरावना है। यहाँ 10 फुट के त्रिशूल और पत्थर के खम्भों पर लटकी हुई घंटी के अलावा ऐसा कुछ भी नहीं है कि जिससे यह पता चले कि यहाँ कोई मन्दिर भी है।

ग्रामीण और स्थानीय लोग इस जगह के इतिहास के बारे में बहुत कुछ जानते हैं । वे इस जगह का वर्णन समणर रत्तम जैनों का बलिदान के रूप में करते हैं। उनके अनुसार यहाँ जैनों और तिरुनावुकरसर के बीच एक-दूसरे को श्रेष्ठ साबित करने के लिये जल और अग्नि की साक्षी में वाद-विवाद हुआ था जिसमें जैनों को पराजय का सामना करना पड़ा था। इसके बाद जैनों को बुरी तरह प्रताड़ित किया गया और उन्हें जबरन धर्म परिवर्तन करने के लिये बाध्य किया गया। जिन लोगों ने धर्म परिवर्तन नहीं किया उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। जिस स्थान पर यह घटना हुई थी उसे वर्तमान में समनाथम में समणर मेदु कहा जाता है।

जैनों को बलपूर्वक सूली पर चढ़ाने के लिये ले जाया गया और उन्हें लकड़ी के डंडे पर लोहे की धारदार तीलियों के ऊपर बैठा दिया गया और भूख, प्यास और दर्द से कराहते हुये उन्हें मरने के लिये छोड़ दिया गया। जो जैन तथाकथित पवित्र भस्म को माथे पर लगाकर हिन्दू बनने के लिये सहमत हो गये उन्हें जीवित छोड़ दिया गया था। मीनाक्षी अम्मन मंदिर और पुदुकोट्टर में अवुदयार कोइल में उकेरे गये भित्तिचित्रों में भी इस भयावह घटना का वर्णन है। पेरियापुराणम में जैनों पर किये गये इस अत्याचार का वर्णन है और कई नयनारों ने जैनों पर अत्याचार करके ही अपनी पहचान बनाई थी।

करूर जिले में, वेंचमा कूडलूर एक गाँव है, जिसका नाम एक प्रसिद्ध जैन व्यक्ति वंचन के नाम पर रखा गया था। वह इस नरसंहार से बच गये थे और किसी तरह करूर और वेंचमा कुडलूर पहुँच गये। तेवतन काड़पीतु ने 3 जैनों, वंचन, क्रोतन और नीलन का वर्णन किया है, जो मदुरै में जैनों पर हुये अत्याचार से बच गये थे और बाद में वेंचमा कूडलूर आकर बस गये।

मदुरै के चिंतामणि के प्रसिद्ध मन्दिर में उकेरे गये दृश्य, जिस स्थान पर जैनों को सूली पर चढ़ाया गया था वहाँ से यह मन्दिर बहुत पास है

बीसवी सदी तक मदुरै के मीनाक्षी मन्दिर में एक उत्सव मनाया जाता था जिसमें एक जैन के पुतले को दीवार पर बने भित्तिचित्रों से लगाकर उस घटना की खुशी मनाई जाती थी। श्री पी.टी. राजन जिन्होंने तमिलनाडु में तैयप्पा पन्थ के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, ने इस उत्सव का विरोध किया था जिसके फलस्वरूप इस पर रोक लगाई गयी।

रामनाथम जहाँ जैनों को सूली पर चढ़ाया गया था उसे **कालुवदियन मन्दिर** कहा जाता है। यहाँ सूली पर चढ़ाये गये जैनों की प्रतिकृति की एक देवता के रूप में पूजा की जाती है। यह प्रतिकृति लगभग 10 फीट की है जो सागौन से बनी है इसका सिरा पूरी तरह से लोहे का बना है।

इतिहासकार के.ए. नीलकान्त शास्त्री ने अपनी पुस्तक दक्षिण भारत का इतिहास में 7 या 8वीं शताब्दी के दौरान तमिलनाडु में जैनों पर किये गये इस अत्याचार को एक ऐतिहासिक घटना के रूप में वर्णित किया है। हालांकि उन्होंने इस घटना को एक कहानी के तौर पर वर्णित किया है। उन्होंने उल्लेख किया है कि जब मदुरै में जैनधर्म का प्रभाव था तब पाण्ड्य वंश की महारानी, जो कि चोल देश की राजकुमारी और कट्टर शैव थी। वह अपने राज्य में जैनों को बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती थी। इसलिये, उसने एक षड्यन्त्र के तहत पाण्ड्य साम्राज्य के एक मन्त्री कुलचिराय के साथ मिलकर सम्बनदर नाम के एक हिन्दू सन्त को पाण्ड्य साम्राज्य से जैनों का अस्तित्व समाप्त करने को भेजा। ज्ञान सम्बन्दर ने जैनों को वाद-विवाद में पराजित किया और कहा जाता है कि अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये दो परीक्षाएँ की गई और हारने वाले पक्ष के लिये धर्मान्तरण करने या सूली पर चढ़ने की शर्त रखी गयी। प्रचलित मान्यता के अनुसार, जैनों का धार्मिक ग्रन्थ अग्नि और जल की परीक्षा की शर्तों पर खरे नहीं उतरे, जबकि ज्ञान सम्बन्दर के लिये गये ग्रंथ आग में जले नहीं और पानी के बहाव का भी कोई असर नहीं पड़ा।

परीक्षा की शर्तों में ग्रन्थ की विषयवस्तु को नहीं बल्कि ग्रंथ के बाहरी गुणों को शामिल किया गया था। वाद-विवाद में हार के बाद 8,000 जैनों को या तो धर्मसंकट का सामना करना पड़ा या उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया। मदुरै के मीनाक्षी मन्दिर मनाया जाने वाला उत्सव इस भयावह घटना की याद दिलाता है।

इतिहास, तमिल साहित्य और वर्तमान में प्रचलित परम्परायें जैन को सूली पर चढ़ाए जाने की घटना की सच्चाई की पुष्टि करती हैं। सूली को तमिल में कलुमरम कहा जाता है और कई सम्प्रदाय सूली को अपने आराध्य देवता के रूप में पूजते हैं और आज भी अपने उपनाम के रूप में कलु शब्द जोड़ते हैं। वैदिक सम्प्रदाय कई जैन सिद्धांतों को वेदों के विरुद्ध मानता था और इस कारण वैदिक हिन्दुओं और जैनों में मतभेद खड़े हो गये थे।

हेल्मुथ वॉन ग्लेसनैप की पुस्तक जैनिज्म अ इण्डियन रिलीजन ऑफ साल्वेशन (जैन धर्म- मोक्षमार्ग की सही विवक्षा करने वाला एक भारतीय धार्मिक सम्प्रदाय) में उन घटनाओं का वर्णन किया गया है जब रामानुजन (1050-1137 ईस्वी) को होयसल साम्राज्य में राजा पिट्टीदेव का संरक्षण प्राप्त था और उसने धर्मान्तरण के लिये तैयार नहीं होने पर जैनों को तेल की घानियों में पेलने का आदेश दिया था। ग्लेसनैप ने अपनी पुस्तक में 8000 लोगों को सूली पर चढ़ाये जाने का भी वर्णन किया है जो हिन्दू धर्म को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। अपनी पुस्तक के लिये उन्होंने बी.ए. स्मिथ की पुस्तक अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया (भारत का प्रारम्भिक इतिहास) और विलियम टेलर की पुस्तक ओरिएंटल हिस्टोरिकल मैनुस्क्रिप्टस (पूर्वी ऐशिया की ऐतिहासिक पाण्डुलिपियाँ) से संदर्भ लिये हैं, जिनमें हिन्दुओं और जैनों के बीच हुये

ऐतिहासिक वाद-विवाद के क्षेत्र मदुरै के स्थलपुराण का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

श्री के.वी. सुब्रमण्यम अय्यर के अनुसार राजा कून पाण्डियन (कूबड़ रोगी) जो कि पहले जैन धर्म को मानता था, को बहुत तीव्रता से बुखार हुआ जैन सन्त राजा का उपचार नहीं कर पा रहे थे। अन्त में सम्बन्दर जो कि कट्टर शैव ब्राह्मण था, को रानी और मंत्री ने राजा के लिये बुलाया था। वे दोनों भी शैव पंथ कट्टर समर्थक थे। सम्बन्दर और जैन सन्तों ने राजा के शरीर को दो भागों में विभाजित किया। आधे भाग का उपचार सम्बन्दर ने किया और उतना शरीर ठीक हो गया, जबकि शेष शरीर जिसका उपचार जैन संत कर रहे थे, ठीक नहीं हुआ।

जैन संतों ने अपनी शिखाओं की विशेषताओं को सबके सामने श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिये सहमति व्यक्ति की और सम्बन्दर ने इसके लिये अग्नि के माध्यम से परीक्षा करने की शर्त रखी। जैनधर्म और दर्शन पर आधारित ताड़ के पतों के ग्रंथों को आग में डाला गया, लेकिन जलकर राख हो गयीं। हालाँकि सम्बन्दर की लिखी गयी पुस्तकों को आग में डालने पर कुछ नहीं हुआ। इसी तरह बहते हुये पानी में ग्रन्थों को डालने पर जैन ग्रंथ वैगई नदी में डूब गये, जबकि सम्मंदर के ग्रंथ के बहाव में भी तैरते रहे।

ऐसा कहा जाता है कि वाद-विवाद के दौरान यह सहमति बनी थी कि जीतने वाला पक्ष हारने वाले पक्ष का स्वामी बन जायेगा। सम्बन्दर ने घोषणा करते हुये कहा कि वही जैन यहाँ से जीवित लौटकर जायेगा जो हिन्दू धर्म को अंगीकार करेगा। यह धर्मांतरण इतनी बड़ी संख्या में था कि धर्म परिवर्तन के लिये उपयोग की जाने वाली पवित्र भस्म भी शेष नहीं बची थी।

जो जैन अपनी आस्था पर अडिग थे उन्हें सूली पर त्रिशूल पर चढ़ा दिया गया था। इस बात से कोई भी अपरिचित नहीं है कि महाभारत काल के दौरान में माण्डव्य ऋषि को चोरी के झूठे आरोप में सूली पर चढ़ा दिया गया था। इसके बाद वैष्णवों के गुरू रामानुज के बारे में भी यह कहा जाता है कि उन्होंने भी मैसूर राज्य में अन्य धर्मावलम्बियों को सूली पर चढ़ाने का आदेश दिया था।

मदुरै की मीनाक्षी अम्मन मन्दिर में मनाये जाने वाले बारह में से पाँच त्योहारों में सम्बन्दर के कथानक में उल्लेखित घटनाओं का चित्रण किया जाता है। इन आयोजनों के दौरान जिन्हें सूली उत्सव के रूप में जाना जाता है, सूली पर चढ़े हुये जैन के प्रतीक चित्र के जुलूस की झाँकी निकाली जाती है। एक परम्परा के अनुसार शोलावन्दन के पास मेल किलावु गाँवों का यह नाम इसलिये रखा गया है क्योंकि सूली के लिये उपयोग की गयी सामग्री को यही से मदुैरे ले जाया गया था। एडगर थर्स्टन ने एनालेस डू मुसी गीमेट, पेरिस में, ए.ग्यूरिनोर की पुस्तक ऐसे डी बिब्लियोग्राफिक जैन को पढ़ने का भी सुझाव दिया था।

वर्तमान में विद्वानों मो यह जानकार हैरानी है कि मंदिर के व्यवस्थापकों ने मीनाक्षी अम्मन मंदिर के स्वर्ण कमल तालाब के मण्डपम की दीवार पर जैनियों पर किये गये अत्याचारों को दर्शाने वाले भित्तिचित्रों के रूप में उकेरे गये इतिहास के महत्वपूर्ण साक्ष्यों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है।(49)। अब इन चित्रों को फिर से पूर्व रूप देने के लिये कुछ प्रयास किये जा रहे हैं।

बुंदेलखंड के पुरावैभव में नवागढ़ का पुरातात्विक वैशिष्ट्य- एक परिचय

❊ श्रीमती अर्पिता रंजन, नई दिल्ली ❊

नवागढ़ का प्राचीन नाम नंदपुर है जो कि नावई-ग्राम, तहसील मेहरौनी जिला-ललितपुर में आता है, यह जैनधर्म का प्रसिद्ध अतिशयकारी तीर्थ क्षेत्र है। यह मूख्यतः 18वें तीर्थंकर अरहनाथ भगवान के लिये विख्यात है। इस पुरास्थल की खोज स्व.पं. गुलाबचंद पुष्प ने की थी। इस महत्त्वपूर्ण खोज के पश्चात् ही बुंदेलखण्ड के इतिहास में इस पुरावैभव की विलक्षणता को प्राप्त किया जा सका हैं।

नवागढ़ से जो मूर्तियाँ प्राप्त हुई है उनमें आदिनाथ, महावीर, नेमिनाथ, अरहनाथ आदि प्रसिद्ध है। साथ ही उपाध्याय की भी खण्डित मूर्तियाँ यहाँ प्राप्त हुई हैं।

नवागढ़ में मूर्तियों के साथ-साथ पुराषाणकालीन 2 लाख से 5 लाख वर्ष पूर्व तक के प्राचीन पुराऐतिहासिक औजार, प्रागैतिहासिक उपकरण, शैलोत्कीर्ण प्राकृतिक गुहा संरचनाएँ संताराधना हेतु शैल गुफा, शैलचित्र युक्त शैलाश्रय, प्राकृतिक पहाड़ियाँ, पेट्रोलिक कपमार्क, शैलोत्कीर्ण मुद्रा में प्राप्त कायोत्सर्ग प्रतिमा, शैलोत्कीर्ण संरचनाएँ, धातु, काष्ठ, अन्य पाषणिक उपकरण, विखण्डित शिला में मुकुट सहित अंलकृत प्राचीन राजा रानियों के धड़/शीर्ष आदि अत्यंत गौरवशाली उदाहरण हैं। नवागढ़ के पुरासम्पदा के लिये यहाँ के मूर्ति वैशिष्ट्य में उस काल की कला, स्थापत्य एवं मूर्तिकला का हीं निदर्शन नहीं करते अपितु अभिलेखों के माध्य से सभी नवागढ़ के अतीत पर कालानुक्रम प्रकाश भी डालते हैं। पार्श्वनाथ भगवान की पद्मासन युक्त सांगोपांग प्रतिमा जो कि खण्डित है प्राप्त हुई। पूर्व में यह प्रतिमा-कुएँ के पाट रूप में उपयोग की जाती थी। जिसे कालांतर में संग्रहालय में रखा गया है। इसी प्रकार अन्य मूर्ति सातवीं शती की प्रतिहार कालीन ऋषभनाथ की भी प्राप्त हुई।

मूलनायक का वैशिष्ट्य- मूलनायक अरहनाथ का गंभीर, नैत्राकृति, नसिका, ओष्ठ, लम्बकर्ण, वृक्षस्थल, श्रीवत्स के साथ मानवाकर उदराबलि, पेडू, सुडोल जंघा, अत्यंत विलक्षण है जिसका शिल्प सभी को आकर्षित करता है।

यहाँ पर पार्श्वनाथ की एक और मूर्ति जो सर्प के कुण्डली नुमा आसन पर विराजमान है। इस मूर्ति के दोनों और दो-दो चंवरधारी हैं तथा नीचे की ओर धरणेन्द्र पद्मावती है। जो चंवर धारित हैं। इसी प्रकार एक प्रतिमा में चार चंवरधारी अन्यमूर्ति में दिखायी नहीं देते हैं। इसी प्रकार, अन्य पार्श्वनाथ बिम्ब के नीचे यक्ष रूप में गोमेध एवं यक्षिणी अम्बिका को देता जा सकता है। जो कि नेमिनाथ के भी यक्ष-यक्षी हैं। अन्य प्रतिमाओं के वैशिष्ट्य में मानस्तंभ का स्थान सर्वोपरि है - इसमें प्रायः चारों ओर तीर्थंकर बिम्ब होते हैं। परन्तु यहाँ से प्राप्त चारों मानस्तंभों में तीन और तीर्थंकर एवं एक ओर उपाध्याय बिम्ब अंकित है। इस खण्डित उपाध्याय बिम्ब में पादपीठ में

चिन्ह के रूप में मयूर पिच्छी का अंकन है जो अन्य कहीं दृष्टव्य नहीं है। यहाँ कुमार अकलंक निकलंक का प्रमाण एक ही फलक पर उत्कीर्णित दिखायी देता है। अग्रज के हाथ में लम्ब शास्त्र एवं कलम है। नवागढ़ संगृहीत 9 उपाध्याय बिम्ब यहाँ गुरुकुल परम्परा के साक्ष्य हैं। कुछ स्तंभों में संवतों का भी अभिलेखीय प्रमाण प्राप्त होता है।

नवागढ़ से प्राप्त धातु एवं काष्ठ पाषाण उपकरण विविद्यायुक्त हैं। नवागढ़ का क्षेत्र आग्नेय चट्टान ग्रेनाईट की पहाड़ियों से आवृत्त है। यहाँ पर ग्रेनाईट की एक छोटी चट्टान वाली लघु पहाड़ी है जो कि पश्चिम से 1.5 किमी. दूरी पर अवस्थित है जिसे सिद्धों की टोरिया कहते हैं। यहॉ पर ग्रेनाईट का बड़ी चट्टान है जो कि दो भागों में विखण्डित है। यह क्षेत्र ओखलीनुमा आकृति क्रस्टल से युक्त है जो गोलाकार है। इस चट्टान की ऊँचाई 8.5 मीटर तथा चौडाई 3.5 मीटर तथा लंबाई 3.5 मीटर है। चट्टान की क्रस्टल की आकृति 12 एम-एम से 0.4 एम-एम तक है। कपमार्क की आकृति 60×69×86 एम-एम है। यहाँ प्राप्त शैलचित्रों में जैन पहाड़ी का नाम प्रमुख है। यह पश्चिम से 3 किमी. की दूरी पर है। यह पांच पहाड़ियों से अटा एक ग्रेनाईट बोल्डर है यही पर एक शैलचित्र से युक्त शैलाश्रय है। जिसकी लंबाई, चौडाई,ऊँचाई 3.5मी. × 2.3 मी.-एवं × 1.55 मी. है। यह शैलाश्रय कच्छप के आकार का प्रतीत होता हैं। जिसके कारण इसे कच्छप शिला भी कहते है। यहाँ पर ज्यामितिय आकार के संयुक्ताकृति वाले जानवरों के चित्र प्राप्त होते हैं जो कि माइक्रोलिथिक एवं मिजोलिथिक काल के प्रतीत होते है। यहीं पर कैल्शियम कार्बोनेट से युक्त एक मोटी परत वाली लिखावट प्राप्त होती है। यहाँ से प्राप्त संरचना में जानवरों की आकृति से युक्त अवशेषों में शरीर पर उपस्थित अंलकृति सजावट आदि परिलक्षित होते है। जो रक्तिम वर्ण में है। यहीं पर साधना शैलाश्रय में कायोत्सर्ग मुद्रा में एक जैन तीर्थंकर की आकृति हैं। जो कि 59 सेमी. ऊँची, 23 सेमी. चौड़ी है। यह अंधेरी गुफा के अंदर है। यहाँ से प्राप्त हैन्डक्स एवं चेट गाँव से 500 मी. की दूरी अवस्थित है। सपौन टोरिया में भी कई पाषाण औजार की मिले हैं। जो कि कालगत विशेषताओं पर प्रकाश डालते हैं।

नवागढ़ (नंदपुर) नावई जिला ललितपुर, पत्र-पत्रिकाओं के आलोक में।

1. नवागढ़एक महत्त्वपूर्ण मध्ययुगीन जैन तीर्थ- पं. नीरज जैन, सतना- अनेकांत अंक (फरवरी 1963)
2. नवागढ़ क्षेत्र का पुरातात्विक वैभव- पं. नीरज जैन, सतना- सन्मति संदेश अंक (मार्च 1971)
3. बुन्देलखंड के मोहनजोदड़ो एवं लोथल के रूप में उभरा नवागढ़- सुधीर जैन, राइजिंग बुन्देलखण्ड नवंबर 2014।
4. बुन्देलखण्ड का नवोदित प्रमुख तीर्थ नवागढ़- डॉ. कस्तूरचंद सुमन, दमोह गोलापूर्व जैन पत्रिका अंक (मई-जून 2013)
5. नवागढ़ के बीहड़ में शैलाश्रय और प्रागैतिहासिक शैलचित्र- डॉ. स्नेहरानी जैन सागर, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार (अप्रैल 2015)
6. संतों की पुरातन साधना स्थली नवागढ़- डॉ. भागचंद्र भागेन्दु दमोह- राजस्थान जैन सभा, स्मारिका 2015

7. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नावई, नवागढ़ नंदपुर- डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी, टीकमगढ़ संस्कार सागर अंक (जून 2015)
8. दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़- श्री श्रेयांश जैन, ककरवाहा, जैन संदेश अंक (जुलाई 2015)
9. प्राचीन जैन तीर्थ नंदपुर- शिलालेखों के दर्पण में- श्री हरिविष्णु अवस्थी, टीकमगढ़ संस्कार-सागर अंक (मार्च 2016)
10. श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक मानस्तंभ प्रतिष्ठामहोत्सव- श्री हंसकुमार जैन मेरठ, सराक सोपान अंक (मार्च 2016)
11. नवागढ़ में मिले हजारों वर्ष प्राचीन शैलाश्रय एवं शिल्प- श्री राजीव जैन शोधार्थी, संस्कार सागर अंक (अगस्त 2016)
12. ललितपुर जनपद के जैन तीर्थक्षेत्र नवागढ़ (नावई) में मिले पाषाण युग के साक्ष्य- डॉ. सुनील संचय ललितपुर सराक सोपान अंक (दिसम्बर 2016)
13. एक हजार वर्ष प्राचीन मूर्तियाँ मिली खुदाई में- डॉ. सुनील संचय, ललितपुर जैन गजट अंक सितम्बर 2016
14. ललितपुर जनपद के जैन तीर्थक्षेत्र नवागढ़ (नावई) में मिलें पाषाण युग के साक्ष्य- डॉ. सुनील संचय, ललितपुर संस्कार सागर (दिसम्बर 2016)
15. नवागढ़ क्षेत्र में मिले दस हजार वर्ष पुराने अवशेष- श्री नवनीत जैन मेरठ, सम्मेदाचल अंक (नवम्बर 2016)
16. नवागढ़ में मिलें मध्य पाषाण युग के अवशेष-श्री शरद जैन दिल्ली सांध्य- महालक्ष्मी दिल्ली, नवम्बर 2016
17. जैन तीर्थक्षेत्र नवागढ़ (नावई) में मिले पाषाण युग के साक्ष्य- डॉ. सुनील संचय, ललितपुर, जैन गजट नवम्बर 2016

हमारे गौरव

क्रांतिकारी लाला हुकुमचंद जैन

स्वातन्त्र्य समर में हिन्दु, मुस्लिम, जैन, सिख, आदि सभी जातियों व धर्मों के देशभक्तों ने अपना योगदान दिया। अंग्रेजी सरकार को जिस व्यक्ति के संदर्भ में थोड़ा सा भी ज्ञात हुआ कि इसका संबंध विद्रोह से है, उसे सरेआम फांसी पर लटका दिया, अनेक देशभक्तों को सरेआम कोड़े लगये गये तो अनेक परिवार नष्ट कर दिये गये सम्पत्तियाँ लूट ली गई। पर ये देशभक्त नहीं झुके। आज भारत वर्ष की स्वतंत्रता का महल इन्हीं देशभक्तों एवं अमर शहीदों के बलिदान पर खड़ा है।

1857 के इस क्रांति यज्ञ में अपने जीवन की आहूति देने वालों में दो अमर जैन शहीद भी थे प्रथम लाला हुकुमचंद जैन और दूसरे थे श्री अमरचन्द बांठिया।

लाला हुकुमचंद जैन का जन्म 1816 में हांसी (हिसार) हरियाणा के प्रसिद्ध कानूनगो परिवार में श्री दुनीचंद जैन के घर हुआ। आपका गोत्र गोयल और जाति अग्रवाल जैन थी। आपकी आरंभिक शिक्षा हांसी में हुई। जन्मजात प्रतिभा के धनी हुकुमचंद जी की फारसी और गणित में विशेष रुचि थी। इन विषयों पर आपने कई पुस्तकें भी लिखी। अपनी शिक्षा एवं प्रतिभा केबल पर आपने मुगल, बादशाह बहादुर शाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त कर लिया और आपने बादशाह के साथ आपके बहुत अच्दे सम्बन्ध हो गये।

15 नवम्बर 1857 को बादशाह की व्यक्तिगत फाइलों की जांच के दौरान लाला हुकुमचंद और मिर्जा मुनीर बेग के हस्ताक्षरों वाला वह पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गया। यह पत्र दिल्ली के कमिश्नर श्री सी.एस सॉडर्स ने हिसार के कमिश्नर श्री नव कार्टलैण्ड को भेज दिया और लिखा कि- इनके विरुद्ध शीघ्र ही कठोर कार्यवाही की जाये।

एक सरकारी और दिखावटी कार्यवाही के पश्चात् 18 जनवरी 1858 को हिसार के मजिस्ट्रेट जॉन एंकिसन ने लाला हुकुमचंद और मिर्जा मुनीर बेग को फांसी की सजा सुना दी। फकीरचंद को मुक्त कर दिया।

धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के लिये लाला हुकुमचंद के शव को जैनधर्म के विरुद्ध भंगियों द्वारा दफनाया गया और मिर्जा मुनीर बेग के शव को मुस्लिम परम्परा के विरुद्ध जला दिया गया।

लाला के बाद उनकी सम्पत्ति कौड़ियों के भाव नीलाम कर दी गई उनकी सम्पन्नता का परिचय इसी से मिल जाता है कि लगभग 9000 एकड़ जमीन उनके पास थी अन्य वस्तुओं में लगभग 400 तोला सोना, 3300 तोला चांदी 1300 चांदी के सिक्के, 107 मोहरें आदि।

हांसी की सड़क विशाल थी, हो गई लहू से लाल थी यह नर पिशाच का काम था, बर्बरता का परिणाम था श्री हुकुमचंद रणवीर था, संग मिर्जा मुनीर बेग था दोनों स्वदेश के भक्त थे, जनसेवा में अनुरक्त थे कोल्हू में पिसवाये गये, टिकटी पर लटकाये गये हिन्दु दफनाया गया, मुस्लिम शव झुलसाया गया कितने जन पकड़े घेरकर, फिर बड़ पीपल के पेड़ पर कीलों से टँके गरीब थे, ईसा के नये सलीब थे।

चौबीसवें तीर्थंकर महावीर

❊ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ❊

भारतवर्ष के विदेह देश (वर्तमान बिहार) स्थित कुण्डलपुर नगर के स्वामी नाथवंशीय महाराजा सिद्धार्थ थे। उनकी महारानी का नाम त्रिशला था। उस महारानी ने चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन प्रातः काल अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमानवासी इन्द्र को तीर्थंकर-सुत के रूप में जन्म दिया। अपने पूर्व तीसरे भव में जब आप नन्द मुनिराज थे तब प्रोष्ठिल श्रुतकेवली के पादमूल में सोलहकारण भावना भाकर आपने तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया था। पार्श्वनाथ तीर्थंकर के निर्वाण के ढाई सौ वर्ष बाद इनका जन्म हुआ था। इनकी आयु बहत्तर वर्ष की थी। इनके शरीर की ऊँचाई सात हाथ तथा सुवर्ण के समान कान्ति थी। इनके जीवन से संबंधित विभिन्न घटनाक्रमों को लेकर वीर, वर्द्धमान, सन्मति, महावीर, अतिवीर और महति-महावीर ये छह नाम प्रसिद्ध हुये। कलिंग नरेश जितशत्रु की सुयोग्य कन्या राजकुमारी यशोदा से इनकी विवाह-वार्ता चली किन्तु अपने तात्त्विक चिन्तन के कारण इन्होंने माता-पिता के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। किसी एक समय युवराज वर्द्धमान को अपने पूर्वभवों की स्मृति स्वरूप जातिस्मरण होने से तीस वर्ष की अवस्था में ही वैराग्य हो गया, जिससे चन्द्रप्रभा नामक शिविका में आरूढ होकर अपनी नगरी के निकट षण्डवन में पहुँचकर बेला का नियम लेकर मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी के दिन संध्या के समय निर्ग्रंथ मुनि दीक्षा धारण की। पारणा के दिन कूलग्राम नगरी में श्यामवर्णी राजा कूल ने उन्हें क्षीरान्न का आहार दान देकर पञ्चाश्चर्य प्राप्त किये। कौशाम्बी नगरी में दासता का जीवन बिता रही बन्धिनी चन्दनबाला प्रभु महावीर को आहारदान देकर बन्धन मुक्त हुई। उज्जयिनी नगरी के अतिमुक्त नामक श्मशान घाट में ध्यानावस्था में स्थाणु रुद्र द्वारा किये गये उपसर्ग को जीतकर आप सच्चे अर्थों में महायोगी महावीर बने। इस प्रकार मुनि अवस्था के बारह वर्ष बीत जाने पर एक दिन आप जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुकूला नदी के तट पर मनोहर वन में सालवृक्ष के नीचे बेला का नियम लेकर प्रतिमायोग से विराजमान हुये। परिणामों की विशुद्धता से वैशाख शुक्ला दशमी के दिन अपराह्न काल में आपने घातिया कर्मों को क्षयकर केवलज्ञान प्राप्त किया। भगवान के समवशरण की रचना हुई। छयासठ दिन के बाद इन्द्रभूति के दीक्षित होकर गणधर पद पर आसीन होते ही भगवान की दिव्य ध्वनि खिरने लगी। भगवान समवशरण में चौदह हजार मुनि (300 केवली, 1900 पूर्वधर, 1300 शिक्षक, 700 अवधिज्ञानी, 900 विक्रिया ऋद्धिधारी, 500 विपुलमतिज्ञानी, 400 वादी), छत्तीस हजार आर्यिकायें, एक लाख श्रावक, तीन लाख श्राविकायें, असंख्यात देव-देवियाँ और संख्यात तिर्यंच थे। आपके समवशरण का विस्तार एक योजन था। ग्यारह गणधर थे, जिसमें मुख्य गणधर इन्द्रभूति थे देशों में विहार कर 30 वर्ष तक धर्मोपदेश देते हुये भगवान सरोवरों के मध्य मणिमयी शिला पर दो दिन का योग-निरोध प्रतिमायोग से स्थित हुये। तदनन्तर कार्तिक अमावस्या को कर्म नाशकर मोक्ष पद प्राप्त किया।

निर्वाण की इस बेला में हर्षोल्लास पूर्वक सुरों, असुरों द्वारा जलाई हुई दीपमालाओं से अमावस्या को दीपावली-पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं। आपके द्वारा मुक्ति प्राप्त स्थल पद्मसरोवर से आप अकेले ही मुक्ति को प्राप्त हुये।

प्रमुख सिद्धांत- 1. अहिंसा- प्राणियों को नहीं मारना, उन्हें नहीं सताना। जैसे हम सुख चाहते हैं, कष्ट हमें प्रीतिकर नहीं लगता, हम मरना नहीं चाहते, वैसे ही सभी प्राणी सुख चाहते हैं, कष्अ से बचते हैं और जीना चाहते हें। हम उन्हें मारने/सताने का भाव मन में न लायें, वैसे वचन न कहें और वैसा व्यवहार/कार्य भी न करें। मनसा, वाचा कर्मणा प्रतिपालन करने का महावीर का यही अहिंसा का सिद्धांत है। अहिंसा, अभय और अमन चैन का वातावरण बनाती है। इस सिद्धांत का सार-संदेश यही है कि प्राणी-प्राणी के प्राणों से हमारी संवदेना जुडे और जीवन उन सबके प्रति सहायी/सहयोगी बने। आज जब हम वर्तमान परिवेश या परिस्थिति पर विचार करते हैं तो लगता हे कि जीवन में निरन्तर अहिंसा का अवमूल्यन होता जा रहा है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र बात अहिंसा की करते हैं किन्तु तैयारियाँ युद्ध की होती हैं। आज सारा विश्व एक बारुद के ढेर पर खड़ा परमाणु की ऊर्जा और शस्त्र विकसित कर लिये हैं कि तनिक सी असावधानी, वैमनस्य या दुर्बुद्धि से कभी भी विनाशकारी भयावह स्थिति बन सकती है। ऐसे नाजुक संवेदनशील दौर को हमें थामने की जरूरत है। **हथियार की विजय पर विश्वास नहीं हृदय की विजय पर विश्वास आना चाहिये। तोप, तलवार से झुका हुआ इन्सान एक दिन ताक अर्जित कर पुनः खड़ा हो जाता है किन्तु प्रेम, करुणा और अहिंसा से वश में किया गया इन्सान सदा-सदा के लिये हृदय से जुड जाता है।** मेरी अवधारणा तो यही हे कि अहिंसा का व्रत जितना प्रांसगिक महावीर के समय में था, उतना ही और उससे कहीं अधिक प्रासंगिक आज भी है। कलिंग युद्ध में हुये नरसंहार को देखकर सम्राट अशोक का दिल दहल गया और फिर उसने जीवन में कभी भी तलवार नहीं उठाई। तलवार की ताकत के बिना ही उसने अहिंसक शासन का विस्तार किया। रक्तपात से नहीं रक्तसम्मान से उसने अपने शासन को समृद्ध किया। इसलिये व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व की शान्ति/समृद्धि के लिये **भगवान महावीर द्वारा दिया गया जियो और जीने दो का सूत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।**

2. अनेकान्त- भगवान महावीर का दूसरा सिद्धांत अनेकान्त का है। अनेकान्त का अर्थ है- सहअस्तित्व, सहिष्णुता, अनाग्रह की स्थिति। इसे ऐसा समझ सकते हैं कि वस्तु और व्यक्ति विविध धर्मी है। जिसका सोच, चिन्तन, व्यवहार और बर्ताव अन्यान्य दृष्टियों से भिन्न-भिन्न है। अब वह यदि एकांगी, एकांती-विचार/व्यवहार के पक्ष पर अडकर रह जाता है तो संघर्ष/टकराव की स्थिति बनती है। अनेकान्त देने वाला है। यह वह सिद्धांत है जो वस्तु और व्यक्ति के कथन/पहलु को विभिन्न दृष्टियों से समझता है और उसकी सार्वभौमिक सर्वांगीण सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार करता है। इस सिद्धांत के सम्बंध में साफ-साफ बात यह है कि **एकान्त की भाषा ''ही'' की भाषा है, रावण का व्यवहार है जबकि अनेकान्त की भाषा ''भी''**

की भाषा है, राम का व्यवहार है। राम ने रावण के अस्तित्व को कभी नहीं नकारा किन्तु रावण राम के अस्तित्व को स्वीकारने कभी तैयार ही नहीं हुआ। यही विचार और व्यवहार संघर्ष का जनक है। जिसका परिणाम विध्वंस/विनाश है। ही अहंकार का प्रतीक है। मैं ही हूँ यह उसकी भाषा है जो कि संघर्ष और असदभाव का मार्ग है। अनेकांत में विनम्रता/सद्भाव है, जिसकी भाषा भी है। ही का परिणाम 36 के रूप में निकलता है, जिसमें तीन छह की तरफ और तीन की तरफ नहीं देखता किन्तु भी का परिणाम 63 के रूप में आता है,जिसमें छत हीन और तीन छह के गले से लगता है। यही 63 का सम्बन्ध विश्व मैत्री, विश्वबन्धुता, सौहार्द, सहिष्णुता सहअस्तित्व और अनाग्रह रूप अनेकान्त का सिद्धांत है। यही अनेकानत की दृष्टि दुनिया के भीतर बाहर के तमाम संघर्षों को टाल सकती है। युग के आदि में आदिनाथ के पुत्र भरत और बाहुबली के बीच वैचपारिक टकराहट हुई, फिर युद्ध की तैयारियाँ होने लगी। मंत्रियों की आपसी सूझबूझ से उसे टाल दिया गया और निर्धारित दृष्टि, जल और मल्युद्ध के रूप में दोनों भ्रता अहिंसक संग्राम में सामने आये। यह दो व्यक्तियों के कारण दो सेनाओं में युद्ध हुआ, जिसमें हथियरों का प्रयोग हुआ। हम और आगे बढ़े, महाभारत के काल में आये जिसमें एक ही कुटुम्ब के दो पक्षों में युद्ध हुआ, और अब दो देशों में युद्ध होता है। पहले भाई का भाई से, फिर व्यक्ति का व्यक्ति से, फिर एक पक्ष का दूसरे पक्ष से और अब एक देश का दूसरे देश से युद्ध चल रहा है और युद्ध का परिणाम सदैव विध्वंस ही निकलता है। **हमें संघर्ष नहीं शान्ति चाहिये और यदि सचमुच ही हमने यही ध्येय बनाया है तो अनेकान्त का सिद्धांत भी की भाषा, अनाग्रही व्यवहार को जीवन में अपनाना होगा।**

कविता

मंदिर बना है सुंदर बैठे पार्श्वनाथ दिगम्बर

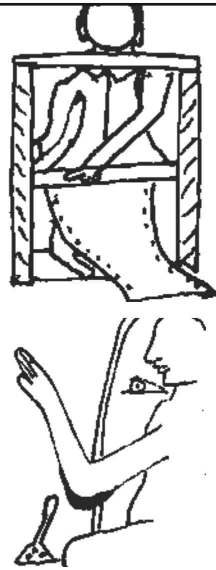

मन मंदिर को सजाया सुंदर, आओ आन पधारो गुरुवर
आँखे निहारती, हम सब उतारे गुरु की आरती ... जय हो
पिता मल्लपा माँ श्रीमती के आँगन में तुम चहते
ग्राम सदलगा धन्य हुआ है, सारी नगरी महके
गुरूवर की चर्या प्यारी झुक जाये नर और नारी
हम भी पुकारती .... हम सब....
सूर्य समान गुरु तेज तुम्हारा, झुकता सब संसार
एक बार जो नजर उठे तो कष्ट न आये दोबारा
जो भी आये शरण तिहारी, झोली भर-भर जाये सारी
मोक्ष के सारथी..... हम सब
तेरे दर पर जो भी आये, तेरा ही हो जाये
ना जाने क्या जादु है ऐसा, मन ही ना भर पाये
गुरु की सूरत भोली-भाली दिवानी दुनिया से सारी।

अम्लरोग (एसिडिटी) का प्रभावी नियंत्रण उपाय

❊ संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इंदौर ❊

आज के समय में 80% से अधिक व्यक्तियों को अम्ल रोग की परेशानी है जिससे खुशियों के यात्रा आदि के समय परेशानी होने से खुशियों में व्यवधान उत्पन्न कर देता है। हमारे पेट में हाइड्रोक्लोरिक एसिड का उपयुक्त मात्रा से अधिक से जाना ही अम्ल रोग कहलाता है।

भोजन के पाकस्थली (अमाशय) में प्रवेश करते ही उसे पचाने के लिये पेट में ऐसिड स्रवित होते हैं जिन्हें गेस्ट्रिक ज्यूस कहते हैं जिनमें मुख्यत हाइड्रोक्लोरिक एसिड, पोटेशियम और सोडियम क्लोराइड होता है जो भोजन को पचाने के साथ ही हानिकारक बैक्टीरियों को खत्म करते हैं। प्राकृतिक नियमानुसार एसिड पाचन के समय आवश्यकतानुसार मात्रा में निकलना चाहिये किन्तु जिन्हें यह रोग होता हे उनमें एसिड अधिक व देर तक निकलता रहता है।

अम्ल की अधिकता से भोजन गलकर सड़ने लगता है जिससे खट्टी डकार, पेट में गैस बनना, पेट फूलना, सीने में जलन, पेट में अम्लशूल का दर्द, मुंह में पानी भर जाना, अपच, कटज या दस्त, जिन्हें अम्ल अधिक मात्रा में निकलता रहता है उनकी पाकस्थली की श्लैष्मि झिल्ली का घाव व पाकस्थली की विवृद्धि भी हो जाती है।

मनुष्य के सिवाय ईश्वर की सृष्टि का कोई भी जीव भोजन के समय प्रायः पानी नहीं पीता है जिससे पाचन शक्ति कमजोर पड़ जाती है। हम जो भी भोजन करते है या पीते हैं प्रायः पानी का कुछ अंश जरूर रहता है, किन्तु शरीर की धारण क्षमता व प्यास मिटाने के लिये थोड़ा सा पानी पिा जा सकता है।

अम्ल रोग होने के प्रमुख कारण पानी कम पीना या भोजन के बीच में पानी पीना, तनाव से कोई हर्मोन के स्त्रावित होने से पाचन तंत्र खराब होना, अधिक समय तक भूख रहना, कम नींद, चाय, काफी, अधिक व भूखे पेट पीना, फास्ट व जंक फूड अ धिक खाना, भोजन में मेंदा, मीठा, वेलीय मिर्च, नमकीन, अचार खाना, तम्बाकू, अल्कोहल का उपयोग, अनियमित जीवन चर्या व आनुवंशिक कारण भी है।

गैर एसिडिटी से बचाव के लिये अधिकांश लोग बिना डॉक्टरी सलाह से एंटी एसिडिक दवाईयाँ लेते है। 1. जिससे पेट के एसिड को न्यूट्रल होने से तत्काल आराम मिल जाता है। 2. कुछ दवाईयाँ 12 घंटे तक आराम देती है। 3. कुछ दवाईयाँ ऐसिड को रोक देती है उन्हें पेट तक पहुँचने नहीं देती। इन कारणों से पाचन करने वाले लाभदायक व वैक्टीरिया नष्ट हो जाती हैं। व जिसका दुष्प्रभाव किडनी पर और कभी-कभी गैस्टिक केंसर होने का कारण होता है एवं कुछ लोगों की इनमे लेने की आदत बन जाती है व कुछ धारणा बना लेते हैं कि दवाई लेना ही पड़ेगी।

अम्ल रोग नियंत्रण के उपाय से पूर्व दवाईयों से बचने के लिये एसिडिटी बनने के कारणों पर ध्यान देना अति आवश्यक है। निम्न उपाय व उपप्रभावी है।

1. गरम पानी पीना- पाकस्थली से पचकर भोजन छोटी आंत में प्रवेश करने के प्रायः 2 से 4 घंटे का समय लगता है अतः भोजन करने के बाद 1 से 2 घंटे बाद गरम पानी पीने से बेकार पड़ा अम्ल की क्रिया नष्ट हो जाती है। प्रतिदिन 3 से 4 लीटर पानी शरीर क्षमता कार्य अनुसार पीना आवश्यक है।

2. भोजन करने के दो घंटे तक बीच में कुछ नहीं खाना, भोजन में फल, सब्जियों भरपूर मात्रा में, रेशेवाली व फाइवर युक्त भोजन अधिक लेना, समय पर भोजन करना, आटा मोटा व चौकर युक्त होवे, गैस की सिकी हुई रोटी के स्थान पर चूल्हा सिगड़ी पर सिकी रोटी खाना।

3. पर्याप्त नींद लेना, प्रतिदिन योग व्यायाम व 30-45 मिनिट तक सुबह शाम सैर करना।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर परहेज करने से आराम मिल जाता है। होम्योपैथी पद्धति से प्रभावी नियंत्रण हो जाता है। जिनमें प्रमुख औषधियाँ कार्बोबेज, लाइकोपोडियम, चाइना, सल्फ्यूरिक एसिड, नेट्रम फास, कैलकेरिया कार्ब, नक्सवोमिका, रोबिना, सल्फर, कोलोसिन्थ, पल्सटेलि आदि उपचार पूर्व अनुभवी व योग्य चिकित्सक से सलाह लेकर इलाज करायें।

जीवन शैली में बदलाव व चिकित्सा से सुधार करके जीवन को स्वास्थ्य व खुशियों के पलों को संजोये रखें।

कविता

मैं कौन हूँ

आत्मा अजर अमर परमात्मा का दिया एक जीव पदार्थ है।
जो पूर्वकृत कर्मो के अधीन होकर।
चारों गतियों में भ्रमण करती है।
और तरह तरह के आकार धरती है।
आत्मा अरस अरुपी एवं अस्पृशी है
आत्मा की असीम अवगाहना होती है
आत्मा का आकार, चीटी, हाथी और परमात्मा
सभी में एक समान ही होता है
आत्मा अपार ज्ञान का भंडार है
हर आत्मा में अतुल्य शांति होती है
हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है
आत्मा आँकने की नहीं, अजमाने की शक्ति है
शरीर अजीव है, आत्मा से सर्वधाजुदा है
शरीर पवन, पानी, पातल, आकाश और
पृथ्वी-पवतत्तव से निर्मित एक निर्जीव पुतला है।
शरीर (पांच इन्द्रिय) ज्ञानी-आत्मा के अधीन और
मूर्ख-आत्मा के ऊपर शासन चलाता है
आत्मा शाश्वत सिद्ध-बुद्ध, ज्ञानी-ध्यानी प्रकाश पुंज है
अशरीरी है, और शाश्वत सर्वत्र चलायमान है
शरीर मात-पिता के निमित्त से कर्मो के अधीन
जन्म-मरण कर आत्मा को भवभ्रमण कराता है।
और अंत में संसार में पंच तत्व में विलीन हो जाता है।
मानव जीवन एक अमूल्य निधि है
शरीर का निमित्त बनाकर
अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य
एवं अपरिग्रह का पालन कर
आत्मा का कल्याण संभव है
जीवन में पूर्वकृतकर्म और वर्तमान के
पुरुषार्थ से जो भी साधन-संसाधन
उपलब्ध हुये, उनका तेरा तुझको अर्पण कर
राग, द्वेष, मोह, पाप, कषायों को त्यागकर
निज चैतन्य स्वभाव पहचानकर
परमात्म परमपद प्राप्तकर
भव-भव के भ्रमण के भय से मुक्त हो
चिंदानंद स्वरूप में विलीन हो
यही यथार्थ सत्य है।

हास्य तरंग

1. नई बहु को सास ने समझाया कि बेटी मुझे माँ व अपने ससुर को पिता समझना। तभी दरवाजे की घंटी बजी, बहू ने दरबाजा खोला तो सास ने पूंछा कौन आया है। बहू ने कहा बड़े भैया टूर से वापिस आ गये हैं।

2. अपने लड़के को डॉटते हुये कहा आलसी हो, कुछ भी करने की इच्छा शक्ति नही है। जानते हो जब मैं तुम्हारी उम्र का था दो सौ रूपये की नौकरी आटो पार्ट्स शोरुम पर की थी पांच साल में उस शोरुम का मालिक बन गया था। लड़का पिता जी आजकल ऐसा संभव नही है, सभी पैसों का हिसाब कम्प्यूटर में रखा जाता है ओर केमरे से निगरानी भी होती रहती है।

3. मायके से आई पत्नी को लेने स्टेशन पहुंचा पति ट्रेन रूकते ही सामान उठाकर टैक्सी स्टैंड की तरफ चलने लगा। ट्रेन से उतरी पत्नी ने कहा रूको और कहाः जरा प्यार से हंसकर रिसीव कर लेते, तो क्या हो जाता ? ढंग से उतरने भी नहीं दिया और चल पड़े। जरा सामने वाले जोड़े को देखो। पति कैसे खुश होकर बातें कर रहा है। पति ने कहां- हाँ देख रहा हूँ, वह पत्नी को छोड़ने आया है, लेने नहीं।

4. डॉक्टर- सांस रोग पीड़ित व्यक्ति की जांच करते हुये कहते हैं कि लम्बी सांस को व तीन बार सात बोलो ? घबराया हुआ मरीज सांस लेते हुये कहता है इक्कीस।

5. एक पुलिस वाले को कुत्ते ने काट लिया इलाज कराने डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने पट्टी बांधकर दवाई देते हुये पूंछा क्या आपको कुत्ते ने पहिचाना नहीं, पुलिस वाला मैं उस समय ड्रेस नहीं पहिने था।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

❊ टपका

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- सब अपने दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर माचिस या कोई पत्थर तथा बाया हाथ पीठ पीछे रखेगा। सीटी बजने पर स्कन्ध युद्ध की तरह टक्कर मारकर एक-दूसरे की माचिस या पत्थर गिराने का प्रयास करेंगे। किसी की भी माचिस गिरते ही सब जोर से कहेंगे। टपका-टपका सबसे अन्त तक बचने वाला विजयी होगा।

❊ अकलंक कहाँ हो

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- दो स्वयंसेवक मंडल के अन्दर तथा शेष मंडल की परिधि पर हाथ पकड़कर खड़े रहेंगे। एक **(अ)** की आँखों पर पट्टी बंधी रहेगी। वह पूछेगा। अकंलक तू कहाँ ? दूसरा ब उत्तर देगा। मैं यहाँ। इस प्रकार बार-बार प्रश्नोत्तर की सहायता से **अ, ब** को पकड़ेगा। अन्धा **(अ)** एक ही रहे पर ब की संख्या दो-तीन हो सकती है। वे अ की पीठ पर मुक्के भी लगा सकते हैं।

❊ मूर्ति

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- सब मंडलाकार दौडेंगे। शिक्षक विभिन्न उद्घोष बोलता रहेगा। अचानक वह बीच में जोर से मूर्ति कहेगा। इस पर सभी खिलाडी मूर्तिवत स्थिर हो जायेगा। जो खिलाड़ी हिलता दिखाई दिया। वह बाहर हो जायेगा। शुरु कहने पर फिर सब दौड़ने लगेंगे। सबसे अंत तक बचने वाला विजयी होगा।

बाल कहानी

जानलेवा बाप

सागर जिले के देवरी कला कस्बे में एक शराबी सालकराम रायकवार रहता था। उसकी शादी माया से हुई थी। माया बहुत व्यवहार कुशल और पैसा बचाने वाली थी। वह सबसे आये दिन किसी न किसी से झगड़ा करता ही रहता था। सालकराम के झगड़े जब ज्यादा बड़ जाते थे तो माया ही आगे आती और अपने सुहाग की भीखी मांगकर सालकराम को पिटने से बचा लेती थी। सारे लोग यह कहते थे कि माया भाभी आपका मुँह देखकर हम इसे छोड़ देते अन्यथा इस कमीने को इतना मारे कि ये तो सब शराब पी गाली बकना और झगड़ा करना सब भूल जायेगा। भाभी जी एक बार तो इसे पिट जाने दो।

माया कहती ये तो पिट जायेंगे इनके हाथ पैर टूट जायेंगे पर इलाज तो मुझे ही कराना पड़ेगा और यह भी तुम समझ लो कि इनकी जान में जान नहीं है। कहीं ये मरमरु गये तो जेल तुम सबको जाना पड़ेगा।

आज तो सालकराम ने हद कर दी अपने बेटे शुभम् को जबरदस्ती शराब पिला दी वह लड़खड़ाते हुये घर पहुँचा उसकी माँ माया देखते ही समझ गयी कि बेटे को कलयुगी बाप ने शराब पिला दी देखते देखते शुभम बेहोश हो गया माया बहुत तेजी से रोने लगी उसके रोने की आवाज सुनकर नईम खाना पार्षद दौड़कर आया उसने देखा कि शुभम बेहोश पड़ा है यह अपनी तुरन्त मारूती वेन लेकर आया और शुभम को अस्पताल ले गया इलाज होने पर शुभम तो ठीक हो गया परन्तु सब पत्रकार इकट्ठे हो गये और कहने लगे कि ये सालकराम बाप नहीं **जान लेवा बाप है** इस शराबी से पूरा मुहल्ला परेशान है इसका कोई उपाय होना चाहिये।

संस्कार गीत

अहिंसा ही मानवता

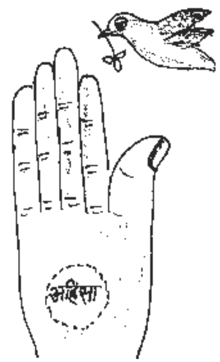

अहिंसा ही है मानवता
शांति का सूत्र अनुपम है
हिंसा से दुख ही दुख मिला
अहिंसा तो सुधा सम है

1

धरा अरू अम्बर चींखे रे
सृष्टि में नर्क क्यों रचता
क्रूरता मन में जब आये
नहीं इंसा तूँ रहता
बने सच्चा जो इंसा तूँ
फरिश्ता से कहीं कम है

2

अरे मंदिर अरु मस्जिद से
यही आवाज आती
छोड़ दे हिंसा को मानव तुझे जन्नत बुलाती है
शांति छा जाये दुनिया में
अहिंसा का यही दम है

3

सुनो हिंसा पतन के रास्ते पर सबको लाती है
अहिंसक को सदा उत्थान की मंजिल
बुलाती है
हिंसक तो सदा रोता जिंदगी में उसे गम है

बाल कविता

एक बनाये छोटी रेल

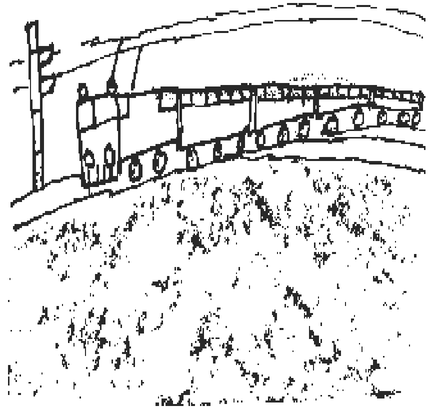

आओ बच्चों खेले खेल
एक बनायें छोटी रेल
चलों चलें हम पारसनाथ
करें वन्दना मिलकर साथ
ऊंचा पर्वत हरा भरा
यह सिद्धों की पुण्य धरा
मधुवन सुंदर लगता है
सबके मन को हरता है
खुशी खुशी पर्वत चढ़ते
कभी नहीं कोई थकते
बीस तीर्थंकर पूज्य महा
सिद्धक्षेत्र यह तीर्थ महा,
भावों का सब खेल है
आगे बढ़ती रेल है।

समाचार

कुण्डलपुर पंचकल्याणक महामहोत्सव संपन्न

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ 300 पिच्छिधारी साधुओं के सान्निध्य में श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 12 फरवरी से 23 फरवरी तक सानंद संपन्न हुआ। जिसमें 7272 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई जिसमें कुण्डलपुर में विराजमान 1024 स्रहजकूट प्रतिमायें 72 त्रिकाल चौबीसी प्रतिमायें, 25 विधिनायक प्रतिमायें, 20 गर्वग्रह प्रतिमायें, चोबीसी की चोबीस प्रतिमायें इस प्रकार 1165 प्रतिमायें तथा 5616 नंदीश्वर द्वीप आगरा की प्रतिमायें, 13 भाग्योदय सागर की प्रतिमायें तथा खजुराहो, सतना, बाकल,शहपुरा भिटोनी, जबलपुर, बहोरीबन्द, कटनी, बीना, अशोकनगर, सिरोंज, होशंगाबाद, इटारसी, सम्मेद शिखरजी, औरंगाबाद, सूरत, चिचोली, उंचगांव, ओलापुर, गोसलपुर, बाजना, नागपुर, वरूण, वगरूल, मालेगांव, रेवपुरा, छपारा, बंडा, पजनारी, बडागांव , भोपाल, जयपुर, नेंदरा, डुबरसरा, खराडी पूणा, सहारनपुर, सनाई, अजमेर, ढ़ाना, लंदन, सिंघाना, दमोह, मुक्तईनगर, ननासा, बारामती, इन्दाना जबलपुर, बस्तवाड़, खरगापुर, बरां, छतरपुर, मणियादो, शिरगुप्पी, जवेरा, नंदुरवार, पुसद, मगरोनी, मुंगावली, गंजबासौदा, पटेरा, मुंबई, नेहानगर सागर, गुवाहटी, तेजगढ़, बेगमगंज, नांदेड, सदलगा, कंपुदवार, मुरार ग्वालियर, हटा, सागर, उदयपुर, शाहपुर, अहमदाबाद, सौरई, बेलोद, सोलापुर, हुपरी, कोटा, धरनावद, वरमान, रायपुर, नेमावर, इंदौर, इटावा आदि स्थानो से 530 प्रतिष्ठित की गई। इसमें 24 सौधर्म इन्द्र, 24 माता-पिता, 24 आहारदाता, 24 कुबेर आदि बनाये गये। तपकल्याणक के दिन 176 बहनों ने ब्राह्मी सुंदरी बनने का सौभाग्य लेकर आजीवन ब्रह्मचारी व्रत लिया। साथ ही 25 विधिनायक होने से 25 जगह पर आहारचर्या करायी गई। ज्ञान कल्याणक के दिन 25 समवशरण बनाये गये। मोक्ष कल्याणक के दिन सम्मेदशिखर कैलाश पर्वत, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि की रचना की गई। तप कल्याणक 21 फरवरी 2022 को 18 ब्रह्मचारी भाईयों को क्षुल्लक दीक्षा दी गई। जिसके संस्कार निर्यापक मुनि श्री समयसागर जी निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी, निर्यापक मुनि श्री सुधासागरजी ने किये।तथा 6 नये निर्यापक की घोषणा की गई। जिसमें मुनिश्री समतासागर जी, मुनि श्री प्रशांतसागरजी, मुनिश्री प्रसादसागरजी, मुनि श्री अभयसागरजी, मुनिश्री संभवसागरजी, मुनि श्री वीरसागरजी को निर्यापक बनाया गया। जिसमें अनेक राजनेता आचार्य श्री एवं बड़े बाबा के चरणों में उपस्थित हुये। केन्द्रिय मंत्री, पीयुष गोयल, ज्योतिरादित्य सिंधिया, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, विधायक गोपाल भार्गव, जयंत मलैया, कैलाश पटेल, कमलनाथ आदि।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कुण्डलपुर क्षेत्र के 4 किलोमीटर के क्षेत्र में मांस, मंदिरा आदि की विक्री नहीं की जायेगी ऐसी घोषणा कर इस क्षेत्र की पवित्रता बनायें रखने में सहयोग दिया।

दीक्षायें सम्पन्न

बावनगजा- आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. सुजीत भैया को क्षुल्लक दीक्षा श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र बावनगजा बड़वानी म.प्र. दी गई जिनका नाम क्षुल्लक व्रतसागर महाराज रखा गया।

कुण्डलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के करकमलों से क्षुल्लक देवानंद सागर महाराज जी को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (म.प्र.) में 05 फरवरी 2022 बसंत पंचमी के दिन एलक दीक्षा दी गई। जिनका नाम एलक निजानंद सागर जी रखा गया।

कुण्डलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. राहुल भैया सागर, ब्र. राजेश भैया सागर, ब्र. भूपेन्द्र भैया ललितपुर, ब्र. सुमित भैया ललितपुर, ब्र. मयूर भैया विदिशा, ब्र. ईश्वरदास भैया महाराजपुर, ब्र. सचिन भैया मुंगावली, ब्र. मानस भैया इंदौर, ब्र. सचिन भैया, पुसद (महाराष्ट्र), ब्र. प्रांशुल भैया सतना, ब्र. अविचल भैया गुना, ब्र. संदीप (राजा) भैया, खिमलाशा को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में 20 फरवरी 2022 को क्षुल्लक दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः क्षुल्लक श्री औचित्यसागरजी, क्षुल्लक श्री गहनसागरजी, क्षुल्लक श्री सुधारसागरजी, क्षुल्लक श्री मंथनसागरजी, क्षुल्लक कैवल्यसागरजी, क्षुल्लक श्री त्रिलोकसागरजी, क्षुल्लक श्री मननसागरजी, क्षुल्लक श्री सुदृढसागर जी, क्षुल्लकश्री अपारसागरजी, क्षुल्लक श्री समकितसागरजी, क्षुल्लक श्री विचारसागरजी क्षुल्लक श्री मगनसागरजी, क्षुल्लक तन्मयसागरजी, क्षुल्लक श्री उचितसागरजी, क्षुल्लक श्री अथाहसागरजी, क्षुल्लक श्री उत्साहसागरजी, क्षुल्लक श्री अमापसागरजी, क्षुल्लक श्री विरलसागर जी रखा गया।

गींगला (राजस्थान)- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर गींगला राजस्थान में 7 फरवरी 2022 को ब्र. सुगंधा देवी, ब्र. सुर्या देवी को क्षुल्लिका दीक्षा दी गई। जिनका नाम क्षुल्लिका सुगंधमती माताजी, क्षुल्लिका सूरजमति माताजी नाम रखा गया।

जैन गौरव एवं आचार्य श्री प्रदर्शनी

कुण्डलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के ससंघ लगभग 300 पिच्छिधारी सान्निध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 12 फरवरी से 23 फरवरी 2022 तक हुई जिसमें स्वतंत्रता के आजादी के 75वें अमृत अवसर पर जैन गौरव एवं स्वतंत्रता संग्राम में जैन प्रदर्शनी का आयोजन तथा आचार्य श्री 50वें आचार्य पदाहरोण उपलक्ष्य में आचार्य श्री जीवन से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें लाखों लोगों ने प्रदर्शनी देखकर के अपने ज्ञान को बढ़ाया। यह प्रदर्शनी संस्कार सागर : श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर के सहयोग से लगाई गई थी। जिसमें आर्थिक सहयोग श्रीमती माया गजेन्द्र जी जैन (गिन्नी ग्रुप) इंदौर ने किया।

वर्ग पहेली 269

1		2	3		■	4	5	6
	■	7		■	8			
9	10	■	11	12	■		■	
13		14	■	15		■	16	
■	17		18	■	19			■
20		■	21	22	■	■	23	
	■	24			■	25		■
	■	■		■	26		■	27
28			■	■	■	29		

बाये से दाये

1. एक आवश्यक जिसमें पापों का चिंतन किया जाता है, तस्मिच्छामी दुक्कडं कहते हैं। -5
4. सम्पूर्ण, समस्त -3
7. पथ, राह, रास्ता -2
8. प्रयोजन, तात्पर्य -4
9. विचार, भाव -3
11. झुकने का भाव, झुकाव, झुकना -2
13. गाना, गीत -3
15. आत्मा (उर्दू में) -2
16. प्रयोजनीय अंश -2
17. श्री राम के भाई, श्री आदिनाथ के प्रथम पुत्र का नाम -3
19. घड़ियाल, परन्तु -3
20. संसार, दुनिया, पानी रखने का पात्र -2
21. अन्न का अंश -2
23. स्वयं से उत्पन्न होने का भाव -2
24. फरजी -3
25. लीन, तल्लीन, मग्न -2
26. आत्मा, इन्द्रिय -2
28. छोटे होने का भाव -3
29. संविदा, इकरार -3

ऊपर से नीचे

1. वह आवश्यक जिसमें भविष्य के लिये पापों का त्याग किया जाता है। -4
2. पद, नम्बर -2
3. लीन होने का भाव -3
4. लगातार -3
5. आने वाला दिन, बीता हुआ दिन -2
6. जल्दी, शीघ्र (मराठी में) -3
10. करीब-करीब -4
12. वृक्ष, झाड़, पेड़ -2
14. काम, पिटाई का भाव -3
16. विद्वान, सरस्वती पुत्र -2
18. तीर रखने का पात्र, तूणीर -4
20. भूकंप, भूचाल -4
22. कान में पहनने का आभूषण, सुग्रीव का भाई -2
25. रक्षा करने वाला -3
27. चौपहिया वाहन, फोर व्हीलर -2

वर्ग पहेली 268 का हल

1 मी	2 न	■	3 द	र्श	■	4 सु	5 नी	ता
6 ना	ज	■	र्प	■	7 वि	र	ति	■
8 क्षी	र	■	■	9 बु	ला	वा	■	10 जी
■	■	11 म	■	12 त	व	ला	■	वा
13 श	14 ब	न	15 म	■	■	■	16 वा	णी
17 र	स	■	1 र	थ	■	आ	19 यु	■
णा	■	20 त	क	■	21 म	ग	■	22 म
ग	■	23 व	त	24 न	■	25 म	ह	क
26 त	र	ल	■	27 ग	ज	■	28 वा	र

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

तेरे पूजन को भगवान

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

कुण्डलपुर में 20 फरवरी 2022 को आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ (लगभग 300 पिच्छी) के सान्निध्य में निर्यापक पद की घोषणा

निर्यापक
मुनिश्री समतासागर जी

निर्यापक
मुनिश्री प्रशांतसागर जी

निर्यापक
मुनिश्री प्रसादसागर जी

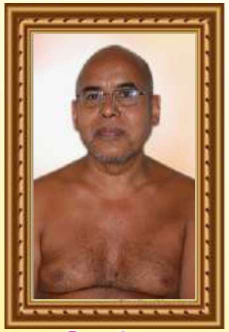

निर्यापक
मुनिश्री अभयसागर जी

निर्यापक
मुनिश्री संभवसागर जी

निर्यापक
मुनिश्री वीरसागर जी

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 26/02/2022, पोस्टिंग दिनांक : 03/03/2022

हम कब जागेंगे पर्यावरण सुरक्षा के लिये

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

(दिवाली की आतिशबाजी हमारे वातावरण और खुद के लिये हर तरह से खतरा है, पर्यावरण की बहस से अलग भी इससे बचना जरूरी है। ऐन दीपावली से कुछ दिन पहले आये सुप्रीम कोट के फैसले को व्यावहारिक रूप में भी स्वीकार करना होगा। पढ़ें डॉ. सुनील जैन संचय का यह महत्त्वपूर्ण आलेख)

माननीय सुप्रीम कोर्ट पिछले कई वर्षों से पटाखों को इस्तेमाल को लेकर कई तरह के आदेश दे चुका है, जिससे बढ़ते प्रदूषण को लेकर उसकी चिंता स्पष्ट झलकती है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने दिये अपने फैसले में पटाखों पर पूरी तरह से रोक लगाने से इंकार किया है, लेकिन इनके इस्तेमाल पर अंकुश लगाया है, मैं समझता हूँ इसका स्वागत किया जाना चाहिये। दीपावली के मौके पर रात्रि आठ दस बजे के बीच दो घंटे आतिशबाजी की छूट दी गयी है। कम प्रदूषण वाले ओर कम आवाज करने वाले पटाखें ही इस्तेमाल किय जा सकेंगे।

सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को व्यावहारिक रूप में स्वीकारें: सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों के निर्माण में हानिकारक प्रतिबंधित रसायन प्रयोग होने और उससे लोगों को होने वाले नुकसान व परेशानी पर नाराजगी और चिंता जताते हुये कहा कि मौज-मस्ती के लिये दूसरों के जीवन से खेलने की इजाजत नहीं दी जा सकती। पीठ ने कहा है कि वह लोगों उत्सव मनाने के खिलाफ नहीं है लेकिन मौज-मस्ती के लिये किसी के मौलिक अधिकार का हनन नहीं किया जा सकता। माननीय उच्चतम न्यायालय के इस फैसले पर सभी को अमल करना चाहिये। पर्यावरण प्रेमी बनकर पर्यावरण संरक्षण में महती भूमिका निभायें।

ऐन दीपावली से कुछ दिन पहले आये इस फैसले को व्यावहारिक रूप में भी स्वीकार करना चाहिये। प्रदूषण की स्थिति जिस तरह से खतरनाक होती जा रही है, उसमें हम सबको संजीदगी दिखाने की जरूरत है। दीवाली पर पटाखे चलाने में हमें संयम बरतने की जरूरत है। संयम केवल सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आलोक में ही नहीं, अपनी सेहत की हिफाजत के लिये भी बरतें। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि समय के साथ पटाखें दीपावली का हिस्सा बन चुके हैं , लेकिन जब उनका अधिक इस्तेमाल सेहत और जान-माल के लिये संकट बन जा रहा है तो फिर पटाखे न चलाने में ही भलाई है। अब तेज आवाज, रोशनी वाले तमाम पटाखे बाजार में आ गये हैं। यह पटाखें चंद क्षण तो खुशी दे सकते हैं मगर सेहत पर दुष्प्रभाव डालते हैं। यह पर्यावरण के साथ मानव जीव-जंतुओं के अलावा पेड़-पौधों को भी प्रभावित करते हैं।

पटाखों से प्रकृति व पर्यावरण दोनों का नुकसान: पटाखों से प्रकृति और पर्यावरण दोनों का नुकसान होता है। 464 सिगरेट के बराबर एक पटाखा है। वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी प्रदूषण पटाखों से होता है। अरबों रुपये की व्यर्थ में बर्बादी पटाखों के रूप में हम एक दिन में कर देते हैं। जिससे नुकसान ही नुकसान हैं, फायदा कुछ नहीं है। जितने रुपये के पटाखे हम एक दिन में फूंक देते हैं उतने रुपये से हजारों परिवारों का भरण-पोषण किया जा सकता है। पटाखों से हो रहे दुष्परिणामों के कारण आज हमारा जीवन व्यथित हो रहा है। हजारों मूक प्राणियों की निमर्म हिंसा हो रही है। आज हमें जागरूक होने की आवश्यकता है।

दीपावली के आध्यात्मिक भावों को समझे: हमारी परंपरा और संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण की बात कही गई है। पर्यावरण के बगैर मानवीय जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है। हमारे धर्म ग्रंथों में दीपक जलाने की बात कही गयी है। आतिशबाजी का कई नामोनिशान तक नहीं है। पूर्वजों ने भी इसी का पालन किया दीपक जलाकर, रंगबिरंगी रोशनी के माध्यम से इस पर्व को खुशी की सौगात दी है। आतिशबाजी और पटाखेबाजी केवल आधुनिक विकृतियाँ हैं। क्षण भर में लाखों रुपयों का नुकसान के साथ-साथ अमूल्य पर्यावरण को भी हानि है।

हमारे त्यौहार की लगभग सभी क्रियाएँ प्रतीकात्मक होती हैं उसके पीछे उनके आध्यात्मिक अर्थ छुपे हुये होते हैं। हमारे पढ़े-लिखे और सभ्य होने की एक सार्थकता यह भी है कि हम उन प्रतीकों के आध्यात्मिक भावों को भी समझ कर और अपना कर चलें।

शुभ दीपावली, अशुभ पटाखा: हमें मानवीय नजरिया रखते हुये **शुभ दीपावली** अशुभ पटाखा की परंपरा की शुरूआत करनी चाहिये। हमारी सांस्कृतिक परंपरा में बारूद को जलानाअशुभ माना जाता है फिर दीपावली पर पटाखों में भरे बारूद जलाकर हम क्या संदेश दे रहे हैं। पटाखें अशुभ के प्रतीक हैं, मिट्टी के दिये शुभ के प्रतीक सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अंधकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालाएँ जलनी चाहिये।

ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ रहा खतरा: वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी का प्रदूषण पटाखों की तेज आवाज से ही होता है। ध्वनि प्रदूषण पटाखों की तेज आवाज एवं उनसे निकलने वाली गैसों से वायु प्रदूषण, पटाखा जलने के बाद उसकी अपशिष्ट सामग्री से जल एवं मिट्टी का प्रदूषण होता है जो कि हम सभी को जीवन के लिये प्राणघातक है। पटाखे पृथ्वी के जीवन कवच ओजोन परत को भारी नुकसान पहुँचाते हैं। पटाखों से निकले धुएँ के कारण वातावरण में दृश्यता घटती है। दृश्यता घटने से वाहन चालकों को कठिनाई होती हैं और कई बार यह दुर्घटना का कारण बनती है। इसके अलावा पटाखें बनाने वाली कंपनियों के कारखानों में होने वाली दुर्घटनाएँ और मौतें कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनसे सबक लेना चाहिये। इन मुद्दों में स्वास्थ्य मानकों की अनदेखी, बाल मजदूरी नियमों की अवहेलना या असावधानी मुख्य हैं। इन सब दुष्परिणामों के बाद सवाल है कि क्या पटाखे फोड़ना हमारे लिये जरूरी हैं? क्या पटाखे फोड़ने से ही दीपावली मनाना संभव है?

पटाखे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक: किसी भी धर्म में हिंसा करने, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का उपदेश नहीं दिया गया है। हम पटाखें फोड़कर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं तथा अनेक जीव जंतुओं को जलाकर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं। आंखों एवं कॉनों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। पटाखों की तेज रोशनी से तथा बारूद आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी पटाखों की तेज रोशनी से एवं आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी तेज आवाज से कानों के पर्दे भी फट जाते हैं। श्वास रोगियों के लिये यह महापर्व अराधना का नहीं

अपितु महायातना का पर्व बन जाता है।

विश्व में प्रतिवर्ष पटाखों की आग से लाखों लोग, अंधे, बहरे घायल हो जाते हैं। चिकित्सकों की राय में पटाखें से क्षतिग्रस्त आँख-कान को ठीक होने में में काफी परेशानी होती है। कम आवाज वाले पटाखे भले ही आँख-कान को नुकसान नहीं पहुँचायें लेकिन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते ही हैं। इसके साथ पटाखों के शोर से जानवर भी अछूता नहीं रहते। पालतू जानवर पटाखों के धमाके से डर जाते हैं ।

स्वदेशी अपनाएँ: दीपावली पर विदेश सामान नहीं खरीदें। अपने देश को आगे बढ़ाने के लिये स्वदेशी ही खरीदें। पटाखों से दूरी बनायें रखें। मिट्टी से बनायें गये दीये ही खरीदें। ऐसा कर हम अपनी दिवाली को तो रोशन करेंगे ही दीये बनाने वालें के जीवन में भी रोशनी भर देंगे। हम नेत्रदान, रक्तदान के समर्थक हैं तो पटाखें न जलायें।

पटाखों में हानिकारक तत्त्व: जानकार बताते हैं कि पटाखों में सल्फर का प्रयोग होता है। जब पटाखों जलते हैं तो उसमें सल्फर डाई ऑक्साईड, कार्बनडाई आक्साइड, कार्बन मोनों आक्साईड गैस अत्यधिक मात्रा में उत्सर्जित होती है जो हवा में घुलने के बाद आक्सीजन की मात्रा कम कर देती है। इससे सांस संबंधी रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा पटाखों की तेज आवाज व जहरीले धुएँ से पर्यावरण को भारी नुकसान होता है। हर बार दिवाली पर बड़ी संख्या में लोग पटाखों से जल जाते हैं और कई अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। ऐसे में क्षणिक सुख पहुंचाने वाली विध्वंसकारी चीजों से बचें। पटाखों की धुंध यानि स्मॉग से साँस फूलने, घबराहट, खांसी, हृदय और फेफड़े सम्बंधी दिक्कतें, आँखों में संक्रमण, दमा का अटैक, गले में संक्रमण आदि के खतरे में होते हैं। तेज आवाज वाले पटाखों का सबसे ज्यादा असर बच्चों, गर्भवती महिलाओं दिल और साँस के मरीजों पर पड़ता है। जानकारों के अनुसार पटाखों में कम से कम 21 रसायन मिलाये जाते हैं। वहीं कई वैज्ञानिकों का कहना है कि एक लाख कारों के धुएँ से जितना नुकसान पर्यावरण को होता है उतना नुकसान 20 मिनट की आतिशबाजी से हो जाता है।

कई लोगों ने इस दिवाली भी यह सवाल खड़ा होगा कि क्या पटाखें चलायें जाएँ या पर्यावरण का ख्याल करके सिर्फ दिये जलाकर दिवाली मनाई जाये। पिछले कई बरसों से यह एक आंदोलन- सा खड़ा हो गया है कि पटाखों से तौबा की जाय ओर हवा को प्रदूषित होने इस अभियान के असर में पटाखों चलाना कम भी कर दिया है, दूसरी और ऐसे लोग भी हैं, जो एक दिवाली में दस-दस हजार या इससे भी ज्यादा की एक लड़ी फूक देते हैं। यह विवाद पटाखें चलाने वालों और पटाखें विरोधी लोगों के बीच ही नहीं है, दुनिया में तमाम वैज्ञानिक और नीति निर्माता भी इस बहस में उलझे हैं कि क्या इंसान ने वातावरण को सचमुच इतना बदल डाला है। पटाखे न जलाने से पर्यावरण शुद्ध रहेगा, जीव हिंसा बचेगी धन का दुरुपयोग बचेगा, किसी अनहोनी से बचेंगे और किसी जीवन में एक नया प्रकाश देकर उनके शुभकामनाओं की दुआयें मिलेंगी अहिंसा धर्म का पालन होगा तो क्या आप तैयार हैं, इस दिवाली पटाखें न चलाने का संकल्प लेने के लिये ?

1. प्रभावती सावला
2. कल्पना जैन, रहली
3. दृश्या जैन, विदिशा

पुरस्कार वितरण

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच परीक्षा
का पुरस्कार वितरण
27 फरवरी 2022 रविवार को
आचार्य गुरुवर विद्यासागर महाराज
जी लगभग 300 पिच्छिधारी
साधुओं सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन
सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में
दिया जावेगा। अतः सभी प्रतिभागी
27 तारीख तक कुण्डलपुर
पहुंचरकर अपना पुरस्कार प्राप्त करें

ब्र. जिनेश मलैया
प्रधान संपादक : संस्कार सागर